IAS GS World PCS

Committed To Excellence

खण्ड शिक्षा अधिकारी (BEO)

भारत का इतिहास व राष्ट्रीय आन्दोलन

प्रारम्भिक परीक्षा

Downloaded From www.studymasterofficial.com

भारतीय इतिहास

- **प्राचीन इतिहास** प्रागैतिहासिक काल से हर्षवर्धन तक (650 ई. तक)
- **मध्यकालीन इतिहास**
  - पूर्व मध्यकाल (650 से 1200 ई. तक)
    - राजपूत काल भी कहते है।
  - उत्तर मध्यकाल (1206 से 1707 ई. तक)
    - सल्तनत काल (1206 से 1526 ई.)
    - मुगल काल (1526 से 1858 ई. तक)
- **आधुनिक काल** (1707 से 1947 ई. तक)

इतिहास जानने के साधन

- **पुरातत्व**
  - मृदभाण्ड
  - अभिलेख
  - सिक्के
  - स्मारक
  - चित्रकला
- **साहित्यक**
  - देशी साहित्य
    - धार्मिक
      - ब्राह्मण साहित्य
      - बौद्ध साहित्य
      - जैन साहित्य
    - गैर-धार्मिक
  - विदेशी साहित्य
    - यूनानी
    - चीनी
    - अरबी

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

पुरातात्विक साक्ष्य

- इसके अंतर्गत मृदभांड, अभिलेख, सिक्के, चित्रकला एवं मूर्तिकला आते है। इतिहास जानने के लिए पुरातात्विक साक्ष्यों का विशेष महत्त्व है।

मृदभांड (मिट्टी के बर्तन)

- मृदभाण्डों को 'पुरातत्त्व की वर्णमाला' कहा जाता है।
- प्रागैतिहासिक काल का प्रमुख मृदभाण्ड **काला एवं लाल** मृदभाण्ड है।
- गैरिक मृदभाण्ड को O.C.P (Ocher Coloured Potery) भी कहा जाता है। यह ताम्र पाषाण काल का मृदभाण्ड है। इसकी खोज बी.बी. लाल ने गंगा घाटी बिसौली (बदायूँ एवं राजपुरपरसुर (बिजनौर) में की थी। बी.बी. लाल ने हस्तिनापुर में O.C.P का नामकरण किया था।
- चित्रित धूसर मृदभाण्ड (P.G.W - Painted Grey ware) की खोज बी.बी. लाल द्वारा की गई। यह लौह-कालीन मृदभाण्ड है। इस मृदभाण्ड की कालावधि हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद से लेकर बुद्ध काल की शुरूआत के पहले तक माना जाता है। ये मृदभाण्ड अहिछत्र, भगवानपुरा, हस्तिनापुर, दधेरी तथा मांडा से प्राप्त हुए हैं।
- उत्तरी काले पालिशदार मृदभाण्ड (N.B.P.W & Nothern Black Palished were) इनकी कालावधि ईसापूर्व 6 शताब्दी से मौर्यकाल तक मानी गई है। यह द्वितीय नगरीकरण से संबंधित

मृदभाण्ड है। यही मौर्यकालीन विशिष्ट मृदभाण्ड भी है। इनकी प्राप्ति राजगीर, बनगढ़ (बांग्लादेश), चन्द्रकेतुगढ तथा शिशुपाल गढ़ से मिले है।

- दक्षिण भारत में मिले आरेटाइन मृदभाण्डों से भारत एवं रोम के बीच संगम युग में होने वाले व्यापार का साक्ष्य मिलता है। पांडिचेरी के जिंजी नदी तट पर अरिकामेडू से तीन प्रकार के बर्तन मिलते हैं। 1. लाल रंग के चमकीले मृदभाण्ड (एंटेटाइन) 2. दो हत्थाजार (एम्फोरे) 3. चक्रांकित मृदभाण्ड।
- काला एवं लाल मृदभाण्ड को अथर्ववेद में कृष्णलोहित की संज्ञा दी गई है।
- चित्रित धूसर मृदभाण्ड सबसे पहले अहिच्छत्र में प्राप्त हुए हैं।
- N.B.P.W मृदभाण्डों को सर्वश्रेष्ठ मृदभाण्ड माना गया है। इनका व्यापार किया जाता है जिसका केन्द्र कौशाम्बी था।

अभिलेख

- अभिलेखों के अध्ययन को पुरालिपिशास्त्र कहा जाता है। अभिलेख मुख्यत: स्तभों, शिलाओं, ताम्रपत्रों, मुद्राओं, मूर्तियों एवं गुफाओं में खुदे हुए मिले है।

शक क्षत्रप रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख –

- यह शक सम्वत् 72 (150ई.)में संस्कृत भाषा में लिखा गया है। यह चम्पू शैली (गद्य पद्य मिश्रित) में लिखा गया है। इसकी खोज जेम्स प्रिंसेप ने की थी। इस अभिलेख में चन्द्रगुप्त मौर्य एवं अशोक का नाम एक साथ उल्लिखित है। इसी अभिलेख में सर्वप्रथम छः प्रकार के करों – बलि, कर, भाग, शुल्क, विष्टि (बेगार) तथा प्रणय का उल्लेख मिलता है। मालवा नरेश यशोवर्मन का **'मंदसौर अभिलेख है'** जिसका लेखक 'वासुल' था। चालुक्य नरेश पुलकेशिन प्रथम का **'बादामी चट्टान शिलालेख'** शक संवत के प्रयोग के साथ कन्नड़ भाषा में प्रथम लिखित अभिलेख है। पुलकेशिन द्वितीय का **एहोल अभिलेख** का लेखक रविकिर्ति है। यह संस्कृत भाषा में लिखा गया है। इस अभिलेख में महाभारत के युद्ध के बाद की कालगणना का उल्लेख मिलता है। इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि हर्ष, पुलकेशिन द्वितीय से युद्ध में पराजित हुआ था। इस अभिलेख में पहली बार गुर्जर जाति का उल्लेख हुआ है। गुजरात के शासक कुमारपाल की **वांगनगर प्रशस्ति** का लेखक श्रीपाल था। कनिष्क के रबाकत अभिलेख में कुषाणों की वंशावली मिलती है। इसमें 4 नगरों – साकेत, कौशाम्बी, पाटलीपुत्र एवं चम्पा का उल्लेख है।
- सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख हड़प्पा काल के है। ईरान के **बोगजकाई अभिलेख** 1400 BC के है। भारत में अशोक प्रथम राजा है जिसने जनता को अभिलेखों के माध्यम से संबोधित करने की परम्परा की शुरुआत किया। अशोक के अभिलेख को पढ़ने का श्रेय 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप को जाता है।
- अशोक के **मेरठ एवं टोपरा के स्तम्भ लेखों** को फिरोज शाह तुगलक द्वारा दिल्ली लाया गया तो अकबर ने कौशम्बी के अभिलेखों को उठाकर इलाहाबाद के किले में रखवाये।
- कुछ महत्त्वपूर्ण अभिलेख और राजाओं के नाम इस प्रकार है।

हाथी गुम्फा अभिलेख	खारबेल
नासिक प्रशस्ति	गौतमीपुत्र शातकर्णी
प्रयाग प्रशस्ति	समुद्रगुप्त
मेहरौली लौह स्तम्भ	चन्द्रगुप्त द्वितीय
भीतरी अभिलेख	स्कंद गुप्त
मधुवन एवं बांसखेड़ा अभिलेख	हर्षवर्द्धन
ग्वालियर अभिलेख	प्रतिहार मिहिर भोज
देवपाड़ा अभिलेख	विजयसेन
उत्तरमेरूर अभिलेख	परान्तक चोल-I

सिक्के

- सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र कहते है। भारत के प्राचीनतम सिक्के आहत सिक्के या पंचमार्क सिक्के है जो मुख्यत: 500 BC के है जो चांदी के बने होते थे।
- भारतीय मुद्राशास्त्र का जनक जेम्स प्रिंसेप को माना जाता है।
- भारतीय उपमहाद्वीप में आरंभिक सिक्के **'आहत सिक्के'** है। आहत सिक्कों को साहित्य में कार्षापण, पुराग, धरण, शतमान कहा गया है। इन सिक्कों पर लेख नही बल्कि प्रतीक चिन्ह मिलते हैं।
- सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख लिखवाने का कार्य हिन्द यवन शासकों ने किया। इन्होंने ही उत्तर भारत में सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्के चलवाये। ये स्वर्ण सिक्के **'स्टेटर'** के नाम से जाने जाते थे। जबकि इनके चांदी के सिक्कों को **'द्रम्म'** कहा जाता था।
- सर्वाधिक सीसे के सिक्के सातवाहनों ने चलवाये।
- मिनान्डर ने भारत में सबसे पहले सोने के सिक्के चलवाये।
- कुषाणों में विमकडफिसस ने सर्वप्रथम सोने के सिक्कों का प्रवर्तन किया।
- सर्वाधिक तांबे के सिक्के कुषाणों ने चलवाये जिन्हें दीनार कहा जाता था।
- सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के गुप्तों ने चलवाये थे।
- कुषाण शासक विमकडफिसस के सिक्कों पर पहली बार **'शिवनंदी'** एवं **'त्रिशूल'** का अंकन मिलता है।
- सातवाहन शासक यज्ञश्री शातकर्णि के सिक्कों पर 'जहाज का अंकन' मिलता है।

चित्रकला एवं मूर्तिकला

- हड़प्पा की खुदाई से अनेकों मूर्ति मिली है जिससे मूर्तिकला

Downloaded From www.studymasterofficial.com

के विकास के साक्ष्य प्राप्त होते है। परन्तु बाद में मूर्ति निर्माण का श्रेय मथुरा कला को जाता है जो प्रथम सदी से बुद्ध के मूर्ति के निर्माण से शुरू होती है।

- गुफाओं में चित्रों द्वारा भी कला का प्रदर्शन किया गया। इसके सबसे महत्त्वपूर्ण साक्ष्य महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद जिले के अजन्ता एवं एलोरा की गुफा चित्रों से प्राप्त होते है। मध्यप्रदेश के धार जिले में बाघ की गुफा मिली है।

साहित्यिक स्रोत

- साहित्यिक स्रोत को दो भागों में बांटा जा सकता है। वैदिक साहित्य एवं वैदिकतोत्तर साहित्य।

वैदिक साहित्य

- वेदों के संकलनकर्त्ता कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास थे। वेद का अर्थ होता है 'जानना'।
- वैदिक साहित्य के अन्तर्गत चारों वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, अरण्यक एवं उपनिषद ग्रन्थ आते है।
- स्मृतियों की रचना 200 BC से 400 ई. के बीच किया गया है। इसमें मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन के क्रिया कलापों का वर्णन किया गया है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण स्मृति ग्रन्थ मनुस्मृति है।
- सूत्र साहित्य की रचना अधिक से अधिक तथ्यों का कम से कम शब्दों या सूत्र में किया गया।
- वेदों के अर्थ को भली भांति समझाने के लिए वेदांग की रचना की गई। वेदांग छः प्रकार के है:- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, निरुक्त, छन्द। कल्प सूत्र के तीन भाग होते हैं, 1. स्रौत सूत्र 2. गृह्य सूत्र 3. धर्म सूत्र
- **वेद** -1. ऋग्वेद (इसका ब्राह्मण ग्रंथ ऐतरेय एवं कौषितकीय है। 2. यर्जुवेद (इसका ब्राह्मण ग्रंथ शतपथ एवं तैत्तरीय है। 3. सामवेद (इसका ब्राह्मण ग्रंथ पंचविंश है। इसे ताण्ड्य ब्राह्मण भी कहते हैं। 4. अथर्ववेद (इसका ब्राह्मण ग्रंथ गोपथ है।
- **कल्पसूत्र** - श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र,
- भारत का राष्ट्रीय आदर्शवाद 'सत्यमेव जयते' मुंडकोपनिषद से लिया गया है।
- **अरण्यक** - जंगल में पढ़े जाने के कारण इन्हें अरण्यक कहा गया है। इनकी कुल संख्या 7 है। 1. ऐतरेय 2. शंखायन 3. तैत्तिरीय 4. मैत्रायणी 5. माध्यन्दिन वृहदारण्यक 6. तल्वकार 7. छंन्दोग्य
- **उपनिषद** - उपनिषदों की कुल संख्या 108 मानी गई है, किन्तु प्रमाणिक उपनिषद 12 हैं। प्रमुख उपनिषद हैं-ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, माण्डुक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, कौषितकीय, वृहदारण्यक, श्वेताश्वर।

महाकाव्य

- **रामायण** - रामायण आदिकाव्य है तथा वाल्मीकि हमारे आदिकवि है। इसमें 7 अध्याय एवं 6000 श्लोक थे। जो बढ़कर 12000 तथा अन्ततः 24000 श्लोक हुए। इसीलिए इस ग्रंथ का नाम चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता पड़ा। मुगल काल में रामायण का फारसी अनुवाद अकबर के समय अब्दुल कादिर बादायूँनी ने किया तथा शाहजहां के समय अनुवाद इब्नहरकरण ने किया। बांग्ला में रामायण का अनुवाद कृत्तिवास ने किया जबकि तमिल भाषा में रामायण कम्बन ने लिखा।
- **महाभारत** - यह ब्यास की कृति है। परम्परा के अनुसार इस ग्रंथ के लिपिक 'भगवान श्री गणेश' है। महाभारत में कुल '18पर्व' (अध्याय) है और 'हरिवंश' इसका परिशिष्ट है। भगवतगीता इसके भीष्म पर्व का भाग है। शांतिपर्व महाभारत का सबसे बड़ा पर्व है।

श्लोक की संख्या	नाम
8800	जय संहिता
24000	भारत
160,000	शतसहस्त्री संहिता या महाभारत

महाभारत को एक ही साथ अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र एवं कामशास्त्र कहा जाता है।

तमिल में पल्लवकाल में पेरून्ददेवनार ने भारत वेणवा नाम से अनुवाद किया था। तेलगू में महाभारत की रचना ननैया ने शुरू की जिसे तिकन्ना ने पूर्ण किया। माधव कदाली ने असमिया में महाभारत का अनुवाद किया। यह भारत का फारसी अनुवाद अकबर के समय रज्मनामा नाम से अब्दुल कादिर बादायुनी) ने किया जबकि इसकी प्रस्तावना अबुल फजल ने लिखी थी। इस पर चित्रांकन दशावन ने किया था।

पुराण

- पुराणों के रचयिता लोमहर्ष या उनके पुत्र उग्रश्रवा माने जाते हैं। कुल 18 पुराण है। अमरकोश में पुराणों के 5 विषय सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वत्तर एवं वंशानुचरित बताये गये हैं।
- विष्णु पुराण मौर्य वंश, मत्स्य पुराण सातवाहन वंश, वायु पुराण गुप्त वंश की जानकारी देता है। मत्स्य पुराण सबसे अधिक प्राचीन एवं प्रमाणिक है। अग्निपुराण में राजतंत्र एवं कृषि व्यवस्था का सम्पूर्ण विवरण दिया गया है। इतिहास तथा पुराण को सम्मिलित रूप से 'पंचमवेद' कहा जाता है।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

- **वेदत्रयी** – ऋग्वेद, सामवेद एवं यजुर्वेद को कहा जाता है।
- प्रस्थानत्रयी-उपनिषद ब्रह्मसूत्र एवं गीता को कहा जाता है।
- धर्मसूत्रों की रचना '(500ई.पू. – 200ई.पू.) मानी जाती है। प्रमुख धर्मसूत्रों में गौतम धर्मसूत्र (सर्वाधिक प्राचीन), आपस्तम्भ धर्मसूत्र तथा वशिष्ट धर्मसूत्र है।
- **स्मृतियाँ** – 200 ई.पू. में धर्मसूत्रों का स्थान स्मृतियों ने ले लिया। जहां धर्मसूत्र गद्य में हैं वही स्मृतियाँ पद्य में लिखी गई हैं। **मनुस्मृति** की रचना मौर्योत्तर काल की है जिसमें व्यवसाय के आधार पर वर्णव्यवस्था का वर्णन मिलता है। मनुस्मृति के प्रमुख टीकाकारों में भारूचि, मेघातिथि, गोविन्दराज एवं कुल्लुकभट्ट हैं। **याज्ञवल्क्य स्मृति** के टीकाकार विश्व रूप विज्ञानेश्वर एवं अपरार्क थे। **पराशर स्मृति** के टीकाकार माधवाचार्य थे।
- **मिताक्षरा** – इस पुस्तक के लेखक विज्ञानेश्वर थे।
- **दयाभाग** – इस ग्रंथ के लेखक जीमूतवाहन थे। इन्होंने ही 'व्यवहार मातृका' पुस्तक भी लिखी है।

बौद्ध साहित्य

- प्राचीनतम बौद्ध ग्रंथ पालि भाषा में लिखे गये जिसमें सर्वप्रमुख त्रिपिटक है। त्रिपिटक शब्द का प्रथमतः प्रयोग 'रिजडेविस एवं वुलर' ने अपनी पुस्तक 'बुद्धिस्ट इंडिया' में किया है।

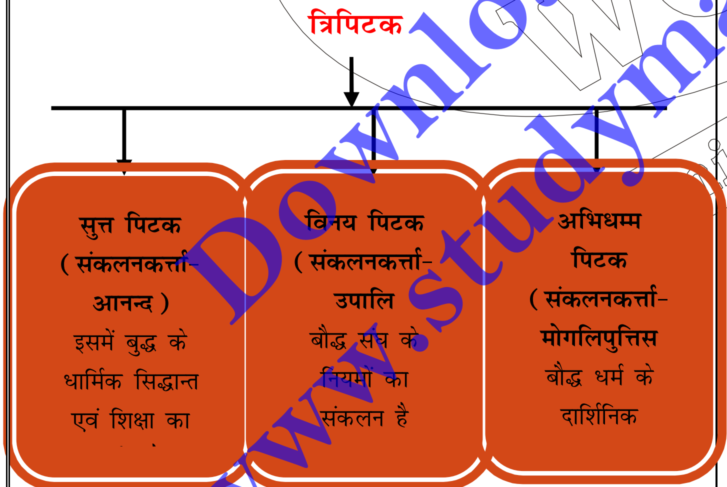

- सुत्तपिटक सबसे बड़ा है। यह 5 निकायों में विभक्त है। 1. दीघनिकाय 2. मज्जिम निकाय 3. अंगुत्तर निकाय 4. संयुक्त निकाय 5. खुन्दक निकाय
- **दीघनिकाय** को बौर्द्ध धर्म का एनसाइक्लोपीडिया कहा गया है। इसमें राज्य एवं राजा की उत्पत्ति का वर्णन मिलता है। इसका अंतिम भाग महापरिनिर्वाणसुत्त है जिसमें बुद्ध द्वारा उत्तर प्रदेश के कुशीनगर जनपद में 'सुभद्र' को दिया गया अंतिम उपदेश एवं बुद्ध की कुशीनगर की अंतिम यात्रा का विवरण है।
- **मज्जिम निकाय** – इस ग्रन्थ में बुद्ध तथा महावीर की भेंट होने का उल्लेख है। इस ग्रंथ में प्रसेनजीत का कथन है – "बुद्ध कोसल के हैं और मै भी। बुद्ध 80 वर्ष आयु के हैं और मै भी।
- **संयुक्त निकाय – खुन्दक निकाय** – यह अंतिम निकाय है। यह पद्यात्मक है। इसका एक भाग 'जातक कथा' है जिसमें बुद्ध के पूर्वजन्मों की कथा है।
- **२. विनय पिटक** –पतिमोक्ख, सुत्तविभंग, खंधका परिवार या प्रश्नोत्तोरी इसके भाग है।
- **३. अभिधम्म पिटक** – यह प्रश्नोत्तर के रूप में। इसमें पहली बार संस्कृत भाषा का प्रयोग मिलता है। (बौद्ध ग्रंथों में) इसमें कुल 7 ग्रंथ सम्मिलित हैं।

सुत्तपिटक – भाष्य – महाअट्ठकथा
विनय पिटक – भाष्य – कुरून्दी
अभिधम्म पिटक – भाष्य – महापच्चरी

- विशुद्धमग्गन पुस्तक के लेखक बुद्धघोष थे। बुद्ध घोष बौद्ध ग्रंथों के महान टीकाकार थे।
- बुद्ध का जीवन चरित्र सर्वप्रथम निदानकथा में ही मिलता है।
- वसुमित्र का विभाषाशास्त्र संस्कृत में लिखित विश्वकोश है। इसे बौद्ध धर्म की बाइबिल की संज्ञा दी गई है। यह उल्लेखनीय है कि चौथी बौद्ध संगीति में त्रिपिटकों का प्रमाणिक पाठ वसुमित्र ने ही तैयार किया था।
- अश्वघोष को भारत का मिल्टन, गेटे तथा बाल्टेयर कहा जाता है। इनको संगीतकार एवं नाटककार माना जाता है। इनके रचनाओं में बुद्ध चरित्र, सौन्दरानंद, सारिपुत्र प्रकरण तथा व्रजसूची मुख्य है।
- बुद्ध ने अपने जीवन का सबसे लम्बा उपदेश नालन्दा में दिया था।
- बुद्ध ने अपने जीवन में सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिया था।
- ललित विस्तार के लेखक 'हरिभद्र सूरी है। एडविन अर्नाल्डो की 'द लाइट आफ एशिया' पुस्तक ललित विस्तार में बुद्ध की जीवनी का वर्णन करते हुए इनको भगवान माना गया है।
- **नागार्जुन** – महायान धर्म के मूल विचारों का निर्माण नागार्जुन द्वारा किया गाय। नागार्जुन माध्यमिक दर्शन के प्रसिद्ध आचार्य थे। इन्होंने प्रज्ञापार्मितासूत्र की रचना की जिसमें शून्यवाद या सापेक्षवाद का प्रतिपादन है।
- धम्मपद को बौद्ध धर्म की गीता कहते हैं।
- मिलिन्दपन्हों पाली भाषा में है। इसमें नागसेन तथा मिनांडर का वार्तालाप है।
- आर्यमंजूश्रीकल्प महायान शाखा का ग्रंथ है। अशोक के धम्म सिद्धान्तों को राहुलोवादसुत्त में लिखा गया है।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

जैन साहित्य

- जैन साहित्य 'आगम' के नाम से जाना जाता है। इनको द्वितीय जैन संगीति में ही लिपिबद्ध किया गया। वर्तमान में इनकी कुल संख्या 12 है। जिनको **अंग** कहा जाता है।
- जैन साहित्य में पुराणों को चरित कहा जाता है। ये प्राकृत, संस्कृत एवं अपभ्रंश भाषा में है।
- **भगवती सूत्र** में तीर्थंकरों की जीवनी का वर्णन है। इसमें 16 महाजनपदों का उल्लेख है। इस पुस्तक में महावीर स्वामी को अपने प्रिय शिष्य इन्दुभूति के साथ वार्तालाप के माध्यम से जैन सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हुए वर्णित किया गया है।
- **भद्रबाहु चरित** के लेखक रत्नंदी थे। इस पुस्तक में चन्द्रगुप्त मौर्य का भद्रबाहु के साथ दक्षिण गमन का वर्णन है।
- **परिशिष्ट पर्वन** – यह प्राकृत भाषा में लिखी गई है। इसे हेमचन्द्र ने गुजरात के चालुक्य शासक जयसिंह सिद्धराज के संरक्षण में लिखा। परिशिष्ट पर्वन एवं भद्रबाहुचरित से चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवन की घटनाओं का वर्णन मिलता है।
- **कल्पसूत्र** – इसके लेखक भद्रबाहु थे। यह पुस्तक संस्कृत में लिखी गई है। इस पुस्तक से जैन धर्म का प्रारंभिक इतिहास ज्ञात होता है।
- **कुवलयमाला** को उद्योतन सूरी ने प्राकृत भाषा में लिखा है।
- **आचरांगसूत्र** में जैन भिक्षुओं के आचार नियमों का उल्लेख मिलता है।
- राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष जैन संन्यासी बन गया था। इसने संस्कृत में रत्नमालिका एवं कन्नड़ में कविराज मार्ग की रचना की थी।
- दिगम्बरों का साहित्य **'वेदा'** कहलाता है। इनकी संख्या 4 है जो कि संस्कृत में है।

अन्य स्रोत एवं साहित्य –

- **कल्हण की राजतरंगिणी** – यह 1149-50ई. में राजा जय सिंह के समय पूर्ण की गई। राजतरंगिणी में वर्णित अंतिम शासक यही है। इसे इसमें कुल 8 तरंग (अध्याय) तथा लगभग 8000 श्लोक है। कल्हण हर्ष के आश्रित कवि थे। इन्होंने हर्ष को मंदिरों की सम्पत्ति पर कब्जा करने के कारण 'तुरूष्क' कहा है। राजतरंगिणी में 64 उपजातियों का उल्लेख मिलता है। राजतरंगिणी में 'खुद' नामक इंजीनियर का जिक्र है जिसने झेलम नदी पर बांध बनाकर नहरें निकलवाईं थी। राजतरंगिणी से कश्मीर के 4 राजवंशों का (गोनंद, काकौट, उत्पल तथा लोहार) भी परिचय प्राप्त होता है।
- **पाणिनी का अष्टाध्यायी** – (ई.पू. चौथी शताब्दी)
- **कात्यायन की वर्तिका** – (ई.पू. चौथी शताब्दी)
- **पतंजलि का महाभाष्य**
- पाणिनी + कात्यायन + पंतजलि को संयुक्त रूप से **'मुनित्रय'** कहा गया है।
- **कौटिल्य का अर्थशास्त्र** – इस पुस्तक को 1905 में शाम शास्त्री ने मैसूर संग्रहालय से प्राप्त किया था। इस पुस्तक में साप्तांग सिद्धान्त, राज्य की स्पष्ट परिभाषा तथा अधिकारियों को नगद वेतन देने का प्रावधान मिलता है। अर्थशास्त्र के आधार पर ही कामन्दक ने नीतिसार की रचना की है। अर्थशास्त्र महत्वपूर्ण विधिग्रंथ है। जो 15 अधिकरणों (खण्ड) में विभक्त है। इसमें दूसरा तथा तीसरा खण्ड सर्वाधिक पुराना है।

लेखक	पुस्तक
विष्णु शर्मा	पंचतंत्र (अरबी अनुवाद 'कालील वा दिम्मना, फारसी अनुवाद) 'नौशोरवां' तथा 'अनवारे सुलेली। अनवारे सुहेली नाम से अनुवाद अबुल फजल ने किया है।
सोमेश्वर	1. रसमाला 2. कीर्ति कौमुदी
हरिषेण	वृहदकथा कोष
मेरूतुंग	प्रबंध चिंतामणि
महेन्द्र वर्मन	1. भगवद रज्जुक 2. मत विलास प्रहसन
हाल	गाथा सप्तसती
गुणाढ्य	वृहत्कथा – इसका संस्कृत में अनुवाद क्षेमेन्द्र ने वृहतकथामंजरी के नाम से सोमदेव ने कथासरित्सागर के नाम से किया है।
प्रवरसेन द्वितीय	सेतुबंध (राम की लंका विजय का वर्णन)
सुबन्धु	वासवदत्ता
नारायण	हितोपदेश (ताजुलमाली द्वारा इसका फारसी अनुवाद किया गया है।)
दण्ड	1. दशकुमार चरित 2. काव्यादर्श
वाक्पति	गौड़वाहो
विल्हण	1. विक्रमांकदेव चरित्र 2. चौर पंचाशिक
पद्मगुप्त 'परिमल'	नवसहसांकचरित
हेमचन्द्र	1. कुमारपाल चरित 2. परिशिष्ट पर्वन 3. सिद्धहेम
जयसिंह सूरी	कुमारपाल चरित
भोज परमार	1. राजामृगांक 2. सरस्वती कण्ठाभरण 3. श्रृंगार प्रकाश 4. चम्पू रामायण 5. कूर्मशतक 6. युक्ति कल्पतरू 7. तत्व परीक्षा
जयदेव	गीतगोविन्द (जयदेव बंगाल के शासक लक्ष्मण

Downloaded From www.studymasterofficial.com

	सेन के पंचरत्नों में से एक थे)
राजशेखर	भुवनकोश, बाल रामायण, बाल भारत, काव्य मीमांशा, कर्पूर मंजरी, विद्वशालभंजिका, प्रचंड पाण्डव (राजशेखर प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल के गुरू थे)
भारवी	किरातार्जुनियम
भास	स्वप्नवासवद्तम, प्रतिज्ञा यौगन्धरायण
सोमदेव	कथासरित्सागर
जीनसेन	आदिपुराण
महावीराचार्य	गणितसार संग्रह (फैजी ने इस ग्रंथ के लीलावती खण्ड का फारसी अनुवाद किया था)
ब्रह्मगुप्त	ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त

विदेशी यात्री

- शुभ-चिन प्रथम चीनी लेखक था जिसने भारत के विषय में लिखा।
- फाह्यान 399 ई. में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के काल में भारत आया था। इसने अपनी भारत यात्रा का वर्णन **'फो-क्यो-की'** नामक पुस्तक में किया है। यह 14 वर्षों तक भारत में रहा था।
- ह्वेनसांग हर्ष के शासनकाल में भारत आया था तथा 16 वर्षों तक रहा था। इसका यात्रा वृतांत **'सी-यू-की'** के नाम से जाना जाता है। यह नालन्दा में अध्ययनरत भी रहा। ह्वेनसांग के मित्र ह्वीली ने इसकी जीवनी लिखी है। ह्वेनसांग ने थानेश्वर में **जयगुप्त** नामक बौद्ध विद्वान से शिक्षा ग्रहण की थी। हर्ष से इसकी मुलाकात कजंगल नामक स्थान पर हुई।
- इत्सिंग 7वीं सदी के अंत (671ई.) में भारत आया तथा नालन्दा में 400 संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन किया।
- मात्वालिन के विवरण से हर्ष के पूर्वी अभियानों की जानकारी प्राप्त होती है।
- चाऊ जु कुआ (1225ई.) की पुस्तक **'चु-फान चीन'** से चोल युगीन व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है।
- इब्नखार्दुव 9वीं शताब्दी में भारत आया था।
- सुलेमान भी 9वीं शताब्दी में भारत (मिहिरभोज एवं अमोघवर्ष प्रथम का काल) आया था।
- अलमसूदी 10वीं सदी में महिपाल के समय आया था। इसे अरब देश का हेरोडोट्स कहा जाता है। इसकी पुस्तक मुरूजुज जहब है।
- अलबेरूनी 11वीं सदी में महसूद गजनवी के साथ कन्नौज अभियान के समय भारत आया था। इसकी पुस्तक का नाम **तहकीक-ए-हिन्द** है। यह प्रथम मुसलमान था जिसने वेद, पुराण तथा श्रीमद्भगवतगीता का अध्ययन किया तथा संस्कृत सीखा। यह गजनवी का राज ज्योतिषी था।
- मिनहाजुद्दीन के तबकात-ए-नासिरी से मोहम्मद गोरी के हिन्दुस्तान विजय की जानकारी मिलती है।
- चचनामा पुस्तक में अरबों की सिंध विजय का उल्लेख मिलता है।
- तिब्बती इतिहासकार तारानाथ ने कंग्यूर तथा तंग्यूर नाम पुस्तक लिखी है।
- वेनिस (इटली) का मार्कपोलो 13वीं सदी के अंत में भारत (पाण्ड्य देश) आया था। इसे **मध्यकालीन यात्रियों का राजकुमार** कहा जाता है।
- मैक्समूलर ने प्राचीन धर्म ग्रंथों का अनुवाद सेक्रेड बुक्स आफ द ईस्ट सीरीज में किया है।
- विस्सेंट आर्थर स्मिथ ने प्राचीन भारत का पहला सुव्यवस्थित इतिहास लिखा।
- जेम्स मिल ने हिस्ट्री आफ ब्रिटिश इंडिया नामक पुस्तक लिखी।
- एशियाटिक सोसाइटी द्वारा अनूदित प्रथम पुस्तक अभिज्ञान शाकुन्तलम थी।
- भगवद्गीता एवं हितोपदेश का अंग्रेजी अनुवाद चार्ल्स विल्किंसन ने किया है।
- फ्रांस विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम संस्कृत का अध्यापन हैमिल्टन द्वारा प्रारम्भ किया गया।

पाषाण काल

- भारत में प्राग् इतिहास का मुख्यालय नागपुर में है।
- भारत में प्राग् इतिहास का जनक राबर्ट ब्रुश फुट थे। इन्होंने 13 मई 1863 को मद्रास के पल्लवरम से पाषाण युग के पहले उपकरण को प्राप्त किया।
- यूरेनियम डेटिंग के जनक क्यूरी है जबकि कार्बन डेटिंग के जनक एफ. लिबी है।
- भारत में प्रचलित पाषाण काल की शब्दावलियां फ्रांस से ली गई है।
- प्रथम एशियाई पुरातत्व सम्मेलन 1961 को दिल्ली में हुआ था।
- आस्ट्रेलोपिथेकस हमारा निकट्तम आदि पूर्वज है।
- होमो हैविलस को प्रथम मानव कारीगर माना जाता है क्योंकि इसने ही प्रथमतः पाषाण के औजार बनाएं।
- होमो इरेक्ट्स ने ही सर्वप्रथम पत्थर की कुल्हाडी बनाया तथा अग्नि का अविष्कार किया।
- नियन्डरस्थल मानव ने सर्वप्रथम शवों का विसर्जन किया तथा अग्नि का व्यापक प्रयोग किया।
- भारतीय उपमहाद्वीप की दृष्टि से सर्वप्रथम 1932 में पाकिस्तान के पोटवार पठार (शिवालिक पहाड़ी का क्षेत्र) से 2 मानव खोपड़ी मिली जिनको जी.ई. लुइस ने रामापिथेकस एवं शिवापिथेकस की संज्ञा दी। 1982ई. में अरूण सोनकिया ने नर्मदा घाटी के 'हथनौरा' से आद्य होमोसेपियन्स की खोपड़ी प्राप्त की।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

पाषाण काल

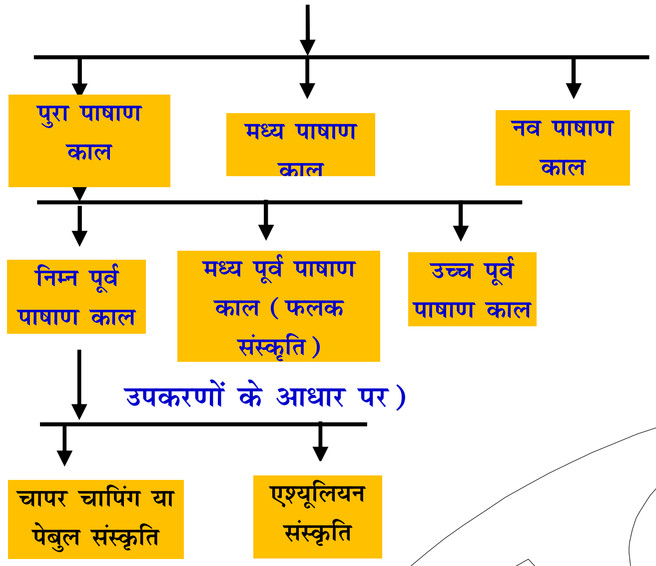

- चापर-चापिंग सर्वप्रथम सोहन नदी घाटी में मिले हैं। इसलिए इसे सोहन संस्कृति भी कहते हैं।
- एश्यूलियन संस्कृति को हैंडएक्स संस्कृति कहते हैं। हैंडएक्स को 1864 में प्रो. किंग ने मद्रास के वद्मदुरै तथा अतिरपक्कम् से प्राप्त किया था।

निम्न पूर्व पाषाण काल के क्षेत्र –

1. **उत्तर का शिवालिक क्षेत्र** –

1928 में डी.एन वाडिया ने सोहन घाटी में सबसे पहला उत्खनन कार्य कराया। इनको 'सोहन घाटी का पितामह' कहा जाता है 1930 में के.आर.यू. टाड ने सोहन घाटी के पिण्डघेव का उत्खनन कराया। सोहन घाटी में मानव आवास के साक्ष्य एवं हैंडएक्स प्राप्त करने वाले एच.डी. साँकलिया थे। सोहन घाटी से विभिन्न हिमयुगों में निर्मित 5 वेदिकाएँ भी प्राप्त हुई हैं। सोहन घाटी से प्राप्त उपकरण क्वार्टजाइट से बने हुए हैं।

2. **पश्चिमी क्षेत्र** –

राजस्थान का जायल, अमरापुर, सिंधी तालाब, सोनीता, भैंसोरगढ़, जनकपुरा। गुजरात में हडोल पद्यामली, वीरपुर, भदर, हिरण तथा कालूबार।

3. **मध्य क्षेत्र** – अरुण सोनकिया ने मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में स्थित (नर्मदा नदी घाटी) हथनौरा से मानव कपाल एवं हाथी का जीवाश्म प्राप्त किया था। इसलिए इन पशुओं के जीवाश्म सर्वप्रथम नर्मदा घाटी में मिले इसलिए इन पशुओं के जीवाश्म को 'नमदिकस' कहा जाता है। सोन घाटी के बाघोर से पशुओं के जीवाश्म प्राप्त हुए हैं। महाराष्ट्र के बोरी नामक स्थान से निम्न पुरा पाषाण की प्राचीनतम तिथि ज्ञात की गई है।

4. **दक्षिणी क्षेत्र** – कर्नाटक के हुणसगी, आन्ध्र प्रदेश के गिद्दलूर, नेल्लोर तथा करीमपुर, तमिलनाडु के पल्लवरम, अतिरपक्कम बदमदुरै तथा गुडियम गुफा से इस काल का उपकरण प्राप्त हुआ है।

मध्य पूर्व पाषाण काल –

इसे फलक-ब्लेड स्क्रेपर संस्कृति भी कहते हैं। चूंकि फलकों की प्रधानता थी, इस कारण यह 'फलक संस्कृति' के नाम से विख्यात है। यही उपकरण यूरोप की मुस्तुरियन संस्कृति में प्रचलित थे। इस वजह से इसे मुस्तुरियन संस्कृति भी कहा जाता है। इस काल के उपकरण जैस्पर, कैल्सडोनी, चर्ट, क्लिंट आदि के बने होते थे। महाराष्ट्र स्थित नेवासा इस संस्कृति का प्रारूप स्थल है। राजस्थान के थार से प्राप्त मध्य पूर्व पाषाण काल के उपकरणों को बी.एन. मिश्रा ने **'लूनी उद्योग'** कहा है।

उच्च पूर्व पाषाण काल –

बेलन घाटी से ही सबसे पहले भारत में उच्च पूर्व पाषाण काल के साक्ष्य मिलना प्रारंभ हुए। इस काल की अंतिम संस्कृति को मेग्देलियन संस्कृति कहा जाता है। इस काल का उपकरण बहुप्रयोजनीय था। मुख्य उपकरण को ब्लेड के नाम से जाना जाता है, इसलिए इसे ब्लेड प्रधान उच्च पूर्व पाषाण काल भी कहते हैं। इस काल की 2 मुख्य विशेषतायें हैं। 1. नए चकमक उद्योग की स्थापना 2. होमोसेपियन्स (प्रज्ञ मानव) का पदार्पण।

इस काल में हड्डियों से बने उपकरण सर्वाधिक संख्या में आन्ध्र प्रदेश के 'मुच्छतलया चिन्ता मनुगावी शिलाश्रय' से प्राप्त हुए है। बेलन घाटी के लोहदानाला क्षेत्र से दुनिया की सबसे प्राचीनतम अस्थि निर्मित स्त्री की मूर्ति प्राप्त हुई है। इस काल में चित्रकारी का साक्ष्य मध्य प्रदेश में स्थित भीमबेटका की गुफा से प्राप्त होता है। भीमबेटका की खोज विष्णुधर वाकड़कर द्वारा 1958 में की गई थी। भीमबेटका में लगभग 500 गुफाएं प्राप्त हुई हैं जिनमें चित्रकारी की गई हैं। यहां से अन्त्येष्टि का साक्ष्य प्राप्त हुआ है।

मध्य पाषाण काल –

इस काल को अनु पुरापाषाण काल आद्य-नव पाषाण काल एवं संक्रमण काल भी कहा जाता है। इस काल के उपकरणों की खोज सबसे पहले सी.एल. कार्लाइल ने 1867 में विन्ध्य क्षेत्र में की थी। धनुष बाण भी इसी काल में आया। लकड़ी की डोंगी के सर्वप्रथम निर्माण का श्रेय मध्य पाषाण काल को जाना है। **भारत में अस्थि पंजर** सर्वप्रथम इसी काल से प्राप्त होते हैं। अत: शवों को दफन करने की प्रथा की शुरूआत इसी काल से मानी जा सकती है। मध्य प्रदेश का आदमगढ़ तथा राजस्थान का बागोर ऐसे स्थल हैं जो **पशुपालन का प्राचीनतम साक्ष्य** प्रस्तुत करते हैं। बागोर से प्राप्त टीले **'महाशती'** के नाम से जाने जाते है। इनका उत्खनन बी.एन.

Downloaded From www.studymasterofficial.com

मिश्रा द्वारा कराया गया। गुजरात के **लंघनाज** से 14 मानव कंकाल एवं तांबे का चाकू मिला है। मिर्जापुर के **मोरहना पहाड़, बघहीखोर** तथा **लेखहिया** महत्वपूर्ण हैं। लेखहिया का उत्खनन वी.डी. मिश्रा ने कराया था, यहां से 17 या 27 मानव कंकाल मिले हैं। यू.पी. का **लहुरादेव** (सन्त कबीर नगर जनपद) से भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि किये जाने का प्राचीनतम साक्ष्य मिला है। यहाँ से चावल का भी प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुआ है। यह महत्वपूर्ण है कि **मेहरगढ़** से प्राप्त कृषि का साक्ष्य 7000ई.पू. का है जबकि लहुरादेव की कालावधि 8000-9000 ई.पू. की है। इलाहाबाद में स्थित **चौपानीमाण्डो** की खोज बी.बी. मिश्रा द्वारा की गई। यहां से 13 झोपड़ियाँ मधुमक्खी के छत्ते के समान प्राप्त हुयी है। यहाँ से हस्तनिर्मित मृद्भांड एवं अन्नागार के साक्ष्य मिले हैं। 'चोपानीमाण्डो के मृदभांड संसार के प्राचीनतम साक्ष्यों में से एक है।' चोपानीमाण्डो को पुरापाषाण काल तथा मध्य पाषाण काल के बीच की 'संक्रमण अवस्था का प्रतीक माना गया है।' इलाहाबाद के मध्य गंगा घाटी में स्थित प्रतापगढ़ जिले से **सरायनाहर, महदहा** एवं **दमदमा** प्रमुख पाषाणिक स्थल है। सरायनाहर की खोज के.सी. ओझा द्वारा की गई। यहां से 8 गर्त चूल्हें एवं स्तम्भ गर्त झोपड़ी के साथ एक कब्र में एक साथ चार मानव कंकाल प्राप्त हुए है। सरायनाहर से 'मानवीय आक्रमण का प्राचीनतम साक्ष्य' प्राप्त हुआ है। महदहा से बूचडखाना, 35 गर्त चूल्हें, सिल-लोढ़ा एवं स्तम्भ गर्त मिले हैं। यहां से **युग्मित समाधि (स्त्री-पुरूष) का साक्ष्य** मिला है। यहां जो कंकाल मिला है वह कुण्डल एवं माला पहने हुए है। दमदमा से '41 मानव शवाधान' मिले हैं। यहां से 'एक ही कब्र से तीन मानव कंकाल' एवं 'हाथी दाँत का लटकन' प्राप्त हुआ है।

नव पाषाण काल -

नव पाषाण काल का प्रयोग सर्वप्रथम **जान लुब्बाक** द्वारा किया गया बाद में गार्डेन चाइल्ड ने नवपाषाण ताम्र पाषाण संस्कृति को अन्न उत्पादक संस्कृति कहा।

मेहरगढ़ पाकिस्तान के बलुचिस्तान प्रांत के कोची के मैदान में प्रवाहित होने वाली बोलन नदी के तट पर स्थित है। मेहरगढ़ नवपाषाण काल एवं हड़प्पा सभ्यता दोनों संस्कृतियों का महत्वपूर्ण स्थल है। यहां से कृषि तथा पशुपालन का साक्ष्य मिला है। यहाँ से सान पत्थर (Grinding Stone) का साक्ष्य मिला है। पत्थरों को पॉलिश करने की शुरूआत नवपाषाण काल से होती है। 1842 में कर्नाटक के मैसूर के लिंगसुगूर से नवपाषाणिक उपकरण मिले हैं। अत: 'भारत में प्राप्त प्रथम उपकरण नवपाषाण युग का है।' 1860 में ली. मेंसुरिये ने टोंस नदी घाटी में पालिशदार सेल्ट को प्राप्त को प्राप्त किया। 1947 में ब्रह्मगिरी से चमकीली पाषाण कुल्हाड़ी संस्कृति का पता चला। जम्मू कश्मीर में **बुर्जहोम, गुफ्कराल** एवं **मार्तण्ड** प्रमुख नवपाषाणिक स्थल है। बुर्जहोम को टेरा पिटरसन ने 1935 में खोजा था। यहां से **गर्त आवास** तथा **मालिक के साथ कुत्ते दफनाने का साक्ष्य** मिला है। **गड़ासा का साक्ष्य** बुर्जहोम से मिला है। गुफ्कराल की खुदाई ए.के. शर्मा ने कराई थी। यहाँ से ताँबे की पिन मिली है और ऐसी ही पिन चन्हुदड़ो से भी प्राप्त होती है। हड्डियों को सूइयों से पता चलता है कि लोग वस्त्र सिलाई का कार्य करते थे। 'बुर्जहोम एवं गुफ्कराल तीनों पाषाण काल से संबंधित है।' बेलन नदी के निकट **कोल्डिहवा से धान की कृषि के साक्ष्य** प्राप्त हुए हैं। कोल्डिहवा की एक विशेषता 'डोरी छाप मृद्भाण्डों' का मिलना है। महगढ़ा से पशुओं का बाड़ा तथा 28 स्तम्भ गर्त का साक्ष्य मिला है।

मध्य गंगा घाटी में **चिरांद** प्रमुख नवपाषाणिक स्थल है। इसका सम्बंध ताम्रपाषाण युग से भी है। 'यहाँ से हड्डी के बने उपकरण प्राप्त हुए हैं।' चिरांद से मृणमूर्तियाँ मिली हैं जो कूबड़दार बैल, नाग एवं चिड़ियों की है। 1867ई. में जान लुब्बाक ने असम की ब्रह्मपुत्र नदी घाटी में नवपाषाणिक उपकरणों की खोज की थी। यहाँ से **झूम कृषि की प्रथा** के प्रमाण मिले हैं। दक्षिण भारत में सर्वप्रथम नवपाषाणिक पालिशदार कुल्हाड़ी कर्नाटक के लिंगसुगूर से प्राप्त हुए थे। महत्वपूर्ण है कि दक्षिण भारत की नवपाषाणिक संस्कृति महाराष्ट्र की ताम्र पाषाणिक जोर्वे संस्कृति से प्रभावित थी। दक्षिण भारत में नव पाषाण काल की उगाई गई पहली फसल मिलेट (रागी) थी।

ताम्र पाषाणिक काल -

जिस काल में मनुष्य ने पत्थर एवं तांबे के औजारों का साथ-साथ प्रयोग करना प्रारम्भ किया उस काल को ताम्र पाषाणिक काल कहते है मानव द्वारा **तांबा धातु का सर्वप्रथम प्रयोग** किया गया।

ताम्र पाषाणिक स्थल -

ताम्र पाषाणिक स्थल -	
मालवा	उत्कृष्ट ताम्र पाषाण मृदभाण्ड
नवदा टोली	इतने सारे अनाज अन्यत्र कहीं नहीं प्राप्त हुए हैं।
दैमाबाद	सबसे बड़ी बस्ती, कलश शवाधान
इनामगांव	किलाबन्द बस्ती, हाथी दाँत की शिल्पकारी, चूना बनाने वाले, खिलौना बनाने वाले
महाराष्ट्र जार्वे	द्विस्तरीय निवास

Downloaded From www.studymasterofficial.com

संस्कृति	
कालीबंगा तथा बनवाली	प्राक् हड़प्पन अवस्था तथा ताम्र पाषाणिक

ताम्र पाषाणिक संस्कृति ग्रामीण समुदाय थी। इसी संस्कृति के लोगों ने प्रायद्वीपीय भारत में बड़े-बड़े गाँव बसाए। चित्रित मृदभाण्डों का प्रयोग सर्वप्रथम ताम्र पाषाणिक लोगों ने किया। सबसे बड़ी ताम्र निधि मध्य प्रदेश के गुंगेरिया से प्राप्त हुई है। इसमें 424 तांबे के हथियार तथा 102 चांदी के पतले पत्तर हैं।

हड़प्पा

- सिंधु सभ्यता में अभिलेख युक्त मुहरें सर्वाधिक हड़प्पा से प्राप्त हुआ है। यहां से मछुआरे का चित्र, शंख का बना बैल, स्त्री के गर्भ से निकला पौधा, पीतल का इक्का प्राप्त हुआ है।
- हड़प्पा की खुदाई 1921ई. में **दयाराम साहनी** द्वारा शुरू की गयी। जो पाकिस्तान प्रांत के मांटगोमरी जिले में रावी नदी के तट पर स्थित था।
- हड़प्पा की खुदाई से से गेहूँ, जौ के दाने का अवशेष, एक धोती पहने हुए मानव की मूर्ति, 6-6 के दो क्रम में आवासीय संरचना और दक्षिणी भाग में एक कब्रिस्तान मिला है जिसे R-37 की संज्ञा दी गई है।

कालीबंगा -

- राजस्थान के गंगानगर जिले में स्थित इस प्राक् हड़प्पा पुरास्थल की खोज सर्वप्रथम **ए. घोष** ने 1953 में की।
- कालीबंगा में प्राक् सैन्धव संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि एक **जुते हुए खेत** का साक्ष्य है।
- यहां से प्राप्त अवशेषों में प्रमुख हैं - बेलनाकार मुहरें हल के निशान (जुते हुए हल के साक्ष्य) ईंटों से निर्मित चबूतरे, हवनकुण्ड या अग्नि कुण्ड, अन्नागार, अलंकृत ईंटों का प्रयोग युगल तथा प्रतीकात्मक समाधियाँ आदि।

चन्हूदड़ो -

- यहां सैन्धव संस्कृति के अतिरिक्त प्राक् हड़प्पा संस्कृति जिसे झूकर झाँगर संस्कृति कहते हैं, के अवशेष प्राप्त हुए हैं। यह एक मात्र पुरास्थल है जहां से वक्राकार ईंटें मिली है।
- यहां से किसी दुर्ग का अवशेष नहीं प्राप्त हुआ है। इस स्थल की खोज 1931ई. में **एम.जी. मजुमदार** ने की थी। 1935ई. में इसका उत्खनन मैके ने किया था।
- इस स्थल के खुदाई में मनके बनाने का कारखाना मिला है।

मोहनजोदड़ों -

- मोहनजोदड़ों की खुदाई 1922 ई. में **राखाल दास बनर्जी** द्वारा की गयी जो पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लरकाना जिले में सिंध नदी के तट पर स्थित था।
- मोहनजोदड़ों की खुदाई में विशाल स्नानागार, सभागार, महाविद्यालय एवं अन्नागार के अवशेष मिले है। मोहनजोदड़ों के अन्नागार हड़प्पाकालीन सबसे बड़ी आकृति है। यहां से पुरोहित की मूर्ति एवं कांस्य की एक नग्न नर्तकी की मूर्ति भी मिली हैं
- यहां से प्राप्त अन्य अवशेषों में महाविद्यालय भवन सूती कपड़ा, हाथी का कपालखण्ड, कुम्भकारों के 6 भठ्ठे भी प्राप्त हुए हैं।

लोथल

- लोथल की खोज 1957 ई. में **एस. आर. राव.** द्वारा की गयी जो गुजरात राज्य की भोगवा नदी के किनारे स्थित है।
- यहां की खुदाई से पक्की ईटों का तालाब जैसा घेरा मिला है। जिसे **गोदीबाड़ा** माना जाता है।
- लोथल से प्राप्त एक मकान का दरवाजा गली की तरफ न खुल कर सड़क की तरफ खुलता था।
- फारस की मुद्रा तथा पक्के रंग में रंगे पात्र की उपलब्धि से स्पष्ट है कि लोथल सिंधु सभ्यता काल में सामुदायिक व्यापारिक गतिविधियों का केन्द्र था। अन्य अवशेषों में घोड़े की मृण्मूर्ति, तीन युगल समाधियाँ मुख्य हैं।

बनावली

- यहाँ से हड़प्पा, हड़प्पा पूर्वी एवं हड़प्पोत्तर तीनों चरणों के साक्ष्य मिले हैं। इसकी खोज **रवीन्द्र सिंह विष्ट** के द्वारा 1973 ई. में की गई है। यह हरियाणा राज्य के हिसार जिले में रंगोई नदी के किनारे स्थित है।
- इस स्थल की खुदाई से हल रुपी खिलौना के अवशेष मिले है।
- यहां से **जल निकास प्रणाली** जो कि सिन्धु सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी **का अभाव** था। अन्य अवशेषों में तांबे का वाणाग्र सरसों तथा जौ के अवशेष, चर्ट के फलक इत्यादि महत्वपूर्ण हैं।

धौलावीरा -

- इसकी खोज **आर.एस. विष्ट** ने की थी। यह गुजरात में स्थित है। धौलावीरा वर्तनमान भारत में खोजे गये हड़प्पाकालीन दो विशालतम नगरों में से एक है। इस श्रेणी का दूसरा विशालतम नगर हरियाणा में स्थित **राखीगढ़ी** है। धौलावीरा भारतीय उपमहाद्वीप का चौथा विशालतम हड़प्पाकालीन नगर है। इस आकार के अन्य तीन नगर मोहनजोदड़ो, हड़प्पा तथा गनेड़ीवाल हैं। धौलावीरा के मध्य में स्थित प्राचीरयुक्त क्षेत्र को मध्यमा नाम दिया गया है।

सूरकोटदा

- गुजरात के कच्छ में इस स्थल का उत्खनन **जे. वी. जोशी** के नेतृत्व में हुआ। इस स्थल की खुदाई से घोड़े की हडिड्यों के साक्ष्य मिले है।

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

आलमगीरपूर

- उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में स्थित यह स्थल हिंडन नदी के किनारे स्थित है। इसकी खुदाई का कार्य **यज्ञदत्त शर्मा** ने 1958 ई. में किया।

सुतकांगेंडोर

- इसकी खोज 1927 ई. में **ओरल स्टाइन** द्वारा की गयी जो बलुचिस्तान में दाश्क नदी के किनारे स्थित है। यह एक प्रमुख बंदरगाह था।

रोपड़

- इसकी खोज **यज्ञदत्त शर्मा** द्वारा 1953-54 ई. में की गई जो पंजाब की सतलुज नदी के किनारे स्थित है।

लिपि

- सैंधव लिपि **चित्रात्मक** है। सामान्यत: इसमें 200 से 400 चित्र पाये गए है। लेकिन इसमें 64 ही मूल है।

सील या मुहरें

- खुदाई में 2000 मुहरें पाई गई है जिनका आकार आयताकार एवं वर्गाकार दोनों हैं। अधिकांश मुहरे सेलखडी की बनी है।

आर्थिक स्थिति

कृषि

- हड़प्पाई लोग रागी को छोड़कर सभी फसलों से परिचित थे गेहूं के तीन किस्में मिली है। सिन्धु सभ्यता के लोगों ने सबसे पहले कपास की खेती शुरू की जिसे सिन्डन कहते है लोथल रंगपुर से धान के भूसी के अवशेष मिले है।

पशु

- गाय को छोड़कर अन्य पशुओं से परिचित थे। गुजरात में हाथी पाला जाता था। हाथी का कपाल मोहनजोदड़ों से, दांत का स्केल लोथल से मिला है। कूबड़ वाला सांड विशेष प्रिय था।

उद्योग धंधा

- सिन्धु सभ्यता के लोग सबसे पहले कांसा का प्रयोग किए इसलिए इसे कांस्यकालीन सभ्यता भी कहा जाता है। मोहनजोदड़ों से गहनों का ढेर मिला है। तो लोथल एवं चान्हूदडों से मनका बनाने का कारखाना मिला है।

व्यापार

- मेसोपोटामिया के एक लेख में कहा गया है कि ऊर के लोगों का मेलुहा के साथ व्यापारिक संबंध था। मेलुहा का तात्पर्य सिन्धु लोगों से हैं इसके अलावा निम्न स्थानों से वस्तुएं लायी जाती थी।
- सोना - अफगानिस्तान, कोलार (कर्नाटक)
- चाँदी - अफगानिस्तान, खड़गपुर (मुंगेर बिहार)
- ताँबा - खेतड़ी (राजस्थान)

राजनीतिक स्थिति

- खुदाई में प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर इतिहासकारों ने शासन व्यवस्था के अलग-अलग रूपों का उल्लेख किया है।

विद्वान	मत
मार्टीमर व्हीलर	मध्यमवर्गीय जनतांत्रिक शासन जिस पर धर्म का प्रभाव था।
मैके	मोहनजोदड़ों का शासन एक प्रतिनिधि शासन के हाथ में
स्टुअर्ट पिगट	पुरोहित वर्ग का शासन
हंटर	जनतांत्रिक शासन व्यवस्था

- निष्कर्ष के रूप में पुरोहित वर्ग का ही शासन था।

काल निर्धारण

- सिन्धु सभ्यता के काल निर्धारण के संबंध में विद्वानों में मतभेद है लेकिन कार्बन डेटिंग के अनुसार इसका काल 2500 B.C से 1750 B.C है।

पतन

- खुदाई में प्राप्त अवशेषों के आधार पर विद्वानों ने सिन्धु सभ्यता के पतन के निम्न कारणों को बताया है।
- मार्टीमर व्हीलर ने आर्य आक्रमण को कहा तो एस. आर. राव ने भयंकर बाढ़ को पतन का कारण बताया। अमलानंद घोष ने वर्धित शुष्कता को कहा। रूसी विद्वानों ने भूकंप एवं अन्य प्राकृतिक अपदा को पतन का कारण माना है।
- निष्कर्ष के रूप में सिन्धु सभ्यता के पतन का कारण जलवायु का परिवर्तन था।

क्षेत्र	स्थित पुरास्थल
अफगानिस्तान	मुंडीगाक, शोर्तुगुई
बलूचिस्तान (पाकिस्तान)	मेहरगढ़,सुत्कागेनडोर, सुत्काकोह, बालाकोट, रानाघुंडई, कुल्ली, क्वेटाघाटी, दबसादात एवं दबारकोट आदि।
सिन्ध	कोटदीजी, आमरी, मोहनजोदड़ो, अलीमुराद, चन्हूदड़ो, जुदरीदड़ो
पश्चिमी पंजाब(पाकिस्तान)	हड़प्पा, डेराइस्मालखाना, रहमानढेरी, जलीलपुर,
पंजाब (भारत)	रोपड़, चक 86, बाड़ा, संघोल आदि।
हरियाणा	राखीगढ़ी, बनवाली, मितथाल, दौलतपुर रिसवल
जम्मू-कश्मीर	माण्डा (चिनाब नदी)
पश्चिम उत्तर प्रदेश	आलमगीरपुर, बड़ागाँव एवं हुलास (सहारनपुर)
गुजरात 1. काठियावाड़ 2. कच्छ का रन	 लोथल, रंगपुर, रोजड़ी, प्रभासपाटन धौलावीरा, देशलपुर, सुरकोटदा
राजस्थान	कालीबंगा

नगर	नदी
मोहनजोदड़ो	सिन्धु नदी
हड़प्पा	रावी नदी
रोपड़	सतलज नदी
मॉंडा	चिनाब नदी
कालीबंगा	घग्गर नदी

Downloaded From www.studymasterofficial.com

लोथल	भोगवा नदी
सुत्कांगेडोर	दाश्क नदी
बालाकोट	विंदार नदी
सोत्काकोह	शादीकौर
आलमगीर	हिण्डन नदी
रंगपुर	मादर नदी
कोटदीजी	सिन्धु नदी
बनवाली	प्राचीन सरस्वती नदी
चन्हूदड़ों	सिन्धु नदी

वैदिक सभ्यता

आर्यो के निवास स्थान

- बाल गंगाधर तिलक आर्यो का निवास स्थान उत्तरी ध्रुव मानते है तो दयानंद सरस्वती अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में आर्यो का निवास स्थान तिब्बत कहते हैं
- राजवली पाण्डेय मध्य देश को, डा. अविनाश चन्द्र दास सप्त सैंधव को, गॉर्डन चाइल्ड दक्षिणी रूस को आर्यो का निवास स्थान मानते है।
- सामान्य मत है कि आर्य मध्य एशिया एवं यूरेशिया के क्षेत्र के निवासी है।

वैदिक साहित्य

- वैदिक साहित्य के अन्तर्गत चारों वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद को रखा गया है।

ऋग्वेद

इसमें 1028 सुक्त है जो 10 मण्डल में विभक्त है। दूसरा और सातवाँ मण्डल सर्वाधिक पुराना है। प्रथम और दसवाँ मण्डल बाद में जोड़ा गया है। नवाँ मण्डल सोम के प्रति समर्पित है। प्रत्येक मण्डल की रचना अलग-अलग ऋषि द्वारा की गया है।

- ऋग्वेद से संबंधित पुरोहित को **'होता'** कहा जाता था।

यजुर्वेद

- यजुर्वेद में यज्ञ कर्मकांडो और इसको सम्पादित करने के विधि की चर्चा है। इसके पुरोहित अध्व्र्यु कहलाते है-

सामवेद

- यह ग्रन्थ गान प्रधान है इसमें कुल 1810 मंत्र है जिसमें 75 नए श्लोक है बाकी ऋग्वेद में पाए गए है। इसको गायन करने वाले पुरोहित को **'उद्गात्री'** कहा जाता था।

अथर्ववेद

- इसमें कुल 731 सुक्त है। 5849 मंत्र तथा 20 काण्ड है। इसकी रचना अथर्वा एवं अंगीरस नामक दो ऋषियों ने की। इसमें लौकिक जीवन, जादूटोना, भूतप्रेत, गृह सुख, जड़ी बूटी इत्यादि का वर्णन किया गया है।
- अथर्ववेद से जुड़े पुरोहित को ब्रह्म कहा जाता है।

ब्राह्मण ग्रन्थ

- वेदों की सही व्याख्या करने के लिए ब्राह्मण ग्रन्थ की रचना की गई। प्रत्येक वेद के अलग-अलग ब्राह्मण ग्रन्थ है।

आरण्यक ग्रन्थ

- इसका अर्थ वन या जंगल होता है। आरण्यक ग्रन्थ की रचना जंगल में हुई। इसमें कर्मकांड से ज्ञान मार्ग की ओर संक्रमण की विवेचना की गई है। प्रत्येक वेद के अलग-अलग आरण्यक ग्रन्थ है। सिर्फ अथर्ववेद के कोई आरण्यक ग्रन्थ नहीं है।

उपनिषद

- इसमें दार्शनिक विचारों का संग्रह है। इसलिए इसे वेदों का सार कहा जाता है। **सत्यमेव जयते शब्द मुण्डकोपनिषद से लिया गया है।**
- ऋग्वेद में सर्वाधिक उल्लेखित नदी सिन्धु है जबकि सबसे अधिक महत्व सरस्वती नदी का था। ऋग्वेद में गंगा का 1 बार, यमुना का 3 बार वर्णन आया है। इन्द्र का वर्णन 250 बार, अग्नि का वर्णन 200 बार, विष्णु का वर्णन 100 बार, वृहस्पति का वर्णन 11 बार, जन का वर्णन 275 बार, माता का वर्णन 234 बार, पिता का वर्णन 335 बार, राष्ट्र का वर्णन 10 बार, पृथ्वी का वर्णन 1 बार किया गया है।
- ऋग्वेद में नदियों की संख्या 25 बताई गई है।
- ऋग्वेद में आर्यो के निवास स्थल के लिए सप्तसैंधव शब्द का प्रयोग किया गया है।

ऋग्वैदिक कालीन नदियां -

नदी	प्राचीन नाम
सतलज	शुतुद्रि
रावी	परूष्णी
चेनाब	अस्किनी
झेलम	वितीस्ता
व्यास	विपाशा
गोमल	गोमती
काबुल	कुभा
घग्गर (चितंग)	दृशद्वती
गंडक	सदानीरा
कुर्रम	क्रुमु
सिन्ध	सिन्धु
स्वात	सुवस्तु

ऋग्वैदिक आर्य

राजनीतिक व्यवस्था

Downloaded From www.studymasterofficial.com

- ऋग्वेद में आर्यो के 5 कबीले होने की वजह से उन्हें **'पंचजन्य'** कहा गया। इनके नाम थे अनु, द्रुहय, पुरु, तुर्वस, तथा युद्ध। ऋग्वेद में दसराज्ञ युद्ध का वर्णन है जो भरत जन के राजा सुदास और दस राजाओं के संघ के बीच हुआ था। यह युद्ध रावी नदी के तट पर हुआ था। इसमें सुदास विजयी रहा।
- राजा को सहायता करने के लिए सभा, समिति एवं विदथ नामक संस्था थी। **विदथ** आर्यो की सर्वाधिक प्राचीन संस्था थी। इसे जनसभा भी कहा जाता था। **सभा** श्रेष्ठ वृद्धों की संस्था थी। जबकि **समिति** केन्द्रीय राजनीतिक संस्था थी। समिति का मुखिया ईशान कहलाता था। ऋग्वैदिक काल में महिलाएं सभा एवं विदथ में भाग लेती थी।
- ऋग्वैदिक काल में कर के रूप में बलि लिया जाता था लेकिन उसे जनता अपनी इच्छानुसार देती थी।

सामाजिक व्यवस्था

- ऋग्वैदिक समाज कबीलाई प्रवृत्ति का था जिसका मुख्य पेशा पशुपालन था। कृषि इनका दूसरा पेशा था।
- ऋग्वैदिक समाज दो वर्णो में विभाजित था। एक श्वेत और दूसरा अश्वेत। ऋग्वेद के 10 वें मण्डल के पुरुष सूक्त में वर्ण के रूप में शूद्र की चर्चा की गई है।
- ऋग्वैदिक समाज का मूल आधार परिवार था जो पितृसतात्मक था। समाज में स्त्रियों की स्थिति अच्छी थी लोपा, घोषा अपाला, विश्वारा जैसी स्त्री वैदों की ऋचाओं की रचयिता है।
- ऋग्वैदिक आर्य शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों तरह के भोजन करते थे। लेकिन ऋग्वैदिक आर्य मछली एवं नमक से परिचित नहीं थे।
- ऋग्वेद के दशवें मण्डल में वर्णित सूक्त में विराट द्वारा चार वर्णो की उत्पत्ति का वर्णन मिलता है।
- शुद्र शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद के दशवें मण्डल के पुरुष सुक्त में मिलता है।
- ऋग्वेद का आठवां मण्डल कण्वों और आंगिरस वंश को समर्पित है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 50 सूक्त कण्व वंश के ऋषियों द्वारा निर्मित है।
- ऋग्वेद के दसवे मण्डल में राजा को राष्ट्र या राज्य को बनाये रखने के लिए कहा गया है।
- ऋग्वेद का नौवां मण्डल सोमदेवता को समर्पित हैं।
- शतपथ ब्राह्मण में पत्नी को अर्द्धांगिनी कहा गया है।
- गाय को **'अघन्या'** (न मारने योग्य) माना जाता था।

आर्थिक व्यवस्था

- ऋग्वैदिक आर्यो का प्रमुख पेशा पशुपालन था। ऋग्वेद में गाय का 176 बार उल्लेख आया है। आर्यो के जीवन में इसका विशेष महत्त्व था। ऋग्वैदिक आर्य बाघ से अपरिचित थे।
- ऋग्वेदिक आर्यो का कृषि द्वितीय पेशा था। ऋग्वेद में मात्र 24 बार कृषि का उल्लेख है। ऋग्वेद में एक ही अनाज यव (जौ) का उल्लेख है।
- ऋग्वेद में विभिन्न प्रकार के दस्तकारों की चर्चा है जैसे बुनकर, कर्मकार, बढ़ई, रथकार इत्यादि।
- ऋग्वैदिक काल में व्यापार होता था जो जलीय एवं स्थलीय दोनों मार्गो से होता था।
- ऋग्वेद में फाल का उल्लेख मिलता है। उनके जीवन के मूलभूत आधार कृषि एवं पशुपालन थे।
- कृषि योग्य भूमि को 'उर्वरा' अथवा क्षेत्र कहा जाता था।
- ऋग्वेद में 'गव्य' एवं 'गव्यति' शब्द चारागाह के लिए प्रयुक्त है।
- विनिमय के माध्यम के रूप में 'निष्क' का भी उल्लेख हुआ है।
- बेकनाट (सूदखोर) वे ऋणदाता थे जो बहुत अधिक ब्याज लेते थे।
- ऋग्वेद में एक ही अनाज अर्थात् यव का उल्लेख हुआ है।

प्राचीन नाम	सम्बंधित आधुनिक नाम
उर्वरा	जुते हुए खेत
लांगल	हल
बृक	बैल
करीष, शकृत	गोबर की खाद
सीता	हल से बनी नालियाँ
अवत	कूप (कुँआ)
कीवाश	हलवाहा
ऊर्दर	अनाज नापने वाले पात्र
पर्जन्य	बादल
कृत्तिवासा	चर्म धारण करने वाला।

धार्मिक व्यवस्था

- ऋग्वैदिक देवताओं को तीन भाग में बांटा गया है।
  1. पृथ्वी के देवता – सोम, अग्नि, बृहस्पति
  2. अंतरिक्ष के देवता – इन्द्र, वायु
  3. आकाश के देवता – सूर्य, मित्र, वरूण
- ऋग्वेद में इन्द्र पर 250 सूक्त है। यह अत्यंत पराक्रमी और शक्तिशाली देवता थे।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

- ऋग्वेद में अग्नि के लिए 200 सूक्त है। यह पुजारियों के देवता थे जो यज्ञ का अनुष्ठान करते थे।
- वरूण को नैतिक व्यवस्था का संरक्षक माना गया था। वरूण पापियों को दंड देते थे।
- प्रसिद्ध गायत्री मंत्र ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल में है।

रथेष्ट – कुशल रथ योद्धा
विजयेन्द्र – शत्रुओं के पुरों (किलों) को नष्ट करने वाला
सोमपाल – सोम का पालन करने वाले
शतक्रतु – एसौ शक्ति धारण करने वाले
वृत्रहन – वृत्र राक्षस का संहार करने वाले
मधवा – दानशील होने के कारण

उत्तर वैदिक काल

दर्शन	प्रवर्तक
1. भौतिकवादी चार्वाक	चार्वाक या बृहस्पति
2. सांख्य	कपिल
3. योग	पंतजलि
4. न्याय	गौतम
5. वैशेषिक (अणुवाद)	कणाद या उलूक
6. मीमांसा- पूर्व मीमांसा	जैमिनी
उत्तर मीमांसा	बादरायण

- उत्तर वैदिक काल का समय 1000 BC से 600 BC है। इसी काल में प्रसिद्ध महाभारत युद्ध हुआ था इसी काल में सर्वप्रथम लोहे के प्रयोग के साक्ष्य भी मिले है।

राजनीतिक व्यवस्था

- उत्तर वैदिक काल में जन के स्थान पर बड़े-बड़े राज्य जनपद का उद्भव होने लगा। राजा को राजकाल में सहायता देने के लिए सभा, समिति का अस्तित्व रहा लेकिन विदथ समाप्त हो गया। पुरू एवं भरत मिलकर कुरू जनपद और तुर्वस एवं क्रिवि मिलकर पंचाल जनपद बन गए।
- राजा राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ एवं वाजपेय यज्ञ का आयोजन करने लगे।
- उत्तर वैदिक काल में बलि एक अनिवार्य कर के रूप में लिया जाने लगा जो उपज का 16वां भाग होता था।
- राजा को राजकाज में सहायता के लिए कुछ अधिकारी होते थे जिसे रत्निन कहा जाता था। इसकी संख्या ग्यारह थी।
- उपनिषद काल में अनेक राजा ऐसे हुए, जो ब्रह्म ज्ञान तथा आध्यात्म चिंतन से जुड़े थे। जिनमें प्रमुख थे – विदेह के जनक, कैकेय के अश्वपति, काशी के अजातशत्रु और पांचाल के प्रवाहण जाबालि।
- उत्तरवैदिक काल में पांचाल सर्वाधिक विकसित राज्य था। शतपथ ब्राह्मण में इन्हें वैदिक सभ्यता का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि कहा गया है।

आर्थिक व्यवस्था

- उत्तर वैदिक काल में आर्यो का प्रमुख पेशा कृषि हो गया और पशुपालन उनका दूसरा पेशा था। लोहे के प्रयोग के कारण कृषि में अभूतपूर्व उन्नति हुई। **अंतरंजीखेड़ा** से 750 BC के आसपास कृषि में लोहे के उपकरण के प्रयोग के साक्ष्य मिले है।
- उत्तर वैदिक कालिन दस्तकारी में बढ़ईगिरी, चर्मकार, बुनकर प्रसिद्ध थे लेकिन रथकार की सामाजिक स्थिति इन सबों से अच्छी थी।
- उत्तर बैदिक काल में भी व्यापार होता था जो जलीय एवं स्थलीय मार्गो के साथ साथ समुद्री मार्ग द्वारा भी होते थे।
- कृषि इस काल में आर्यो का मुख्य व्यवसाय था। शतपथ ब्राह्मण में कृषि की चारों क्रियाओं – जुताई, बुआई, कटाई तथा मड़ाई का उल्लेख हुआ है।
- काठक संहिता में 24 बैलों द्वारा खीचें जाने वाले हलों का उल्लेख मिलता है।
- शतपथ ब्राह्मण में महाजनी प्रथा का पहली बार जिक्र हुआ है तथा सूदखार को कुसीदिन कहा गया है।
- निष्क, शतमान, पाद, कृष्णल आदि माप की भिन्न-भिन्न इकाइयाँ थीं। निष्क जो ऋग्वैदिक काल में एक आभूषण था अब एक मुद्रा माना जाने लगा।
- शतमान सम्भवत: चाँदी की मुद्रा थी।

सामाजिक व्यवस्था

- उत्तर वैदिक कालिन समाज का आधार परिवार था जो पितृसत्तात्मक होता था। इस काल में वर्णव्यवस्था पूर्णत: स्थापित हो चुकी थी। इसमें ब्राह्मणों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था जबकि शूद्रों की स्थिति दयनीय थी।
- उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट के लक्षण दृष्टिगोचर होते थे। इन्हें पुरूषों के अधीन माना गया है।
- उत्तर वैदिक काल में विवाह के आठ प्रकार का उल्लेख पाया गया है। दैव विवाह, अर्षि विवाह, प्रजापत्य विवाह, ब्रह्म विवाह, गंधर्व विवाह, असुर विवाह, राक्षस विवाह, पिशाच विवाह।
- उत्तर वैदिक काल में आश्रम व्यवस्था का भी प्रचलन शुरू हो जाता है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास।
- 'वृहदारण्यक एवं छान्दोग्य उपनिषद में चाण्डाल को भी यज्ञ का अवशेष पाने का अधिकारी माना गया।
- सर्वप्रथम जाबालोपनिषद में चारों आश्रमों का विवरण मिलता है।

धार्मिक व्यवस्था

Downloaded From www.studymasterofficial.com

- उत्तर वैदिक काल के धार्मिक व्यवस्था में परिवर्तन से अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उत्तर वैदिक काल में प्रजापति को सर्वोच्च स्थान प्राप्त हो गया।
- उत्तर वैदिक काल में यज्ञीय कर्मकाण्डों के स्थान पर दार्शनिक विचारों का भी अवलोकन किया जाने लगा।

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध का जन्म 563 BC में कपिलवस्तु के शाक्यकुल में लुम्बिनी (नेपाल) में हुआ था। इनके पिता का नाम शुद्धोदन एवं माता का नाम महामाया था। इनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था। जन्म के सात दिन बाद इनकी माता की मृत्य हो गयी। इनका पालन पोषण इनकी मौसी महाप्रजापति गौतमी ने किया।
- गौतम बुद्ध के जन्म पर कालदेव और कैडिन्य नामक ब्राह्मण ने भविष्यवाणी की थी कि बालक बड़ा होकर या तो संन्यासी बनेगा या चक्रवर्ती सम्राट।
- 16 वर्ष की आयु में कोलिय गणराज्य की कन्या यशोधरा से गौतम बुद्ध का विवाह हुआ। 29वें वर्ष में सिद्धार्थ को पुत्र की प्राप्ति हुई जिनका नाम राहुल रखा गया।
- इनके जीवन की परिवर्तनकारी घटनाओं में रोगी, वृद्ध, शव यात्रा एवं संन्यासी को देखना शामिल है। 29वें वर्ष में सिद्धार्थ ने गृह त्याग किया। इस घटना को महाभिनिष्क्रमण कहा गया।
- गृह त्याग के बाद ज्ञान की खोज में रुद्रकरामपुत्र और अलारकलाम नामक संत के पास आए परंतु संतुष्ट न होने के कारण ऊरुवेला आ गए। जहां उन्हें कौडिन्य आदि 5 साधक मिले 6 वर्ष तक घोर तपस्या के बाद वैशाख पूर्णिमा की रात में वट वृक्ष के नीचे निरंजना नदी (पुनपुन) के तट पर ज्ञान की प्राप्ति हुई। ज्ञान की प्राप्ति के बाद गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए। कालान्तर में इस वट वृक्ष को शशांक नामक शासक ने कटवा कर नदी में फेंकवा दिया।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध सारनाथ आए जहाँ उन्होंने 5 ब्राह्मण को सर्वप्रथम ज्ञान की शिक्षा दी। इस घटना को धर्मचक्र प्रवर्तन कहा गया।
- इसके बाद बुद्ध 80 वर्ष के उम्र तक धर्म का प्रचार घूम-घूम कर करते रहे। इस कार्य में विभिन्न राजाओं के द्वारा भी सहयोग प्राप्त हुआ। श्रावस्ती का श्रेष्ठी अनाथपिण्डक ने जेतवन उद्यान जेतराजकुमार से खरीदकर बुद्ध को भेंट किया। मगध सम्राट बिम्बिसार ने बेलवन विहार बुद्ध को भेंट किया। धर्म प्रचार के दौरान वर्षाकाल में यहां निवास करते थे। आम्रपाली ने आम्रवाटिका बुद्ध को भेंट थी।
- 80 वर्ष की उम्र में कुशीनगर में 483 BC में बुद्ध की मृत्यु हो गयी। इसे महापरिनिर्वाण कहा गया।
- पूर्णिमा का बुद्ध से विशेष संबंध था। बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति और मृत्यु इसी दिन हुआ था।
- बुद्ध की मृत्यु के बाद उनके अवशेषों को 8 भागों में बांटकर स्थानीय शासकों को सौंप दिया गया जिस पर उन लोगों ने स्तूप बनवाएं। बाद में अशोक ने इन अवशेषों को निकालकर उनपर 84000 स्तूप बनवाए।
- इन स्तूपों में साँची (विदिशा मध्य प्रदेश) का स्तूप विश्व प्रसिद्ध है।
- बुद्ध की मृत्यु के बाद संघ के संचालन और उसके विभेद को रोकने के लिए बौद्ध संगितियों का आयोजन किया जिसमें त्रिपिटक नामक ग्रन्थ का संकलन किया गया।

प्रथम महासंगिति

- 483 BC में बुद्ध के मृत्यु के तुरंत बाद। प्रथम संगिति का आयोजन राजगृह नामक स्थान पर किया गया। इस समय मगध का सम्राट अजातशत्रु था। इस सम्मेलन की अध्यक्षता महाकश्यप ने की। इसमें विनयपिटक और सुतपिटक नामक ग्रन्थ का संकलन किया गया।

द्वितीय महासंगिति

- 383 BC में वैशाली नामक स्थान पर द्वितीय बौद्ध संगिति का आयोजन किया गया। इस समय मगध पर कालाशोक शासन कर रहा था। सम्मेलन की अध्यक्षता साबकबीर ने की।

तृतीय महासंगिति

- 250 BC में तृतीय महासंगिति का आयोजन पाटलिपुत्र में किया गया। इस समय मगध का सम्राट अशोक था। सम्मेलन की अध्यक्षता मोगालीपुत्तस ने की। इस संगिति में अभिधम्म पिटक का संकलन किया गया।

चौथी महासंगिति

- प्रथम शताब्दी ई. में कश्मीर के कुण्डलवन में इस संगिति का आयोजन किया गया। इस समय कनिष्क राजा था। सम्मेलन के अध्यक्ष वसुमित्र एवं उपाध्यक्ष अश्वघोष थे। इसी सम्मेलन में आपसी विवादों के बाद बौद्ध धर्म दो भागों में बंट गया- हीनयान एवं महायान।

बौद्ध धर्म की शिक्षाएं एवं सिद्धान्त -

- बौद्ध धर्म के त्रिरत्न हैं - बुद्ध, धम्म तथा संघ।
- बौद्ध धर्म के मूलाधार चार आर्य सत्य हैं। ये हैं- 1. दु:ख 2. दु:ख समुदाय 3. दु:ख निरोध 4. दु:ख निरोध गामिनी प्रतिपदा (दु:ख निवारक मार्ग) अर्थात् अष्टांगिक मार्ग।
- दु:ख को हरने वाला तथा तृष्णा का नाश करने वाले अष्टांगिक मार्ग के आठ अंग है। जिन्हें मज्झिम प्रतिपदा अर्थात मध्यम मार्ग भी कहते हैं।
- अष्टांगिक मार्ग के तीन मुख्य भाग हैं - 1. प्रज्ञा ज्ञान 2. शील तथा 3. समाधि । इन तीन प्रमुख भागों के अन्तर्गत

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

जिन आठ उपायों की प्रस्तावना की गयी है। वे निम्न हैं-

1. सम्यक् दृष्टि 2. सम्यक् संकल्प
3. सम्यक् वाणी 4. सम्यक् कर्मान्त
5. सम्यक् आजीव 6. सम्यक् व्यायाम
7. सम्यक स्मृति 8. सम्यक समाधि

- अष्टांगिक मार्ग को भिक्षुओं का कल्याण मित्र कहा गया।
- बौद्ध धर्म मूलत: अनीश्वरवादी है।
- बौद्ध धर्म अनात्मवादी है। बौद्ध धर्म ने वर्ण व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था का विरोध किया।
- महात्मा बुद्ध से जुड़े आठ स्थान लुम्बिनी, गया, सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, संकास्य, राजगृह तथा वैशाली को बौद्ध ग्रंथों में अष्ट महास्थान नाम से जाना गया।

बुद्ध के जीवन से सम्बंधित प्रतीक –

घटना	प्रतीक
जन्म	कमल व सांड, हाथी
गृहत्याग	घोड़ा
ज्ञान	पीपल
निर्वाण	पदचिन्ह
मृत्यु	स्तूप

जैन धर्म

- महावीर जैन धर्म के संस्थापक नहीं बल्कि वास्तविक प्रवर्तक माने जाते है। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का ऋग्वेद में उल्लेख है। जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म वाराणसी के राजवंश में हुआ था। इनके पिता का नाम अश्वसेन एवं माता का नाम वामा था।
- 24वें तीर्थंकर महावीर का जन्म वैशाली के कुण्डग्राम में 540 BC में हुआ था। इनके पिता का नाम सिद्धार्थ और माता का नाम त्रिशला था जो लिच्छवी नरेश चेटक की बहन थी। इनकी एक पुत्री भी थी जिसका नाम प्रियदर्शनी था।
- 30 वर्ष की उम्र में महावीर ने गृहत्याग किया। 12 वर्ष तक घोर तपस्या के बाद 42 वें वर्ष में जुम्भिका ग्राम में ऋजुपालिका नदी के किनारे शाल वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ।
- महावीर की पहली शिष्या **'पद्मावती'** मानी जाती थी जबकि चम्पा के शासक दधिवाहन की पुत्री **'चन्दना'** प्रथम भिक्षुणी बनी।
- चम्पा के शासक दधिवाहन, पाटलिपुत्र के शासक उदयन, अवन्ति के शासक चण्ड प्रद्योत, काशी नरेश इनके प्रमुख शिष्य माने जाते है।
- जैन धर्म के अनुयायी चार भागों में बांटे हुए है- भिक्षु, भिक्षुणी, श्रावक, श्राविका।
- जैन धर्म के तीन रत्न माने जाते है। सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक आचरण।
- भिक्षु भिक्षुणी के लिए जैन धर्म में 5 महाव्रत की व्यवस्था की गयी है- अहिंसा, अमिषा (झूठ न बोलना) अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य। इनमें से चार महाव्रत पार्श्वनाथ के समय से ही थे। 5वां महावीर ने जोड़ा।
- जैन धर्म में काया क्लेश पर सबसे ज्यादा जोर दिया गया। काया क्लेश द्वारा शरीर त्याग की भी बात कहीं गयी है। चन्द्रगुप्त मौर्य ने श्रवण बेलगोला में इसी प्रकार मृत्यु का वरण किया था। जिसे संलेखना कहते है।
- जैन धर्म में निम्न संगितयों का आयोजन किया गया–

प्रथम संगिति

- 367 BC में पाटलिपुत्र में इसका आयोजन किया गया जिसका नेतृत्व स्थूलभद्र ने किया। इसी संगिति में जैन धर्म दो भाग श्वेताम्बर एवं दिगम्बर में विभाजित हो गया। इसमें जैन धर्म के प्रधान भाग 12 अंगों का सम्पादन हुआ।

द्वितीय संगिति

- यह संगीति देवर्धि क्षमाश्रमण के नेतृत्व में 513ई. (5 वीं सदी) में काठियावाड़ के बल्लभी नामक स्थान पर हुआ। इसमें श्वेताम्बर सम्प्रदाय के सिद्धांत को अंतिम रूप से संकलित किया गया।
- घूम घूमकर उपदेश देते हुए महावीर स्वामी को 72 वर्ष की उम्र में बिहार स्थित राजगृह के समीप पावा नामक स्थान पर निर्वाण प्राप्त हुआ।
- स्यादवाद या सप्तभंगीनय जैन धर्म की विशेषता है।
- **जैन धर्म मे 24 तीर्थंकर** – 1. ऋषभदेव (आदिनाथ) 2. अजीतनाथ 3. सम्भवनाथ 4. अभिनंदन 5. सुमतिनाथ 6. पद्मप्रभु 7. सुपार्श्व नाथ 8. चन्द्रप्रभु 9. सुविधिनाथ 10. शीतलनाथ 11. श्रेयांशनाथ 12. वासुमूल 13. विमलनाथ 14. अनन्तनाथ 15. धर्मनाथ 16. शांतिनाथ 17. कुन्थूनाथ 18. अरनाथ 19. मल्लिनाथ 20. मुनीसुव्रत 21. नेमीनाथ 22. अरिष्ठनेमि 23. पार्श्वनाथ 24. महावीर स्वामी

जैन धर्म की विशेषता –

- 1. जैन धर्म में देवताओं के अस्तित्व को स्वीकार किया गया, किन्तु उनका स्थान जिन् से नीचे रखा गया है। 2. जैनधर्म संसार की वास्तविकता को स्वीकार करता है। 3. बौद्ध धर्म की तरह जैन धर्म में वर्ण व्यवस्था की निंदा नहीं की गयी है।
- जैनधर्म पूर्नजन्म एवं कर्मवाद में विश्वास करता है। जैन धर्म में सल्लेखना से तात्पर्य है 'उपवास द्वारा शरीर का त्याग'।
- कालान्तर में जैन धर्म दो समुदायों में विभाजित हो गया।
- 1. तेरापंथी (श्वेताम्बर) 2. समैया (दिगम्बर)
- भ्रदबाहु एवं उनके अनुयायियों को दिगम्बर कहा गया ये दक्षिणी जैनी कहे जाते थे।
- स्थलबाहु एवं उनके अनुयायियों को **'श्वेताम्बर'** कहा गया।
- श्वेताम्बर सम्प्रदाय के लोगों ने ही सर्वप्रथम महावीर एवं

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

अन्य तीर्थकरों की पूजा आरंभ की ये सफेद वस्त्र धारण करते थे।

- राष्ट्रकूट राजाओं के शासनकाल में दक्षिण भारत में जैन धर्म का काफी प्रचार हुआ।
- गुजरात तथा राजस्थान में जैन धर्म 11वीं तथा 12वीं शताब्दी में अधिक लोकप्रिय रहा।
- जैनों के उत्तर भारत में दो प्रमुख केन्द्र थे। 1. उज्जैन 2. मथुरा।
- दिलवाड़ा में कई जैन तीर्थकरों जैसे - आदिनाथ, नेमिनाथ, एवं खजुदाहों में पार्श्वनाथ आदि के मंदिर हैं।

ऋषभदेव (आदिनाथ) संज्ञान	वृषभ
शांतिनाथ	हिरण
पार्श्वनाथ	सर्पफण
महावीर	सिंह

- जैन धर्म का महत्वपूर्ण ग्रंथ कल्पसूत्र संस्कृत में लिखा गया है।
- जैन धर्म में वेद की प्रामाणिकता नहीं मानी है तथा वेदवाद का विरोध किया है।
- जैन दर्शन हिन्दू सांख्य दर्शन के काफी निकट है।
- महावीर की मृत्यु के बाद जैन संघ का प्रथम अध्यक्ष सुधर्मन था।
- चम्पा के शासक दधिवाहन की पुत्री की पुत्री चंदना महावीर की पहली महिला भिक्षुणी थी।
-

छठी शताब्दी ई. पू. में महाजनपद

- उत्तर वैदिक काल में जनपद का उदय हो चुका था 600 BC में इनका और अधिक विकास हुआ और ये महाजनपद में बदल गये। अंगुत्तर निकाय नामक बौद्ध ग्रन्थ में 16 महाजनपद का वर्णन है।

कम्बोज

- प्राचीन भारत के पश्चिम सीमा पर उत्तरापथ पर स्थित था। यह क्षेत्र घोड़े के लिए विख्यात था। इसकी राजधानी हाटन राजपुर थी। चन्दवर्धन यहां का राजा था।

गंधार

- यह आधुनिक पेशावर एवं रावलपिंडी जिले में स्थित था। इसकी राजधानी तक्षशिला थी। यहां पुष्कर सीरिन नामक शासक था।

मत्स्य

- आधुनिक जयपुर के आसपास के क्षेत्र में यह महाजनपद स्थित था। इसकी राजधानी विराटनगर थी।

पंचाल

- आधुनिक युग के रूहेलखण्ड, फर्रूखाबाद, बरेली, बदायूँ का जिला शामिल था। इसके दो भाग थे उत्तरी पंचाल की राजधानी अहिक्षत्र एवं दक्षिण पंचाल की राजधानी काम्पिल्य थी। पाण्डवों की पत्नी द्रौपदी यही की राजकुमारी थी।

कुरु

- आधुनिक मेरठ जिला एवं दक्षिणी पूर्व हरियाणा में स्थित था। इसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी।

शूरसेन

- इसकी राजधानी मथुरा थी। बुद्ध के समय यहां का शासक अवन्तिपुत्र था जो बुद्ध का अनुयायी था।

चेदि

- यमुना नदी के किनारे आधुनिक बुन्देलखण्ड के क्षेत्र में स्थित था। इसकी राजधानी सोथीवति थी। महाभारत काल में शिशुपाल यहां का राजा था।

अवन्ति

- आधुनिक मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में स्थित था। इसके दो भाग थे उत्तरी अवन्ति की राजधानी उज्जैन एवं दक्षिणी अवन्ति की राजधानी महिष्मती थी। बुद्ध के समय चन्द्रप्रद्योत यहां का शासक था।

अस्मक

- सभी महाजनपद में सिर्फ अस्मक ही दक्षिण भारत में स्थित था। यह गोदावरी नदी के किनारे बसा था। इसकी राजधानी पोतन थी बाद में इसे अवन्ति ने अपने साम्राज्य में मिला लिया।

कोसल

- पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित इस महाजनपद को सरयु नदी दो भागों में बांटती थी। उत्तरी भाग की राजधानी श्रावस्ती एवं दक्षिणी भाग की राजधानी अयोध्या थी। बुद्ध के समय प्रसेनजित यहां का शासक था। कोसल ने बाद में कपिलवस्तु के शाक्य को अपने साम्राज्य में मिला लिया।

वत्स

- आधुनिक इलाहाबाद के क्षेत्र में स्थित था जिसकी राजधानी कौशाम्बी थी। बुद्ध के समकालिन यहां का शासक उदयन था यह यमुना नदी के किनारे बसा था।

काशी

- काशी नगरी को शिव की नगरी के नाम से जाना जाता है। इसको राजधानी वाराणसी थी। इसे कोसल ने अपने राज्य में मिला लिया था।

मल्ल

- आधुनिक पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार के कुछ हिस्से में स्थित था इसकी राजधानी कुशीनारा थी। यहां पर गणतंत्रात्मक शासन व्यवस्था प्रचलित थी।

वृज्जि

- आधुनिक बिहार राज्य के गंगा के उत्तर तिरहुत प्रमण्डल में स्थित था। यह गणराज्यों का संघ था जिसमें कुल 8 राज्य शामिल थे यथा विदेह, वृज्जि लिच्छवी इत्यादि।

अंग

- यह क्षेत्र आधुनिक बिहार राज्य के भागलपुर एवं मुंगेर जिले में स्थित था। इसकी राजधानी चम्पा थी। बुद्ध के समय यहां

Downloaded From www.studymasterofficial.com

का शासन ब्रह्मदत्त था जिसे बिम्बिसार ने पराजित कर अंग को मगध साम्राज्य में मिला लिया था।

मगध

- वर्तमान में बिहार राज्य के आधुनिक पटना एवं गया जिले में स्थित था। इसकी राजधानी राजगृह या गिरिव्रज थी। महावंश के अनुसार 15 वर्ष की आयु में बिम्बिसार मगध का राजा बना और हर्यकवंश की स्थापना की। बिम्बिसार का शासनकाल 544 BC - 492 BC तक रहा है। इसमें उसने वैवाहिक संबंधों प्रसेनजित की बहन कोसलदेवी, लिच्छवी राजकुमारी चेल्हना एवं पंजाब के भद्र कुल के प्रधान की पुत्री क्षेमा से विवाह कर राज्य को सुदृढ़ बनाया और अंग विजय द्वारा सम्राज्य विस्तार भी किया।
- बिम्बिसार के बाद उसका पुत्र अजात शत्रु मगध का राजा बना। इसका शासनकाल 492 BC से 460 BC रहा इसने अपने मामा प्रसेनजित से काशी प्राप्त किया तो लिच्छवी पर विजयी अभियान भी किया।
- अजातशत्रु के बाद उदयन शासक बना जिसका शासनकाल 460 BC से 444 BC रहा। इसने पाटलिपुत्र को नई राजधानी बनाया।
- हर्यक वंश का अंतिम शासक नागदसक एक अयोग्य शासक था। इसे जनता ने पदच्युत कर शिशुनाग को मगध का सम्राट बनाया। इसने शिशुनाग वंश की स्थापना की। यह पहला निर्वाचित शासक माना जाता है। इसने अवन्ति को मगध साम्राज्य में मिला लिया।
- शिशुनाग का उत्तराधिकारी कालाशोक हुआ जो कुछ समय के लिए राजधानी पाटलिपुत्र से वैशाली ले गया। इसी के शासनकाल में द्वितीय बौद्ध संगिति का आयोजन किया गया।
- शिशुनाग वंश के बाद मगध पर नंद वंश का शासन स्थापित हुआ जिसका संस्थापक महानंदिन था। महानंदिन के पुत्र महापदमनंद को शूद्र पुत्र माना जाता है जो महानंदिन की हत्या कर स्वयं शासक बन बैठा।
- नंद वंश का अंतिम शासक धनानंद था। जिसे चन्द्रगुप्त मौर्य ने पराजित कर मगध साम्राज्य पर मौर्य वंश की स्थापना की।
- इसके अलावा छठी शताब्दी ई. पू. 10 गणराज्य थे-
  1. कुशीनारा के मल्ल
  2. पावा के मल्ल
  3. कपिलवस्तु के शाक्य
  4. सुंसुमारगिरी के मग्ग
  5. केसपुत्त के कालाम
  6. अलकप्प के बुलि
  7. रामग्राम के कोलिय
  8. पिप्पलिवन के मोरिय
  9. मिथिला के विदेह
  10. वैशाली के लिच्छवि

महात्मा बुद्ध के समय लिच्छवि सबसे बड़ा शक्तिशाली गणराज्य था।

विदेशी आक्रमण

- पश्चिमोत्तर भारत में गंधार, कंबोज एवं मद्र जनपद आपस में लड़ते रहते थे। इसका लाभ ईरान के हखामनी शासकों ने उठाया। इस वंश के दारा प्रथम ने सिंध क्षेत्र पर आक्रमण कर इसे अपने साम्राज्य का 20 वां क्षत्रपी घोषित किया यह आक्रमण 500 BC के आस पास हुआ था।
- यूनान के फिलिप के पुत्र सिकन्दर महान ने 326 BC में भारत अभियान किया। इसमें तक्षशिला के शासक आम्भी ने सिकन्दर की सहायता की। इस लिए आम्भी प्रथम गद्दार बना जिसने भारत भूमि पर विदेशियों को सहायता पहुंचाने का कार्य किया।
- भारत अभियान के तहत सिकन्दर का सबसे महत्वपूर्ण युद्ध झेलम या वितस्ता का युद्ध था जो पोरस के साथ हुआ। इसमें पोरस पराजित हुआ परन्तु उसकी वीरता से प्रभावित होकर सिकन्दर ने उसका राज्य लौटा दिया।
- सिकन्दर व्यास नदी से वापस लौट गया क्योंकि उसकी सेना ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया। व्यास नदी के तट पर 12 वेदिकाएं बनाई।
- सिकन्दर ने दो नगर निकैया (विजय नगर) एवं बुकफेला बसाया। सिकन्दर 19 महीने भारत रहा। लौटने के दौरान मलेरिया रोग के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

मौर्य साम्राज्य

- तक्षशिला के निवासी ब्राह्मण विष्णुगुप्त जिसे इतिहास में चाणक्य एवं कौटिल्य के नाम से जाना जाता है, ने नंद वंश के अंतिम शासक धनानंद को मगध के सिंहासन से पदच्युत कर चन्द्रगुप्त मौर्य को गद्दी पर सिंहासनासीन करने में सहायता की। चाणक्य की नंदों से घृणा के कारण नंदों ने इसे अपमानित किया था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य 322 BC में मगध की गद्दी पर बैठा और 298 BC तक शासन किया। युनानी लेखकों ने चन्द्रगुप्त मौर्य को सैड्रोकोटस, ऐंड्रोकोट्स के नाम से पुकारा है। चन्द्रगुप्त के समय के प्रमुख घटनाओं में बैक्ट्रिया के शासक सेल्युकस के साथ 305 B.C में युद्ध है जिसमें बाद में संधि हो गयी थी और सेल्युकस ने अपनी पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य से कर दिया और अपने प्रांतों का कुछ भाग दहेज के रूप में दिया और मेगास्थनीज नामक दूत को भारत भेजा। चन्द्रगुप्त ने 500 हाथी का उपहार सेल्युकस को दिया।
- सेल्युकस-सिकन्दर का सेनापति था, जिसे पश्चिमोत्तर भारत का अधिपति बनाया गया था।
- रुद्रदामन के जूनागढ अभिलेख से पता चलता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य ने गिरनार में सुदर्शन झील का निर्माण करवाया और उस प्रदेश में अपना एक गवर्नर पुष्यगुप्त को नियुक्त करवाया।
- मगध में 12 वर्ष के अकाल पड़ने पर चन्द्रगुप्त अपने साम्राज्य का भार अपने पुत्र बिंदुसार को सौपकर जैन साधु भद्रबाहु के साथ कर्नाटक राज्य के मैसूर के श्रवणबेलगोला चला गया जहां कायाक्लेश द्वारा 298 BC में शरीर त्याग

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

दिया।

बिंदुसार

- बिंदुसार का शासन काल 298 BC से 273 BC तक रहा बिंदुसार को राजकाज में सहायता देने के लिए दरबार में 500 सदस्यों की परिषद थी और इसका पहला प्रधान चाणक्य था इसके बाद सुबन्धु, खल्लाटक, राधागुप्त मंत्रिपरिषद के प्रधान बने।
- बिंदुसार के शासन काल में अशोक अवन्ति का गवर्नर था।
- बिंदुसार के दरबार में यूनान के डायमेकस और मिश्र के डायोनिसियस दूत आए थे। बिंदुसार ने सीरियाई नरेश से मीठी शराब, सूखा अंजीर एवं दार्शनिक खरीद कर भेजने का आग्रह किया। सीरियाई नरेश ने दो चीजों को भेज दिया और दार्शनिक के लिए माना कर दिया।

अशोक

- 273 BC में बिंदुसार के मृत्यु के बाद एवं 269 BC में अशोक के सिहांसनासीन होने के बीच के 4 वर्ष सत्ता संघर्ष के रहे। कुछ साहित्य से पता चलता है कि अशोक अपने 99 भाइयों की हत्या कर गद्दी पर बैठा। सामान्य विचारधारा यह है कि अशोक अपने बड़े भाई सुशीम की हत्या कर गद्दी पर बैठा। अशोक का शासन काल 269 B.C से 232 B.C रहा।
- अशोक के प्रमुख विजयों में कालिंग विजय महत्वपूर्ण है जो अपने राज्याभिषेक के 9 वें वर्ष में की। 261 B.C में कलिंग विजय के बाद साम्राज्यवादी नीति का परित्याग कर दिया और धम्म विजय की नीति को जारी किया। धम्म यात्रा के क्रम से सबसे पहले बोधगया गया।
- अशोक ने नेपाल में पाटन, देवपटन एवं ललितपाटन नामक नगर बसाये तो काश्मीर में श्रीनगर नामक नगर बसाया।
- अधिकांश अभिलेखों में अशोक स्वयं को 'देवानामप्रियदसि लाजा' (प्रिय राजा) कहता है। मास्की, गुर्जरा, निट्टूर और उदेगोलम अभिलेखों में अशोक नाम मिलता है।
- अशोक ने अपने शासन काल में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए विभिन्न क्षेत्रों में दूत भेजे। इसने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा।
- अशोक ने आजीवकों के वर्षाकालीन आवास के लिए **बराबर की पहाड़ियों** में गुफाओं का निर्माण करवाया। जिनके नाम थे - कर्ण, चौपार, सुदामा तथा विश्व झोपड़ी।
- मौर्य वंश का अंतिम शासक वृहद्रथ था। यह एक अत्यन्त अयोग्य शासक था। वृहद्रथ की इसके एक ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने 185 BC में हत्या कर दी। इससे मौर्य वंश का अंत हो गया और मगध पर शुंग वंश की स्थापना हुई।
- दक्षिण भारत में मास्की एवं गुर्जरा अभिलेखों में उसका नाम अशोक तथा पुराणों में 'अशोक बर्द्धन' मिलता है।
- राज्याभिषेक से पूर्व अशोक उज्जैन का राज्यपाल था।
- अशोक द्वारा उत्कीर्ण कराये गये अभिलेखों में उसकी एक ही रानी 'करुवाकी' का उल्लेख मिलता है।

प्रथम शिलालेख	1. समाज (उत्सव) का निषेध 2. पशुबलि का निषेध 3. सभी मनुष्य मेरी संतान की तरह हैं।
द्वितीय शिलालेख	1. प्रत्यन्त राज्य - चेर (केरलपुत्त) चोल, पाण्ड्य, सत्तियपुत्त एवं ताम्रपर्णी (श्रीलंका) 2. पशु चिकित्सा एवं मानव चिकित्सा एवं लोककल्याणकारी कार्य
तृतीय शिलालेख	1. महामात्रों अर्थात् पदाधिकारियों के प्रति पांचवे वर्ष दौरे का आदेश। 2. राजुक या रज्जुकों की नियुक्ति
पांचवे शिलालेख	1. धर्म महामात्रों की नियुक्ति कार्य निर्देशन 2. मौर्यकालीन समाज एवं वर्ण व्यस्था का उल्लेख
ग्यारहवें शिलालेख	1. धम्म विजय की विशेषताओं का वर्णन
बारहवें शिलालेख	धार्मिक सहिष्णुता का नीति का उल्लेख
तेरहवें शिलालेख	1. कलिंग युद्ध का वर्णन 2. पांच सीमांत युनानी, राजाओं के नाम।

- 'सभी मनुष्य मेरी संतान (प्रजा) है, जिस प्रकार मै अपनी संतान के लिए इहलौकिक एवं पारलौकिक कल्याण की कामना करता हूँ उसी प्रकार अपनी प्रजा के लिए भी।' ''प्रथम पृथक शिलालेख'' (कलिंग लेख)
- 'जैसे एक मां अपनी संतान के लिए एक कुशल धाय को सौंपकर निश्चिंत हो जाती है। उसी प्रकार मैने भी राजुकों की नियुक्ति की है।' ''प्रथम पृथक शिलालेख'' (कलिंग लेख)
- सभी पंथों के मध्य आत्मनियंत्रण और मन की पवित्रता होनी चाहिए। ''सातवें शिलालेख''

अशोक के अभिलेख से सम्बंधित जानकारियां -

- शाहबाजगढ़ी, मानसेहरा तथा हजाराजले शिलालेख - खरोष्ठी लिपि
- तक्षशिला एवं लघमान शिलालेख - अरामेइक लिपि
- शर-ए-कुना शिलालेख - अरामेइक एवं ग्रीक लिपि
- अशोक के सभी अभिलेखों का विषय प्रशासनिक था। जबकि रूम्मनदेई अभिलेख का विषय आर्थिक है।
- कौशाम्बी तथा प्रयाग के स्तम्भों में अशोक की रानी कारुवाकी द्वारा दान दिये जाने का उल्लेख हैं इसे रानी का अभिलेख भी कहते हैं।
- सोहगौरा एवं महास्थान अभिलेख से अन्य भण्डार के विषय में जानकारी मिलती है।
- 1750 में टीफेन्थैलर ने सबसे पहले दिल्ली में अशोक के स्तम्भ का पता लगाया किन्तु अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेफ ने 1837ई. में पढ़ा।
- नेपाल की तराई से अशोक के दो अभिलेख रूम्मनदेई तथा निग्लिवा स्तम्भ लेख प्राप्त होते हैं।

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

मौर्य प्रशासन

- कौटिल्य ने राज्य सप्तांग सिद्धांत के सात अंग निर्दिष्ट किये हैं - राजा, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, सेना और मित्र।
- मौर्य काल में राजा सर्वोपरि होता था। सारी शक्तियां इसमें निहित होती थी। राजा की सहायता के लिए मंत्रिपरिषद नामक संस्था होती थी जिसमें 3-4 सदस्य होते थे। इसका चयन आमात्य वर्ग में से किया जाता था।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राजकाज चलाने के लिए अधिकारियों का वर्णन है जिसे तीर्थ कहा जाता था इनकी संख्या 18 है। तीर्थ में युवराज भी होते थे। अधिकारियों को 60 पण से 48000 पण तक वेतन दिया जाता था।
- तीर्थ के अधीन कार्य करने वाले को अध्यक्ष कहा जाता था। अर्थशास्त्र में अध्यक्षों की संख्या 27 मिलती है।
- मौर्य काल में शासन व्यवस्था को सुदृढता प्रदान करने के लिए इसे प्रांतों में बांटा गया था। मौर्य साम्राज्य को 5 भागों में विभाजित किया गया था।

1. **उत्तरापथ जिसकी राजधानी तक्षशिला थी**
2. **दक्षिणापथ जिसकी राजधानी सुवर्णगिरी थी**
3. **कलिंग जिसकी राजधानी तोसाली थी**
4. **अवन्ति जिसकी राजधानी उज्जैन थी**
5. **प्राची या मध्यप्रदेश जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी**

- प्रांतों के शासन चलाने के लिए प्रांतपति की नियुक्ति केन्द्र द्वारा की जाती थी। कभी-कभी प्रांत के लोगों को भी इस पद पर नियुक्त कर दिया जाता था।
- प्रांतों का विभाजन जिला में होता था जिसे अहार या विषय कहा जाता था। इसका प्रधान विषयपति होता था। शासन की सबसे छोटी ईकाई गांव थी।
- शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए अर्थशास्त्र में रक्षिन अर्थात पुलिस की चर्चा है। गुप्तचर भी होते थे यह दो प्रकार के थे-

1. **संस्था:-** ये स्थायी जासूस होते थे।
2. **संचरा:-** एक जगह से दूसरे जगह घुमने वाले गुप्तचर थे।

- नगर प्रशासन की देखरेख के लिए नागरक नामक अधिकारी होते थे मेगास्थनीज ने इन अधिकारियों को एंग्रोनोमाई, एरिस्टोनोमाई कहा है। नगर प्रबंधन के लिए 6 समितियां थी जिसमें 5-5 सदस्य होते थे।

न्याय व्यवस्था के लिए दो तरह की अदालते होती थी-

1. **धर्मस्थीय:-** यह दीवानी अदालते होती थी।
2. **कंटक शोधन:-** यह फौजदारी अदालत थी।

- मौर्यो के पास विशाल सेना थी। इनकी संख्या 6 लाख थी।
- मौर्य काल में कर के रूप में 1/6 भाग लिया जाता था।

मौर्यकालीन उच्चाधिकारी -

समाहर्ता	राजस्व विभाग का प्रधान
प्रदेष्टा	फौजदारी न्यायालय का न्यायाधीश
लवणाध्यक्ष	नमक का अधिकारी
गणिकाध्यक्ष	वेश्याओं का अधिकारी
पौतवाध्यक्ष	माप-तौल का अध्यक्ष
सीताध्यक्ष	राजकीय कृषि विभाग का अध्यक्ष
मुद्राध्यक्ष	पासपोर्ट विभाग
लक्षणाध्यक्ष	मुद्रा तथा टकसाल का अध्यक्ष
दुर्गपाल	राजकीय दुर्ग रक्षकों का अध्यक्ष
कर्मान्तिक	उद्योगों एवं कारखानों का अध्यक्ष
एग्रोनोमोई	मार्ग निर्माण का एक विशेष अधिकारी
एण्टीनोमोई	नगर आयुक्त

- जस्टिन चन्द्रगुप्त की सेना को **'डाकूओं का गिरोह'** कहता है।
- कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में कृष्ट (जुती हुई), अकृष्ट (बिना जुती हुई), स्थल (ऊंची) आदि अनेक प्रकार की भूमियों का वर्णन किया है।
- **आदेवमातृक** वह भूमि होती थी। जिसमें बिना वर्षा की अच्छी खेती होती थी।
- राजकीय भूमि की व्यवस्था करने वाला प्रधान अधिकारी सीताध्यक्ष कहलाता था।
- भूमि पर राजा का स्वामित्व होता था। इसका उल्लेख मेगस्थनीज, एरियन, स्ट्रैबो ने किया है।
- **सीता** राजकीय भूमि से होने वाली आय।
- **भाग** कृषकों द्वारा उत्पादित सामग्री से प्राप्त कर (उपज का हिस्सा)
- **प्रवेश्य** आयात कर (20 प्रतिशत)
- प्रणय आपातकालीन कर
- **बलि** एक प्रकार का भूराजस्व
- **हिरण्य** यह अनाज के रूप में न होकर नकद लिया जाता था।
- **सेतुबंध** राज्य की ओर से सिंचाई का प्रबन्ध करना सेतुबंध कहलाता था
- **विष्टी** मौर्य काल में नि:शुल्क श्रम एवं बेगार को विष्टी कहते हैं।
- सिंचाई की ओर प्रशासन विशेष ध्यान देता था। जूनागढ़ अभिलेख से चन्द्रगुप्त के गवर्नर पुष्यगुप्त वैश्य द्वारा सौराष्ट्र निर्मित सुदर्शन झील का उल्लेख मिलता है।
- **कार्षापण या धरण या पण** - यह चांदी का बना होता था।
- **माषक** - यह तांबे का सिक्का होता था।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

- **काकणी** – यह तांबे के छोटे सिक्के होते थे।
- **मयुर** – पर्वत ओर अर्द्धचन्द्र छाप वाली आहत रजत मुद्राएं मौर्य साम्राज्य की मान्य मुद्राएं थी।
- भाब्रू अभिलेख अशोक का सबसे स्तम्भ लेख है।
- **'उदकभाग'** मौर्य काल में वसूल किया जाने वाला सिंचाई कर था।
- **'रूम्मिनदेई अभिलेख'** से विदित होता है लुम्बिनी यात्रा के अवसर पर अशोक ने वहां भूमिकर की दर 1/6 से घटाकर 1/8 कर दिया।
- अशोक ने बराबर की पहाड़ियों तथा उसके पुत्र दशरथ ने नागार्जुनी पहाड़ियों में आजीविकों को गुफाएं प्रदान की।
- मौर्य काल में पूर्वी तट पर ताम्रलिप्ति नामक बंदरगाह और पश्चिमी तट पर भृगुकच्छ एवं सोपोरा महत्वपूर्ण बंदरगाह थे।

मौर्यात्तर काल

- इस काल में दो तरह के राजवंशों का उद्भव होता है।

देशी

- इसमें शुंग वंश, कण्व वंश, वाकाटक वंश, सात-वाहन प्रमुख है।

विदेशी

- इसमें इण्डोग्रीक, पार्थियाई, शक, कुषाण प्रमुख है।

शुंग वंश

- मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ की हत्या उसके ही ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने कर दी और शुंग वंश की स्थापना की। इस वंश का कार्यकाल 185 BC से 73 BC रहा।
- शुंग शासकों ने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र से विदिशा (बेसनगर) स्थानांतरित कर ली। अन्य प्रमुख नगर में अयोध्या तथा जालंधर प्रमुख थे।
- पुष्यमित्र ने दो अश्वमेघ यज्ञ किए। पुष्यमित्र ने सिर्फ सेनानी अर्थात् सेनापति की उपाधि का ही प्रयोग किया।
- पुष्यमित्र के समय सबसे महत्त्वपूर्ण घटना भारत पर यवनों का आक्रमण था इस आक्रमण का नेता डेमेट्रियस था। इस आक्रमण को पुष्यमित्र का पौत्र वसुमित्र ने विफल कर दिया दुसरा यवन आक्रमण मीनान्दर के नेतृत्व में हुआ जिसे शुंग शासकों ने विफल कर दिया।
- पतंजलि पुष्यमित्र के पुरोहित थे जिसने महाभाष्य की रचना की।
- पुष्यमित्र शुंग ने पाटलिपुत्र में स्थित कुकुटाराम बिहार को तीन बार नष्ट करने का प्रयास किया परन्तु असफल रहा।
- इस वंश का नवां शासक भागवत अथवा भागभद्र था जिसके शासन काल के 14 वें वर्ष में यवन नरेश एन्टियालकडिस का दूत हेलियोडोरस भारत शुंग शासक के विदिशा स्थित दरबार में आया और भागवत धर्म ग्रहण कर लिया। विदिशा या वेसनगर में गरुड़ स्तम्भ की स्थापना कर भगवान विष्णु की पूजा अर्चना की।
- इस वंश का दसवां या अंतिम शासक देवभूति था। वासुदेव ने इसकी हत्या कर कण्व वंश की स्थापना की।
- शुंग शासक भागवत धर्म को मानते थे लेकिन बौद्ध धर्म के प्रति आदर करते थे भोपाल के पास सांची में तीन स्तूप का निर्माण करवाया।

कण्व वंश

- कण्व वंश की स्थापना वसुमित्र के द्वारा किया गया। इस वंश का शासन काल 73-28 BC रहा इस वंश का अंतिम शासक सुशर्मा था। इस वंश के समय मगध साम्राज्य बिहार एवं पूर्वी उत्तरी प्रदेश के कुछ छोटे भागों में सिमट गया।

सातवाहन राजवंश

- विन्ध्य पर्वत के दक्षिण उत्तरी दक्कन के सातवाहन प्रमुख थे यह तीन सौ वर्षो तक शासन किए परन्तु किसी न किसी रूप में चार सौ वर्षो तक राज्य किया।
- नानाघाट अभिलेख के अनुसार इस वंश का संस्थापक **सिमुक** था। सातवाहनों ने अपना केन्द्र दक्कन में प्रतिष्ठान या पैठन को बनाया।
- इस वंश का इतिहास जानने के लिए महाराष्ट्र के पूना जिला में स्थित नागनिका के **नानाघाट अभिलेख, वाशिष्ठीपुत्र पुलुमावी के नासिक** एवं **कार्ले गुहालेख** प्रमुख है।
- इस वंश का सबसे पहला महत्वपूर्ण शासक श्री शातकर्णि था। यह शातकर्णि प्रथम के नाम से जाना जाता है। इस वंश को शातकर्णि की उपाधि धारण करने वाला प्रथम राजा था।
- शातकर्णि प्रथम ने दो अश्वमेघ यज्ञ किये। राजसूय यज्ञ कर उसने राजा की उपाधि धारण की।
- शातकर्णि प्रथम शासक था जिसने सातवाहन राजवंश को सार्वभौम स्थिति में ला दिया।
- सातवाहन वंश के एक शासक हाल ने गाथासप्तशती नामक ग्रन्थ की रचना की जो प्राकृत भाषा में थी।
- इस वंश का 23 वां शासक गौतमीपुत्र शातकर्णि था जिसने सातवाहन वंश की खोई हुई प्रतिष्ठा को फिर से हासिल किया। इसने वेणकटक नामक नगर बसाया।
- वशिष्ठी पुत्र पुलुमावी के शासन काल में सातवाहन साम्राज्य अमरावती तक फैल गया। यह अकेला राजा था जिसका लेख अमरावती से मिलता है। इसने अवनगर नामक नगर की स्थापना की।
- इस काल के कला स्थापत्य में अमरावती के उत्तर में स्थित नागार्जुन पहाड़ी से तीसरी सदी में स्तूप निर्माण हुआ जिसे नागार्जुन कोण्ड स्तूप कहा जाता है। पर्वतों को काटकर चैत्य एवं विहारों का निर्माण हुआ। अजन्ता का चैत्य कृष्ण के समय बना था।
- सातवाहन शासकों ने सीसे के सिक्के चलाए। इन सिक्कों पर पतवार वाले समुद्री जहाजों के चित्र अंकित हैं।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

कालिंग का चेदि राजवंश

- कालिंग के चेदि राजवंश का संस्थापक महामेघवाहन था।
- इस वंश का इतिहास उदयगिरि पर्वत पर स्थित हाथीगुम्फा अभिलेख से पता चलता है जो भुवनेश्वर से 5 मील दूर स्थित हैं।
- इस वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक खारबेल था। खारबेल ने अपने शासन के 5वें वर्ष राजधानी में नहर का निर्माण करवाया। खारबेल ने पुष्यमित्र शुंग को पराजित कर वहां से जिन की मूर्ति को उठा लिया जिसे नंद शासक उठा ले गए थे। खारबेल द्वारा निर्मित हाथी गुम्फा अभिलेख प्रसिद्ध है।

वाकाटक राजवंश

- सातवाहनों के बाद वकाटकों का आगमन हुआ। इसका काल तीसरी शताब्दी के अंत से छठी शताब्दी के मध्य तक माना जाता है। वाकाटक विष्णुवृद्धि गोत्र के ब्राह्मण थे।
- वाकाटक राज्य का संस्थापक विन्ध्य शक्ति को माना जाता है। इसने इस वंश की स्थापना 255 ई. में की। यह सातवाहनों के सामंत थे। इसे वंशकेतु कहा जाता है।
- प्रवेरसेन प्रथम इस वंश का पहला राजा था। जिसने सम्राट की उपाधि धारण की। अपने सैनिक सफलता से प्रभावित होकर इसने चार अश्वमेघ यज्ञ किए।
- इसके बाद वकाटक दो शाखाओं में विभक्त हो गया। नागपुर शाखा तथा बरार शाखा। नागपुर शाखा गौतमीपुत्र के नेतृत्व में और बरार शाखा सर्वसेन के नेतृत्व में आगे बढ़ा। नागपुर शाखा को ही प्रधान शाखा के रूप में जाना जाता है।
- नागपुर शाखा के रूद्रसेन द्वितीय के साथ गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्ता का विवाह किया था। इससे रूद्रसेन द्वितीय शैव से वैष्णव हो गया। रूद्रसेन द्वितीय की मृत्यु के वाद प्रभावती गुप्ता अपने अव्यस्कपुत्र की संरक्षिका बनी और वाकाटक साम्राज्य अप्रत्यक्ष रूप से गुप्त शासक के अधीन आ गया।
- वाकाटक शासक रूद्रसेन II ने सेतुबंध नामक काव्य की रचना संस्कृत में की।
- वाकाटकों के शासन काल में अजन्ता के गुफा नं० 9, 10 में भित्ति चित्रों का निर्माण किया गया।

हिन्द यवन या इन्डो ग्रीक

- इसका केन्द्र बैक्ट्रिया था जिसकी स्थापना सिकन्दर ने की थी।
- बैक्ट्रिया में स्वतंत्र यूनानी साम्राज्य की स्थापना डोयोडोटस ने की। इसी वंश के डेमेट्रियस ने भारत विजय किया।
- भारत में एक ही समय दो यूनानी वंश शासन कर रहे थे।

1. पहले डेमेट्रियस का वंश पूर्वी पंजाव और सिंघ के क्षेत्र पर राज्य किया जिसकी राजधानी शाकल थी।
2. दूसरी युक्रेटाइट्स का वंश जो बैक्ट्रियां से काबुल घाटी तक था। इसकी राजधानी तक्षशिला थी।

- पहले वंश डेमेट्रियस का सबसे महत्त्वपूर्ण शासक मीनान्डर था इसे नागसेन नामक बौद्ध भिक्षु ने बौद्ध धर्म की दीक्षा दी।
- हिन्द यूनानी शासकों ने सबसे पहले स्वर्ण के सिक्के जारी किए।
- हिन्द यूनानी शासकों में सबसे पहले लेखयुक्त सिक्के जारी किए।

हिन्द पार्थियाई या पहलव

- पहलव वंश पार्सियां के निवासी थे। इस वंश का वास्तविक संस्थापक मिथ्रेडेटस था।
- भारत पर आक्रमण करने वाले पहला पार्थियाई शासक माउस था जिसने 90-70 BC तक शासन किया।
- पहलव नरेशो में सर्वाधिक शक्तिशाली गोन्डोफर्नीज था जिसका शासन काल 20-41 ई. था। इसी के शासन काल में पहला ईसाई पादरी भारत आया था। इसके सिक्के पंजाब, सिंध, काबुल, कंधार से मिले है।
- इसकी राजधानी तक्षशिला थी। इस राज्य का अपहरण कुषाण द्वारा किया गया।

शक शासक

- यूनानियों के बाद शकों का आगमन हुआ था। पंतजलि, मनु इत्यादि ने भी शकों का उल्लेख किया है। शक शासक स्वयं को क्षत्रप कहते थे। शकों की 5 शाखाएं थी।

(1) अफगानिस्तान
(2) पंजाब (राजधानी तक्षशिला)
(3) मथुरा
(4) कश्मीर
(5) उत्तरी दक्कन।

- शक मुख्यत: सीरदरया के उत्तर में निवास करने वाले बर्बर जाति के थे।
- तक्षशिला के सर्वप्रथम शक शासकों में मथुरा के शक शासक राजुल का नाम मिलता है।
- उत्तरी दक्कन के इतिहास में शक सबसे महत्त्वपूर्ण थे। इनका केन्द्र नासिक एवं उज्जैन था। नासिक के क्षत्रप क्षहरात कहलाते थे। उज्जैन के क्षत्रप कार्दमक कहलाते थे। नासिक के क्षहरात वंश का पहला शासक भुमक था। कार्दमक शासकों में चष्टन प्रमुख था।
- कार्दमक शासकों में सबसे महत्त्वपूर्ण शासक रुद्रदामन था। इसका शासन काल 130-150 ई. था। इसने 150 ई. में जुनागढ़ अभिलेख लिखवाया जो संस्कृत भाषा में लिखा हुआ पहला अभिलेख माना जाता है।
- रुद्रदामन ने अपनी निजी आय से सुदर्शन झील की मरम्मत करवाई।

कुषाण राजवंश

- कुषाणों का मूल निवास स्थान चीन का सीमावर्ती प्रदेश

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

निगसिया था। हुणों से पराजित होकर सीरदरया आए फिर बैक्ट्रिया पर अधिकार कर लिया।

- कुषाणों का आगमन शकों के बाद हुआ। कुषाण यूची कबीले से संबंधित थे।
- भारत में कुषाण वंश का संस्थापक कुजुल कडफिसेस था। इसने भारत के पश्चिमोत्तर भाग पर अधिकार कर लिया। इसने कोई राजकीय उपाधि धारण नहीं की।
- कुजुल के बाद विम कडफिसेस शासक बना।
- 78 ई. में कुषाण वंश का महानत्तम शासक कनिष्क गद्दी पर बैठा। इसके सिहांसनारोहण के वर्ष 78 ई. को शक संवत के नाम से जानते है।
- इसकी महत्वपूर्ण विजयों में पाटलिपुत्र सबसे महत्त्वपूर्ण था। राजा को परास्त कर हर्जाने के रूप में बड़ी रकम मांगी। बदले में अश्वघोष लेखक, बुद्ध के भिक्षापात्र और एक अद्भुत मुर्गी पायी।
- कनिष्क की राजधानी पुरूषपुर थी। इसी के शासन काल में चौथी बौद्ध संगिति का आयोजन कश्मीर में वसुमित्र की अध्यक्षता में हुई। अश्वघोष इसके उपाध्यक्ष थे।
- कश्मीर में कनिष्क ने एक नगर कनिष्कपुर बसाया था।
- कनिष्क में शाक्य मुनि के धर्म के महायान शाखा को प्रश्रय दिया।
- कनिष्क के दरबार में अश्वघोष, वसुमित्र, नागार्जुन, चरक, पार्श्व आदि विद्वान रहते थे। अश्वघोष ने बुद्धचरितम् और सौन्दरानंद नामक महाकाव्य की रचना की।
- नागार्जुन एक महान दार्शनिक थे। उन्होंने माध्यमिक दर्शन (शून्यवाद) का प्रतिपादन किया तथा 'माध्यमिक कारिका' नामक ग्रन्थ लिखा।

  चरक एक चिकित्सक थे। इनका ग्रन्थ 'चरक संहिता' के नाम से प्रसिद्ध है।
- कनिष्क ने अपनी राजधानी में 400 फीट ऊँचा एवं 13 मंजिल का एक टावर बनवाया।

गुप्त काल

- कुषाण साम्राज्य के खण्डहर पर गुप्त साम्राज्य का उद्भव हुआ यह मौर्य साम्राज्य के बराबर तो नहीं था फिर भी उसने उत्तर भारत में 319 ई. से 555 ई. तक राजनीतिक एकता स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। इस वंश का संस्थापक एवं पहला शासक श्री गुप्त था। और दूसरा शासक घटोत्कच था। इन्होंने सिर्फ महाराज की उपाधि धारण की।

चन्द्रगुप्त

- गुप्त वंश का यह पहला राजा है जिसने महाराजधिराज का उपाधि धारण की। इसे गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक भी माना जाता है। इसका शासन काल 319 ई. से 334 ई. रहा। 319 ई. को गुप्त संवत के नाम से जाना जाता है। इसने लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया।
- सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त ने ही चांदी की मुद्राओं का प्रचलन कराया।

समुद्रगुप्त

- चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद समुद्रगुप्त शासक बना। इसका शासन काल 335-380 ई. तक रहा। इसे **भारत का नेपोलियन** कहा जाता है। समुद्रगुप्त के मंत्री हरिषेण ने प्रयाग के अशोक अभिलेख पर ही समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति की रचना की है।
- समुद्रगुप्त की विजयों का उल्लेख प्रयाग प्रशस्ति में है। इसे 5 भागों में बांटा जाता है प्रथम चरण में गंगा यमुना के दोआब क्षेत्र, दूसरे चरण में पूर्वी हिमालय और उसके सीमाबर्ती क्षेत्र, तृतीय चरण में आटविक राज्यों को, चतुर्थ चरण में दक्षिण भारत के 12 शासकों को पराजित किया। 5वें चरण में कुछ विदेश राज्यों शक एवं कुषाणों को पराजित किया।
- समुद्रगुप्त की मृत्यु के बाद रामगुप्त नामक एक अयोग्य उत्तराधिकारी गद्दी पर बैठा। यवनों के आक्रमण से भयभीत होकर रामगुप्त ने अपनी पत्नी ध्रुवदेवी को यवनों को सौंपने को तैयार हो गया लेकिन इसका छोटा भाई चन्द्रगुप्त द्वितीय ने यवनों से साम्राज्य की रक्षा ही नहीं की बल्कि यवन नरेश का वध कर दिया।
- समुन्द्र गुप्त ने बौद्ध भिक्षु वसुवंधु को संरक्षण दिया।

चन्द्रगुप्त द्वितीय

- अपने भाई रामगुप्त की हत्या कर गद्दी पर बैठा। इसका शासन काल 380-412 ई. रहा। इसने ध्रुवदेवी से शादी भी कर ली। इसकी दूसरी शादी नागवंशी कन्या कुबेरनाग से हुयी थी जिससे प्रभावती गुप्त का जन्म हुआ। प्रभावती की शादी वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय से हुयी।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय की प्रमुख विजय शकों के विरूद्ध थी। गुजरात के शक विजय के बाद इसने चाँदी का सिक्का जारी किया और उज्जैन को दूसरी राजधानी बनाया। इसने विक्रमादित्य की उपाधि भी धारण की।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने कुतुबमीनार के नजदीक मेहरौली में लौह स्तम्भ का निर्माण करवाया।
- प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान 399 ई. में चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार में आया और 414 ई. तक रहा। यह 14 वर्ष तक भारत में रहा। चन्द्रगुप्त द्वितीय की विजयों का उल्लेख उदयगिरि गुहालेख से होता है।
- इसके समय में पाटलिपुत्र एवं उज्जैनी विद्या के प्रमुख केन्द्र थे। उज्जैनी इसकी दुसरी राजधानी थी।
- इसके दरबार में नौ विद्वानों की मंडली रहती थी जिनको नौरत्न कहा गया। इनमें कालिदास, धनवंतरि, क्षपणक, अमर सिंह, शंकु, वैतालभट्ट, घटकपर्र, वाराहमिहिर और वरूरूचि

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

शामिल थे।

कुमारगुप्त

- चन्द्रगुप्त द्वितीय के बाद कुमारगुप्त शासक बना इसके समय में गुप्त साम्राज्य पर पुष्यमित्रों का आक्रमण हुआ जिसे इसने असफल कर दिया था। इसी के शासन काल में नालन्दा में बौद्धविहार की स्थापना हुई जो कालान्तर में नालन्दा विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- कुमारगुप्त के शासन की प्रथम तिथि उसके विलसड़ अभिलेख से ज्ञात होती है। इस अभिलेख से गुप्तों की पूरी वंशावली प्राप्त होती है।
- गुप्त शासकों में सर्वाधिक अभिलेख कुमारगुप्त के हैं।
- कुमारगुप्त के सुव्यवस्थित शासन का वर्णन उसके मंदसौर अभिलेख से मिलता है। यह अभिलेख एक प्रशस्ति के रूप में है। जिसकी रचना वत्सभट्टि ने की थी।
- कुमार गुप्त के शासनकाल में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी। इस विश्वविद्यालय को आक्सफोर्ड ऑफ महायान बौद्ध कहा जाता है।

स्कंदगुप्त

- कुमारगुप्त के बाद स्कंदगुप्त गुप्त साम्राज्य का शासक बना। इसके समय में गुप्त साम्राज्य पर हुणों का आक्रमण हुआ जिसे इसने असफल कर दिया।
- जूनागढ़ अभिलेख से पता चलता हैं कि इसने सुदर्शन झील का पुनःरुद्धार करवाया।
- स्कन्दगुप्त के शासनकाल में हूणों का आक्रमण प्रारंभ हुआ। हूणों पर स्कन्दगुप्त की सफलता का गुणगान जूनागढ़ अभिलेख में मिलता है। चन्द्रगर्भ परिपृच्छ नामक ग्रंथ में कुमारगुप्त प्रथम के द्वारा विदेशियों पर विजय प्राप्त करने का साहित्यिक प्रमाण उपलब्ध है।
- स्कन्दगुप्त को कहौम अभिलेख में ''शक्रादित्य'', आर्यमंजु श्रीमूलकल्प में देवराय तथा जूनागढ़ अभिलेख में ''श्रीपरिक्षिप्तवक्ष'' कहा गया है।
- स्कन्दगुप्त ने 466ई. में चीनी सांग सम्राट के दरबार में राजदूत भेजे।
- प्रशासनिक सुविधा के लिए स्कन्दगुप्त ने अपनी राजधानी को अयोध्या स्थानान्तरित किया।

अन्य शासक

- स्कंद गुप्त के बाद गुप्त साम्राज्य का पतन शुरू हो गया नरसिंह गुप्त के समय गुप्त साम्राज्य तीन भागों में बंट गया। मगध के केन्द्रीय भाग पर नरसिंह गुप्त का शासन रहा। मालवा क्षेत्र पर भानुगुप्त तथा बंगाल क्षेत्र में वैन्यगुप्त ने शासन स्थापित किया। नरसिंह गुप्त की सबसे बड़ी सफलता हुण शासक मिहिरकुल को पराजित करना था।

अधिकारी	विभाग
महाबलाधिकृत	सेना का सेनापति
महादण्डनायक	न्यायाधीश
संधि विग्रहिक	युद्ध मंत्री
दण्डपाशिक	पुलिस विभाग का सर्वोच्च अधिकारी
विनयस्थिति संस्थापक	शिक्षा का अधिकारी
भण्डाराधाकृत	राजकोष का अधिकारी
महापक्षपटलिक	लेखा विभाग का अधिकारी
युक्त पुरुष	युद्ध में प्राप्त तथा हस्तगत की गई सम्पत्ति का लेखा-जोखा करने वाला अधिकारी
महाप्रतिहार	राजप्रासाद से सम्बंधित विषयों की देखरेख करने वाला अधिकारी

प्रान्तीय प्रशासन

- शासकीय सुविधा के लिए राज्य को विभिन्न प्रान्तों में विभाजित किया गया था। इन प्रान्तों को भुक्ति कहा जाता था।
- प्रान्तीय शासकों की नियुक्ति सम्राट के द्वारा की जाती थी। इन्हीं उपरीक, गोप्ता तथा भोगपति कहा जाता था।
- गुप्त प्रशासन में स्थानीय शासन दो भागों में विभक्त था 1. नगर प्रशासन 2. ग्राम प्रशासन। नगर प्रशासन के प्रमुख अधिकारी को पुरपाल, नगर रक्षक या द्रांगिक कहा जाता था। नगर परिषद के प्रमुख को नगरपति कहा जाता था।
- भुक्तियों का विभाजन अनेक जिलों में किया गया था। इन जिलों को विषय कहा जाता था। विषय का सर्वोच्च अधिकारी विषयपति होता था। विषयपति की नियुक्ति उपरिक द्वारा की जाती थी। विषयपति का प्रधान कार्यालय अधिस्थान कहलाता था।
- प्रत्येक विषय के अंतर्गत कई ग्राम होते थे। ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी। उसका सर्वोच्च अधिकारी ग्रामीक या महत्तर होता था।

राजस्व के स्रोत

- गुप्तकाल में सामान्यतः भूमि पर सम्राट का स्वामित्व माना जाता था। वह भूमि से उत्पन्न उत्पादन का 1/6 भाग का अधिकारी था। इस प्रकार के कर को भाग कहा जाता था।
- कुछ प्रमुख करों के नाम निम्न हैं –

भाग – भूमि उपज का 1/6 भाग

भोग – राजा को प्रतिदिन दी जाने वाली फल-फूल एवं सब्जी की भेंट।

उद्रंग –एक प्रकार का भूमिकर।

उपरिकर – एक प्रकार का भूमिकर।

भूतावात प्रत्याय – विदेशी वस्तुओं के आयात पर लगाने वाला कर।

शुल्क – सीमा, बिक्री की वस्तुओं पर लगने वाला कर।

करों की अदायगी दो रूपों हिरण्य (नकद) तथा मेय (अन्न) के रूप में की जाती थी।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

- इसके अतिरिक्त वणिकों एवं शिल्पियों पर राजकर लगाया जाता था। इन्हें कर के रूप में बेगार देना पड़ता था।

सामाजिक जीवन

- याज्ञवल्क्य ने शुद्रों को व्यापारी, कारीगर तथा कृषक होने की अनुमति दी है।
- नरसिंह पुराण में कृषि को शुद्रों का कर्तव्य बताया गया है।
- मार्कण्डेय पुराण में यज्ञ करना शुद्रों का अधिकार बताया गया है।
- कायस्थों का सर्वप्रथम उल्लेख याज्ञवल्क्य ने किया है। उनका प्रधान कार्य केवल लेखकीय ही नही होता था बल्कि वे गणना, आय-व्यय एवं भूमिकर के अधिकारी भी होते थे।
- गुप्तकाल में वर्ण परिवर्तन करने की अनुमति थी।
- गुप्तकाल में दासप्रथा विद्यमान थी। नारद ने 15 प्रकार के दासों का उल्लेख किया है। जबकि मनु ने 7 प्रकार के दासों का उल्लेख किया है।

आर्थिक जीवन

- आर्थिक उपयोगिता की दृष्टि से भूमि के कई प्रकार बताये गये हैं। 1. **क्षेत्र** - खेती के लिए उपयुक्त भूमि 2. **वास्तु** - वास करने योग्य भूमि। 3. **खिल** - वह भूमि जो जोती नही जाती थी। 4. **अप्रहत** - बिना जोती गई जंगली भूमि 5. **चारागाह** - पशुओं के चारा योग्य भूमि।
- सिंचाई का सर्वोत्तम उदाहरण स्कन्दगुप्त का जूनागढ़ अभिलेख है।
- वस्त्र का निर्माण गुप्तकाल का प्रमुख उद्योग था।

स्थान	व्यापारियों की श्रेणी
इंदौर	तैलियों की श्रेणी
विदिशा	हाथी दांत के कारीगर
उज्जैयनी	अनाज व्यापारी
नासिक	बुनकर
मंदसौर	रेशम बुनकर
मथुरा	आटा पिसने वाले कारीगर
कौशाम्बी	गंधिक

श्रेष्ठि कुलिक निगम	श्रेष्ठियों, हस्तशिल्पियों एवं श्रेणियों का केन्द्रिय निगम या संघ
पूग	विभिन्न जातियों के व्यापारियों का समूह
श्रेणी	एक ही जाति के व्यापारियों का समूह
निगम	एक ही नगर के निवासियों का समूह

- व्यापारियों के समूह को **सार्थ** तथा उनके नेताओं को **सार्थवाह** कहा जाता था।
- सोने के सिक्कों को गुप्त अभिलेखों में **दीनार** कहा गया है।
- जहां तक चांदी के सिक्कों का प्रश्न है, वे सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त द्वितीय की शकों के विरूद्ध विजय के पश्चात प्रारंभ हो गये थे।
- विदेशों को निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मसाला था।
- इस समय बंगाल में ताम्रलिप्ति प्रमुख बंदरगाह था। जहां से चीन, लंका, जावा, सुमात्र आदि देशों के साथ व्यापार होता था। पश्चिमी भारत का प्रमुख बंदरगाह भृगुकच्छ था जहां से पश्चिमी देशों के साथ समुद्री व्यापार होता था।

कला एवं साहित्य

- कला एवं साहित्य के विकास की दृष्टि से गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का **स्वर्णयुग** कहा गया है।
- गुप्तकाल में ही मंदिर निर्माण कला का जन्म हुआ। देवगढ़ का दशावतार मंदिर भारतीय मंदिर निर्माण में **शिखर** का संभवतः पहला उदाहरण है। शिखरयुक्त मंदिरों का निर्माण गुप्तकाल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इस काल के मंदिरों के निर्माण में छोटी-छोटी ईंटों तथा पत्थरों का प्रयोग किया जाता था।
- सिरपुर के लक्ष्मणमन मंदिर तथा भीतरगांव के मंदिरों में आश्चर्य जनक समानता है। जबकि गुहा मंदिरों में ब्राह्मणगुहा मंदिर और बौद्ध गुहा मंदिर महत्वपूर्ण हैं।
- ब्राह्मण गुहा मंदिर का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण उदयगिरि का मंदिर है। इसे चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के सेनापति वीरसेन ने बनया था। उदयगिरि के गुहा मंदिर में **विष्णु के वाराह अवतार** की विशाल मूर्ति स्थापित है।
- बौद्ध गुहा मंदिरों में अजन्ता तथा बाघ की गुफाएं महत्वपूर्ण हैं। अजन्ता की गुफा संख्या 16, 17 और 19 गुप्त काल के हैं। गुहाओं में सर्वाधिक प्राचीन भाजा की गुफाएं हैं।
- गंगा और यमुना की मूर्ति गुप्तकाल की देन है। गुप्तकाल की शिल्प कला का जन्म विशेषतः मथुरा शैली द्वारा स्थापित प्रतिमानों पर आधारित है।
- बाराह की वास्तविक आकृति में निर्मित मूर्ति एरण से प्राप्त हुई है। जिसका निर्माण धन्यविष्णु ने किया था।
- अजन्ता के चित्र मुख्यतः धार्मिक विषयों पर आधारित हैं। जबकि बाघ की गुफाओं का चित्र मनुष्य के लौकिक जीवन से परिचित कराता है।
- अजन्ता बौद्ध कला का उदाहरण है।

स्थान	मंदिर / स्तूप
भूमरा(नागोद)	शिव मंदिर
तिगवा (जबलपुर)	विष्णु मंदिर
देवगढ़ (झाँसी)	दशावतार मंदिर
शिरपुर	लक्ष्मण मंदिर (ईंटों का मंदिर)
उदयगिरि	विष्णु मंदिर
भीतरगांव (कानपुर)	ईंटों का मंदिर
सारनाथ	धमेख स्तूप (ईंटे का बना स्तूप
भीतरी	ईंटों का मंदिर
नालन्दा	बौद्ध विहार
(नागोद) खोह	शिव मंदिर

Downloaded From www.studymasterofficial.com

- विज्ञान के क्षेत्र में गुप्तकाल को शून्य के सिद्धान्त तथा दशमलव प्रणाली के विकास का श्रेय प्राप्त है।
- आर्य भट्ट ने सर्वप्रथम शून्यवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया कि पृथ्वी अपनी धूरी पर घूमती हुई सूर्य के चारों ओर चक्कर काटती है।
- इस काल के प्रमुख गणितज्ञ ज्योतिष विद्या में भी निपुण थे। इसमें आर्यभट्ट प्रथम, वाराहमिहिर, भाष्कर प्रथम तथा ब्रह्मगुप्त विशेष महत्व रखते थे।

पुस्तक	लेखक
ऋतु संहार	कालीदास
मेघदुत	कालीदास
कुमार संभव	कालीदास
रघुवंश	कालीदास
मालविकाग्निमित्रम्	कालीदास
अभिज्ञान शाकुन्तलम्	कालीदास
विक्रमोर्वशीयम	कालिदास
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
देवीचन्द्रगुप्तम्	विशाखदत्त
काव्यदर्शन	दण्डिन
दशकुमार चरित	दण्डिन
स्वप्नवासवत्ता	भास
चारुदत्ता	भास
अरूभंग	भास
हर्षचरित	बाण
कादम्बरी	बाण
नागानन्द	हर्ष
प्रियदर्शिका	हर्ष
रत्नावली	हर्ष
किरातार्जुनियम	भारवि
रावण वध	वत्सभट्टि
अमरकोष	अमर सिंह
चन्द्रव्याकरण	चन्द्रगोमी
विसुद्धिमग्न	बुद्धघोष
वृहत्संहिता	वराहमिहिर
पंचसिद्धांतिका	वराहमिहिर
ब्रह्म सिद्धान्त	आर्यभट्ट
आर्यभट्टियम	आर्यभट्ट
सूर्य सिद्धांत	आर्यभट्ट
न्यायावतार	सिद्धसेन
पंचतंत्र	विष्णुशर्मा
नीतिशास्त्र	कामन्दक
कामसूत्र	वात्स्यायन
चरक संहिता	चरक
मृच्छकटिकम्	शूद्रक
योगाचार	असंग

थानेश्वर के वर्द्धन वंश

- हरियाणा राज्य के करनाल जिले में स्थित थानेश्वर के राज्य की स्थापना पुष्यभूति नामक एक राजा ने छठी शताब्दी में किया और वर्द्धन वंश की स्थापना की।
- प्रभाकर वर्द्धन ने इस राज्य की स्वतंत्रता की घोषणा की एवं परम भट्टारक महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। इसकी पत्नी यशोमति से दो पुत्र (राज्य वर्द्धन एवं हर्षवर्द्धन) और एक पुत्री (राज्यश्री) का जन्म हुआ।
- इसके बाद राज्य वर्द्धन गद्दी पर बैठा इसके शासन काल में हुणों का आक्रमण हुआ।
- हर्षवर्द्धन 606 ई. में थानेश्वर की गद्दी पर बैठा। इसने 647 ई. तक शासन किया। बहन राजश्री की शादी कन्नौज के मौखरि वंश के शासक गृहवर्मा के साथ हुई थी। मालवा के शासक देवगुप्त ने कन्नौज पर चढ़ाई कर गृहवर्मा को मार दिया और राज्यश्री को बंदी बना लिया। लेकिन राज्य श्री कारागार से भागकर जंगल में सती होने चली गई। उसी समय हर्ष ने दिवाकर मित्र नामक बौद्ध भिक्षु की सहायता से राज्यश्री को खोज निकाला। इसके बाद कन्नौज अप्रत्यक्ष रूप से थानेश्वर के अधीन आ गया।
- हर्ष ने अपने प्रभुत्व से एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, लेकिन पुलकेशीन द्वितीय के साथ युद्ध में हर्ष पराजित हो गया था।
- बंगाल का शासक शशांक जिसने बोधिगया के बोधिवृक्ष को कटवाकर गंगा में फेंकवा दिया था। हर्ष का संघर्ष हुआ 619 ई. में शशांक की मृत्यु के बाद बंगाल पर अधिकार कर लिया।
- हर्ष ने कश्मीर में राजा के लिए एक राज्योचित पोशाक का प्रचलन करवाया।
- हर्ष स्वयं विद्वान था और विद्वानों को संरक्षण प्रदान करता था। हर्ष ने स्वयं प्रियदर्शिका, रत्नावली एवं नागनन्द की रचना की। बाणभट्ट इसके दरबारी कवि थे जिसने हर्ष चरितम् एवं कादम्बरी की रचना की।
- हर्ष के पूर्वज शिव एवं सूर्य की आराधना करते थे। हर्ष ने महायान शाखा को राज्याश्रय प्रदान किया। हर्ष के समय प्रयाग में प्रति 5 वर्ष बाद एक समारोह का आयोजन होता था। ह्वेनसांग छठा समारोह में सम्मिलित हुआ था।
- हर्ष के दरबार में मयूर तथा मातंग दिवाकर नामक कवि रहते थे।
- हर्ष के दरबार में चीनी यात्री ह्वेनसांग 629 ई. में आया था। इसने नालन्दा विश्वविद्यालय में 1½ वर्ष रहकर योगशास्त्र की शिक्षा ग्रहण की। ह्वेनसांग 15 वर्ष तक भारत में रहा।

पूर्व मध्य काल की स्थापत्य कला

- भौगोलिक आधार पर शास्त्रकारों ने इनकी तीन शैलियां निर्धारित की है। **नागर, द्रविड, बेसर**
- नागर शैली उत्तरी भारत में हिमालय से विन्ध्य प्रदेश के

Downloaded From www.studymasterofficial.com

भू-भाग में, द्रविड़ शैली कृष्णा तथा कुमारी अन्तरीप के बीच और बेसर शैली विन्ध्य और कृष्णा के बीच प्रसारित थी।

- नागर शैली के मंदिर चतुष्कोणीय होती हैं, द्रविड़ शैली के मंदिरों का आकार अष्टभुज और बेसर शैली के मंदिर अर्द्धगोलाकार होते हैं।
- नागर शैली के मंदिरों के शिखरों में खड़ी रेखा की प्रधानता होने के कारण इसे रेखीय शिखर भी कहते है।
- द्रविड़ शैली के मंदिर आयताकार तथा शिखर पिरामिड के आकार का होता है। गर्भगृह के चारों ओर वर्गाकार छत से ढ़का हुआ बाड़ा होता है। जिसे प्रदक्षिणा पथ कहते हैं।
- बेसर शैली के मंदिरों में देवुल गर्भगृह और सभा मंडप होता है।
- उड़ीसा के मंदिर शुद्ध नागर शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं। लिंगराज मंदिर पूर्व विकसित नागर शैली का सर्वोत्तम उदाहरण है। पूरी का जगन्नाथ मंदिर भी इसी शैली में निर्मित है।
- भारतीय राजाओं और पूर्वी वास्तुकला की महान उपलब्धि कोणार्क का सूर्य मंदिर है।
- खजुराहों के मंदिर चन्देल राजाओं के द्वारा 950-1050ई. के मध्य बनवाये गये।
- गुजरात में अधिकांश मंदिर सोलंकी राजाओं के काल में बने हैं। पश्चिम भारत के अधिकांश मंदिर भग्नावशेष में हैं। इसमें से प्रसिद्ध मंदिर मोढ़ेरा का सूर्य मंदिर है। दिलवाड़ा का जैन मंदिर सफेद संगमरमर से निर्मित है।
- शिला वास्तुकला की अंतिम अभिव्यक्ति एलोरा, एलिफेंटा तथा महाबलीपुरम् में पायी जाती है।
- **ऐलोरा** - यहां के मंदिर बौद्ध शिला विहारों का अनुकरण करते हैं। दशावतार मंदिर पहले के बौद्ध विहारों की भांति है। ऐलारा का कैलाश मंदिर राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण प्रथम ने बनवाया था।
- द्रविड शैली के मंदिर पल्लव नरेशों के शासनकाल में निर्मित हुआ।
- मामल्ल शैली का विकास पल्लव नरेश नरसिंह वर्मन के समय में हुआ। इस शैली के अन्तर्गत दो प्रकार के मंदिर आते हैं- मंडप तथा रथ। मामल्य शैली के रथ सप्तपैगोडा के नाम से विख्यात हैं। इनकी संख्या 8 है।

मंदिर	स्थापत्य शैली	निर्माणकर्ता
लिंगराज मंदिर	नागर शैली	- - -
पुरी का जगन्नाथ मंदिर	नागर शैली	अनन्तवर्मा चोदगंग
कोणार्क का सूर्य मंदिर	नागर शैली	नरसिंहदेव (गंगवंश)
खजुराहो के मंदिर	नागर शैली	चंदेल वंश
कंदरिया महादेव मंदिर	नागर शैली	धंगदेव चंदेल
मोढ़ेरा का सूर्य मंदिर	नागर शैली	- - -
दिलवाड़ा का जैन मंदिर	नागर शैली	राष्ट्रकूट वंश
एलोरा का कैलाश मंदिर	बेसर शैली	राष्ट्रकूट वंश
दशावतार मंदिर (झांसी)	बेसर शैली	गुप्तकाल
एलिफेंटा की गुहा मंदिर	बेसर शैली	राष्ट्रकूट वंश
मामल्लपुरम् के मंदिर	द्रविड़ शैली	पल्लव वंश
कांची का कैलाश मंदिर	द्रविड़ शैली	पल्लव वंश
बैकुण्ठ पेरुमल मंदिर	द्रविड शैली	---
तंजौर का वृहदेश्वर मंदिर	द्रविड़ शैली	राजाराज चोल
गंगैकोण्डचोलपुरम् मंदिर	द्रविड़ शैली	राजेन्द्र चोल
तिरुमलाई मंदिर	द्रविड़ शैली	पाण्ड्य वंश

- महेन्द्रवर्मन शैली का विकास 600-640ई. तक हुआ। इस शैली के मंदिरों को मंडप कहा गया है।

हर्षवर्द्धन के बाद उत्तर भारत

भारत पर अरबों का आक्रमण

- 712 ई. में इराक के शासक अल हल्जाल के भतीजे एवं दामाद मुहम्मद बिन कासिम ने सर्वप्रथम सिन्ध पर आक्रमण कर वहां के शासक दाहिर को पराजित कर सिन्ध पर सत्ता स्थापित की। इस अभियान का तत्कालिक कारण खलीफा के समुद्री जहाज को सिन्ध क्षेत्र में समुद्री डाकुओं द्वारा क्षति पहुंचाना था।
- मुस्लिमों ने सिन्ध से आगे बढ़ने की कोशिश की लेकिन प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम, चालुक्य शासक पुलकेशिन एवं कश्मीर के शासक ललितादित्य ने उसके प्रयासों को असफल कर दिया।

बंगाल का पाल वंश

- हर्ष के समय बंगाल में शशांक नामक राजा शासन करता था इसकी मृत्यु के बाद बंगाल में अव्यवस्था उत्पन्न हो गयी। इसी कारण 750 ई. में वहां के सामंतों ने गोपाल नामक व्यक्ति को बंगाल पर शासन करने के लिए चुना। इसी गोपाल ने पालवंश की स्थापना की। इसका शासन काल 750-770 ई. तक रहा।
- इसने बिहार शरीफ के निकट ओदंतपुरी में एक बौद्ध विहार की स्थापना किया।

धर्मपाल

- इसका शासन काल 770-810 ई. तक रहा। इसने पाल वशं

Downloaded From www.studymasterofficial.com

की शक्ति में वृद्धि की। और कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसने भागलपुर के निकट विक्रमशीला विश्वविद्यालय एवं सोमपुरी विश्वविद्यालय की स्थापना करवायी।

देवपाल

- धर्मपाल के बाद देवपाल पाल वंश का शक्तिशाली शासक बना। इसके शासन काल में साम्राज्य चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया। सुवर्ण द्वीप के शैलेन्द्रवंशी शासक बालपुत्र देव ने इसकी अनुमति से नालन्दा में एक विहार बनवाया।
- देवपाल के पश्चात पाल वंश गर्त में चला गया और प्रतिहार राजा भोज ने पूर्वी विस्तार प्रारंभ किया।
- भोज के बाद उसका पुत्र महेन्द्रपाल तथा उसके बाद महीपाल शासक बना।
- 1160 ई. के आसपास अंतिम पाल शासक गोविन्द पाल को गहड़वालों ने मगध से पदच्युतकर दिया।
- पाल वर्ष का शासन काल लगभग 400 वर्ष रहा।

सेन वंश

- पाल वंश के स्थान पर बंगाल में सेन वंश का उदय हुआ। सेन वंश का संस्थापक सामन्त सेन था जिसने बंगाल का राजनीतिक एकीकरण किया। इसने पश्चिमी बंगाल में विजयपुर एवं पूर्वी बंगाल में बिक्रमपुर नामक नगर की स्थापना की एवं दोनों को अपनी राजधानी बनाया।
- इसका उत्तराधिकारी वल्लाल सेन बना। जो एक योग्य व्यक्ति था इसने दानसागर एवं अदभुतसागर नामक ग्रन्थ की रचना की। इसका **शासन काल** 1158-1178 **ई. रहा।**
- इसका उत्तराधिकारी लक्ष्मण सेन हुआ। इसका शासन काल 1178-1205 रहा। इसने एक और राजधानी लखनौती की स्थापना की। इसी के समय में बख्तियार खिलजी का आक्रमण बंगाल पर हुआ और सेन वंश का पतन हो गया।

गुर्जर प्रतिहार वंश

- अग्नि कुल से उत्पन्न राजपूतों में गुर्जर प्रतिहारों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रतिहार वंश की स्थापना हरिश्चंद्र द्वारा हुई थी।

नागभट्ट प्रथम

- प्रतिहार वंश का वास्तविक संस्थापक नागभट्ट प्रथम था। इसने विभाजित प्रतिहार शक्ति को एकजुट किया इसका शासन काल 730-756 ई. तक रहा। इसी ने मुस्लिमों को सिंध से आगे बढ़ने से रोका। नागभट्ट प्रथम को ग्वालियर प्रशस्ति में मलेच्छों का नाशक बताया गया है।

वत्सराज

- यह प्रतिहार वंश का दूसरा प्रभावशाली राजा था इसने त्रिपक्षीय संघर्ष में धर्मपाल को हराया।

नागभट्ट द्वितीय

- इसका शासन काल 805 से 833 ई. तक रहा। इसने कन्नौज से चक्रयुद्ध को हटाकर कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया।
- मिहिर भोज या भोज प्रथम इस वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक था। इसने आदिवाराह की उपाधि धारण की और प्रतिहार साम्राज्य को शिखर पर पहुंचा दिया।
- इसके बाद महेन्द्र पाल प्रथम शासक हुआ। इसके दरबार में राज शेखर नामक विद्वान रहता था जिसने काव्य मीमांसा, कूपर मंजरी, बालरामायण ग्रन्थ की रचना की।
- 1018 ई. में महमूद गजनवी के कन्नौज पर आक्रमण के समय राजपाल यहां का राजा था। जो अपनी राजधानी छोड़कर भाग गया था। इससे नाराज होकर चंदेल शासक विद्याधर ने उसकी हत्या कर दी।
- 1090 ई. में कन्नौज पर गढ़वालों का नियंत्रण स्थापित हो गया।

कन्नौज के गहड़वाल वंश

- चन्द्रदेव ने गुर्जर प्रतिहार वंश के अंतिम शासक यशपाल को पराजित कर गहड़वाल वंश की स्थापना की। गहड़वाल शासकों को काशी नरेश भी कहा जाता है। क्योंकि कन्नौज राजधानी बनने के पूर्व इसकी राजधानी वाराणसी थी।
- इस वंश का अंतिम शासक इतिहास प्रसिद्ध जयचन्द्र था जिसने पृथ्वी राज की सहायता नहीं की थी जिसके कारण पृथ्वीराज तराइन के द्वितीय युद्ध में पराजित हो गया था। जयचन्द्र पुत्री का नाम संयोगिता था। 1194 ई. में चंदावर के युद्ध में मुहम्मद गोरी ने इसे पराजित कर दिया और कन्नौज पर अधिकार कर लिया। जयचन्द्र ने संस्कृत के प्रख्यात कवि श्रीहर्ष को संरक्षण प्रदान किया जिसने नैषधचरित एवं खण्डनखाद्य की रचना की।
- इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक गोविन्द चन्द्र था। यह स्वंय बड़ा विद्वान था। इसे विविध विद्याविचार वाचस्पति कहा गया है। गोविन्द चन्द्र का मंत्री लक्ष्मीधर ने कृत्यकल्पतरू नामक ग्रंथ की रचना की।

राष्ट्रकूट राजवंश

- राष्ट्रकूटों का उत्थान चालुक्य राज्य के स्थान पर हुआ तथा उसका अंत भी चालुक्यों की एक शाखा कल्याणी के चालुक्यों द्वारा हुआ।
- दक्षिण भारत के राज्य द्वारा उत्तर भारत के राज्यों पर आक्रमण करने वाला या उत्तर भारत के राजनीति में हस्तक्षेप करने वाला पहला राज्य था।
- चन्द्रराज इस वंश का पहला व्यक्ति था जिसने सामंत का पद पाया जबकि इस वंश का वास्तविक संस्थापक दन्तिदुर्ग था जिसका शासन काल 735-755 ई. रहा।

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

- दन्तिदुर्ग ने वातापी के चालुक्य वंशी शासक कीर्तिवर्मन को परास्त कर राष्ट्रकूटों की स्वतंत्रता की घोषणा की।
- इसका उत्तराधिकारी इसका चाचा कृष्ण प्रथम बना। इसका शासन काल 756-773 ई. रहा। इसने एलोरा में प्रसिद्ध कैलाश मंदिर का निर्माण करवाया जो एक ही पत्थर को काटकर बनाया गया है।
- इस वंश के योग्य उत्तराधिकारी में ध्रुव एवं गोविन्द तृतीय महत्त्वपूर्ण है। जिसने त्रिपक्षीय संघर्ष में राष्ट्रकुटों को सर्वश्रेष्ठ बना दिया।
- इसके बाद अमोधवर्ष राजा बना जिसने मान्यखेट को नई राजधानी बनवाया। यह एक विद्वान राजा था जिसने स्वयं कन्नड भाषा में कविराजमार्ग नामक ग्रन्थ की रचना की।
- इस वंश के अंतिम शासक खोटिग के समय मालवा के परमार शासक सीयक ने राजधानी मान्यखेट पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया।
- कन्नौज पर अधिकार करने के लिए पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट के बीच एक लंबा संघर्ष चला जिसे 'त्रिकोणात्मक या त्रिपक्षीय संघर्ष' कहते हैं।

शाकम्भरी के चौहान

- चौहान वंश की अनेक शाखाएँ थी इसमें सातवी शताब्दी में वासुदेव द्वारा स्थापित शाकम्भरी के चौहान प्रमुख थे। इस वंश के प्रारम्भिक राजा गुर्जर प्रतिहारों के सामंत के रूप में कार्य करते थे।
- दसवीं सदी के प्रारम्भ में वाक्यपतिराज प्रथम ने प्रतिहारों से अपने को स्वतंत्र कर लिया। इसके उत्तराधिकारी एवं पुत्र सिद्धराज ने राज्य का विस्तार कर महाराजाधिराज की पदवी धारण की।
- इस वंश के शासक अजयराज ने अजमेर नगर की स्थापना की एवं यहां पर सुन्दर महल और मंदिरों का निर्माण करवाया एवं राजधानी बनाया।
- इस वंश का अंतिम और विख्यात राजा पृथ्वीराज तृतीय था। इसका शासन काल 1179-1192 ई. रहा। इसने बुंदेलखण्ड के चंदेल शासक परमारदेव को परास्त किया। इस युद्ध में दो चंदेल वीर योद्धा आल्हा-उदल मारे गए थे। 1191 ई. में तराइन के प्रथम युद्ध में इसने मुहम्मद गोरी को पराजित किया था लेकिन 1192 ई. में तराइन के द्वितीय युद्ध में गोरी से पराजित हो गया और बंदी बना लिया गया और मार डाला गया। इसी तराइन के द्वितीय युद्ध के बाद गोरी ने मुस्लिम साम्राज्य की नींव रखी एवं अपने विश्वसनीय गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक को यहां के शासन करने के लिए नियुक्त किया।

जेजाकभुक्ति व बुन्देलखण्ड के चंदेल

- बुन्देलखण्ड के चंदेल पहले गुर्जर प्रतिहारों के सामंत थे। बुन्देलखण्ड के चंदेल वंश की स्थापना 9वीं सदी में नन्नुक द्वारा किया गया एवं खजुराहों को अपनी राजधानी बनाया।
- यशोवर्मन एवं धंगदेव ने 925-1003 तक शासन किया और प्रतिहार साम्राज्य से कालिंजर छीनकर साम्राज्य का विस्तार किया धंगदेव को चंदेलों की वास्तविक स्वाधीनता का जन्मदाता माना जाता है। इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। इसके समय में खजुराहों में विख्यात मंदिर कला का निर्माण हुआ।
- इस वंश का प्रतापी शासक विद्याधर था जिसने 1019-1029 ई. तक शासन किया। इसने कन्नौज के प्रतिहार शासक राजपाल को महमूद के विरुद्ध पीठ दिखाने पर दंडित किया।
- चंदेल वंश का अंतिम शासक परमार्दिदेव था जिसने पृथ्वीराज चौहान के विरुद्ध संघर्ष किया। 1203 ई. में ऐबक ने इसे पराजित कर दिया और चंदेल साम्राज्य पर अधिकार कर लिया।

मालवा के परमार

- परमार वंश के राजा राष्ट्रकूटों के सामंत थे 812 ई. में गोविन्द तृतीय नामक राष्ट्रकुट शासक ने मालवा विजय कर अपने प्रतिनिधि के रूप में उपेन्द्र नामक व्यक्ति को शासन करने के लिए नियुक्त किया।
- सिमुक द्वितीय ने 10वीं सदी के अंत में अपने राज्य को स्वतंत्र घोषित किया। 972 ई. में इसने राष्ट्रकूट शासक खोटिग को हराकर मान्याखेट को जला दिया।
- पहले परमार वंश की राजधानी उज्जैन थी आगे चलकर धार हो गई।
- इस वंश का प्रतापी राजा भोज था। इसी ने उज्जैन से राजधानी धार बनायी। बिहार के पश्चिमी भाग पर परमारों में अधिकार के कारण आरा और उसके आसपास के क्षेत्र को भोजपुर कहा जाता है। यह स्वंय कवि था। इसने सरस्वती कंठाभरण, सुत्रधार ग्रन्थ की रचना की। धार से कुछ दूर भोजपुर नामक नगर बसाया। एक तालाब भोज सागर बनवाया।
- राजा भोज की मृत्यु पर कहा गया कि 'निरालम्बा सरस्वती' अर्थात् सरस्वती अब आश्रय विहीन हो गयी है।
- 1305 ई. में अलाउद्दीन के सेनानायकों ने मालवा पर आक्रमण कर इस वंश का अंत कर दिया।

गुजरात के चालुक्य

- चालुक्य वंश की अनेक शाखाओं में गुजरात के चालुक्य भी प्रमुख थे। इस वंश का संस्थापक मूलराज प्रथम था। इसका शासन काल 942-995 ई. था। इसने अन्हिलवाड़ को अपनी राजधानी बनाया।
- इसके बाद भीम प्रथम शासक बना। इसी के समय महमूद गजनवी ने सोमनाथ पर आक्रमण किया था। महमूद के चले जाने के बाद इसने मंदिर की मरम्मत कराई।
- इसके बाद कर्ण शासक बना। इसने कर्णेश्वर मंदिर एवं कर्ण

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

सागर झील का निर्माण करवाया।

- मुहम्मद गोरी के आक्रमण के समय मूलराज द्वितीय या भीम द्वितीय शासक था जिसने मुहम्मद गोरी को 1178 ई. में आबु पर्वत के नीचे पराजित किया था।

हिन्दूशाही वंश

- काबुल घाटी तथा गांधार प्रदेश में लगर्तुमान के नेतृत्व में स्थापित तुर्क शाही वंश को उसके एक ब्राह्मण मंत्री कल्लर ने प्रभावहीन कर 9वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिन्दूशाहीवंश की स्थापना की।
- इस वंश के शासक भीम ने अपनी पुत्री की शादी लोहार वंश के क्षेमगुप्त से की जिनसे दिद्दा का जन्म हुआ जो कश्मीर की प्रसिद्ध शासिका बनी। जब याकूब द्वारा काबुल पर अधिकार कर लिया गया तो इसने ओहिन्द को अपनी राजधानी बनाया।
- जयपाल इस वंश का पराक्रमी राजा था जिसने महमूद के आक्रमण का वीरता के साथ सामना किया लेकिन महमूद गजनवी से पराजय को सहन नहीं कर सका और आत्मदाह कर लिया।
- जयपाल का उत्तराधिकारी आनंदपाल हुआ। इस समय भी महमूद का आक्रमण जारी रहा।
- हिन्दुशाही वंश ने सबसे ज्यादा महमूद के आक्रमण का सामना किया। 1026 ई. में लगभग इस वंश का अंत हो गया।

कश्मीर के राजवंश

- 7वीं शताब्दी में दुर्लभवर्द्धन ने कश्मीर में कार्कोट वंश की स्थापना की। उसने प्रतापपुर नामक नगर बसाया।
- ललितादित्य मुक्तापिण्ड इस वंश का एक महत्त्वपूर्ण शासक हुआ। धार्मिक दृष्टि से उदार था। चीनी दरबार में दुत मंडल भेजा। कश्मीर में मार्तण्ड मंदिर (सूर्य का) का निर्माण करवाया। प्रभासपाटन नामक नगर बसाया।

उत्पल वंश

- कार्कोट वंश के अंतिम राजा जयपीड़ विनयादित्य के समय में जनता असंतुष्ट हो गयी इसका लाभ उठाकर अवन्तिवर्मन ने कश्मीर में उत्पल वंश की स्थापना की। इसने अवन्तिपुर नामक नगर एवं सुयापुर (आधुनिक सोपार) का निर्माण करवाया।
- इसका उत्तराधिकारी शंकरवर्मन बना। युद्धों में व्यस्त रहने के कारण खजाना खाली होने के कारण करारोपड़ पद्धति के कारण जनता असंतुष्ट हो गई। इससे जनता ने यशस्कर को सत्ता सौप दी।

लोहार वंश

- 939 ई. में यशस्कर के उत्तराधिकारी संग्रामराज की हत्या उसके मंत्री पर्वगुप्त ने करके स्वयं सत्ता संभाल ली और लोहार वंश की स्थापना की।
- इसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी क्षेमगुप्त हुआ जिसका विवाह हिन्दुशाही राजकुमारी दिद्दा से हुआ। 958 ई. में क्षेमगुप्त की मृत्यु के बाद 50 वर्ष तक कश्मीर की सत्ता दिद्दा के हाथ में रही। 1003 ई. में इसकी मृत्यु के बाद संग्रामराज शासक बना।

दक्षिण भारतीय राज्य

- सातवाहन के बाद दक्षिण भारत की राजनीतिक एकता भंग हो गयी। वाकाटकों ने इसे एकजुट करने की कोशिश की। छठी सदी के लगभग 300 वर्षों तक दक्षिण भारत का इतिहास दो शक्तियों का इतिहास है।

(1) वातापी के चालुक्य (2) कांची के पल्लव

चालुक्य वंश

- चालुक्यों की शक्ति का केन्द्र वातापी था। जो बीजापुर राज्य में स्थित था। यह मूल शाखा पश्चिमी चालुक्य के नाम से जाना जाता है।
- मूल शाखा का इतिहास पुलकेशिन प्रथम से शुरु होता है। इसने वनवासी के कदम्बों, मैसुर के नलों को युद्ध में परास्त कर साम्राज्य का विस्तार किया।
- इसका उत्तराधिकारी मंगलेश हुआ जिसकी हत्या पुलकेशिन द्वितीय ने कर दी और शासक बन बैठा। इसी के समय 630-34 ई. में हर्षवर्द्धन के साथ पुलकेशिन द्वितीय का युद्ध हुआ था जिसमें हर्ष पराजित हुआ था। इस युद्ध का उल्लेख एहोल अभिलेख में है। पल्लव शासक नरसिंह वर्मन ने इसे पराजित कर वातापीकोंड की उपाधि धारण की। इस युद्ध में पुलकेशिन द्वितीय मारा गया।
- पुलकेशिन ने बेंगी राज्य पर अधिकार कर लिया और अपने भाई विष्णुवर्द्धन को वहां के शासक नियुक्त किया। दक्षिण के बेंगी के चालुक्य राज्य की स्थापना विष्णुवर्द्धन ने किया।
- वातापी के चालुक्य वंश का एक महत्वपुर्ण शासक विक्रमादित्य हुआ जो 655-680 तक शासन किया इसने लाट क्षेत्र को विजय कर वहां अपने भाई जयसिंह को लाट का शासक नियुक्त किया जिसने गुजरात में चालुक्य वंश की

Downloaded From www.studymasterofficial.com

शाखा स्थापित की।

कल्याणी के चालुक्य

- इस शाखा की स्थापना का श्रेय भीम पराक्रम को दिया जाता है। यह प्रारम्भ में राष्ट्रकूट का सामंत था। इसने अंतिम शासक करक को परास्त कर सत्ता पर अधिकार कर लिया। प्रारम्भ में मान्यखेट को ही अपनी राजधानी बनाया।
- इस वंश का महत्वपूर्ण शासक सोमेश्वर प्रथम था। इसको चोल शासक राजाधिराज ने कोप्पम के युद्ध में पराजित किया था। यह चालुक्य की राजधानी मान्यखेट से कल्याणी ले गया।

कांची के पल्लव

- इस वंश का उत्थान सातवाहनों के पतन के साथ ही शुरु हो गया। इस वंश के संस्थापक सिंहविष्णु थे जिनका शासन काल 575-600 ई. था। किरातार्जुनीयम का रचयिता भारवि इसी के समय हुआ।
- इसका उत्तराधिकारी महेन्द्रवर्मन प्रथम था जो चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय के समकालिन था। इसने मतविलास प्रहसन नामक ग्रन्थ की रचना की।
- इसके उत्तराधिकारी नरसिंहवर्मन ने पुलकेशिन द्वितीय को पराजित कर मार डाला और वातापीकोंड की उपाधि धारण की। इसने महाबलीपुरम नामक नगर बसाया। ह्वेनसांग ने इसके समय में कांची की यात्रा की थी।
- नरसिंहवर्मन के बाद महत्वपूर्ण शासक नरसिंहवर्मन द्वितीय हुआ। इसका काल कला, संस्कृति का उत्थान काल था। इसने कांची का कैलाश नाथ मंदिर, महाबलीपुरम का मंदिर का निर्माण करवाया। प्रसिद्ध विद्वान दंडिन इसके दरबार में रहते थे।

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

दिल्ली सल्तनत

- दिल्ली सल्तनत के अधिकांश शासक तुर्क थे। इनकी मातृभाषा तुर्की थी एवं सरकारी काम-काज की भाषा फारसी थी।

कुछ महत्वपूर्ण इतिहासकार एवं उनके ग्रन्थ

अलबरूनी
- यह महमूद गजनवी के साथ भारत आए थे। इनका प्रथम ग्रन्थ किताब उल हिन्द है।

उत्बी
- यह महमूद का दरबारी इतिहासकार था। यह भारत नहीं आया था। इसकी प्रमुख पुस्तक तारीख-ए-यामिनी है।

फिरदौसी
- महमूद गजनवी का दरबारी कवि था। शाहनामा की रचना की।

मिन्हाज-उल-सिराज
- तबकाते नासिरी पुस्तक की रचना की।

जियाउद्दीन बरनी
- तारीख-ए-फिरोजशाही एवं फतवा-ए-जहाँदारी पुस्तक लिखी।

अमीर खुसरो (तारीख-ए-अलाई, आशिका)
- खजाएन-उल-फुतुह एवं तुगलकनामा पुस्तक की रचना की।

इब्नबतुता (किरात उत सादेन)
- अफ्रीकी या मोरक्को निवासी 1333 ई. में मुहम्मद बिन तुगलक के दरबार में आया। इसने किताब-उल-रेहला ग्रन्थ की रचना की।

शम्स- ए- सिराज अफीक
- **'तारीख-ए-फिरोजशाही'** ग्रन्थ की रचना की।

फिरोजशाह तुगलक
- इसने अपनी आत्मकथा **'फुतुहाते फिरोजशाही'** की रचना की।

अली अहमद
- चचनामा की रचना अरबी भाषा में किया।

महमूद गजनवी
- 998 ई. में महमूद गजनवी ने गजनी का सुल्तान बनने के बाद भारत पर आक्रमण करने का निश्चय किया। इसके दो कारण थे इस्लाम के धार्मिक-विचार को फैलाना एवं भारत से धन प्राप्त करना। यद्यपि महमूद का भारत आक्रमण बहुत सफल नहीं रहा फिर भी महमूद ने भारतीय राजनीति को अस्त व्यस्त कर दिया।
- महमूद का पहला आक्रमण भारत के सीमांत प्रदेशों पर 1000 ई. में हुआ। महमूद का सबसे ज्यादा प्रतिरोध हिन्दूशाही वंश को करना पड़ा। इसका महत्वपूर्ण आक्रमण 1018-19 ई. में चंदेलों के विरुद्ध हुआ इस समय चंदेल राजा विद्याधर था। महमूद का सबसे महत्वपूर्ण आक्रमण 1025-26 ई. में **सोमनाथ मंदिर** पर हुआ। इस समय गुजरात के शासक भीम द्वितीय था। महमूद का अंतिम आक्रमण सीमांत प्रदेशों पर 1027 ई. में हुआ। महमूद ने भारत पर 17 बार आक्रमण किया।
- महमूद गजनवी द्वारा नष्ट किए गए सोमनाथ मंदिर को चालुक्य कुमार पाल ने फिर से बनवाया।

मुहम्मद गोरी
- ग्यासुद्दीन मुहम्मद 1173 ई. में गोर साम्राज्य का शासक बना तो अपने भाई शहाबुद्दीन को गजनी का गवर्नर बनाया यही शहाबुद्दीन इतिहास में मुहम्मद गोरी के नाम से प्रसिद्ध है।
- मुहम्मद गोरी ने गोमल दर्रा हो कर सर्वप्रथम मुल्तान और कच्छ पर अधिकार कर लिया। 1178 ई. में गोरी को गुजरात के भीम द्वितीय ने आबु पर्वत के निकट हरा दिया।
- मुहम्मद गोरी ने पंजाब पर आक्रमण कर 1184-85 में महमूद गजनवी वंश के अंतिम शासक खुसरो मलिक को परास्त कर उस पर अधिकार कर लिया।
- मुहम्मद गोरी का सबसे महत्वपूर्ण युद्ध तराइन का प्रथम एवं तराइन का द्वितीय युद्ध था। 1191 ई. के प्रथम युद्ध में यह पृथ्वीराज चौहान से पराजित हो गया था जबकि 1192 ई. के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज को पराजित कर बंदी बना लिया एवं मार डाला। 1192 के विजय के बाद गोरी भारत की जिम्मेदारी अपने विश्वसनीय गुलाम ऐबक को सौपकर स्वदेश लौट गया।
- 1194 ई. में गोरी फिर वापस आया चंदावर के युद्ध में कन्नौज के शासक जयचन्द्र को पराजित कर उस पर अधिकार कर लिया।
- 1202-03 ई. में एक साधारण तुर्की सेनापति बख्तियार खिलजी ने बंगाल, बिहार पर अधिकार कर लिया। इसने ओदन्तपुर नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया और वहां निवास करने वाले बौद्ध भिक्षुओं को मार डाला।
- गोरी का अंतिम आक्रमण 1205 ई. में खोखरों के विद्रोह को दबाने के लिए हुआ। विजय के बाद वापस लौटते समय 1206 में रास्ते में इसकी हत्या कर दी गई। इसके शव को गजनी ले जाकर दफना दिया गया।

गुलाम वंश

कुतुबुद्दीन ऐबक
- गोरी की मृत्यु के बाद लाहौर की जनता ने गोरी के प्रतिनिधि ऐबक को लाहौर पर शासन करने का निमंत्रण दिया और ऐबक ने भारत की सत्ता संभाली। गोरी का दूसरा गुलाम यल्दौज गजनी का तथा कुबाचा कच्छ का शासक बन बैठा।
- ऐबक को असीम उदारता के लिए **'लाखबख्श'** कहा जाता है। 1210 ई. में चौगान खेलते समय घोड़े से गिरने के कारण ऐबक की मृत्यु हो गयी।
- ऐबक ने दिल्ली में **'कुवत-उल-इस्लाम मस्जिद'** और **'अजमेर में ढाई दिन का झोपड़ा'** बनवाया। उसने कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर कुतुबमीनार के निर्माण का कार्य शुरू करवाया जिसे इल्तुतमिश ने पुरा करवाया।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

- ऐबक **'लाख बख्श'** और **'कुरान ख्वाँ'** के नाम से भी प्रसिद्ध था।
- ऐबक की मृत्यु के बाद लाहौर के अमीरों ने आरामशाह को सुल्तान घोषित किया जबकि दिल्ली के अमीरों ने बदायूँ के गवर्नर जो ऐबक का गुलाम एवं दामाद था को सुल्तान घोषित किया जूंद की लड़ाई में इल्तुतमिश ने अरामशाह को पराजित कर दिया।

इल्तुतमिश

- इल्तुतमिश का शासन काल 1210-1236 ई. तक रहा। इसने लाहौर के स्थान पर दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया इसे दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक भी माना जाता है।
- इल्तुतमिश ने तराइन के युद्ध में यल्दौज को पराजित कर एवं कुबाचा के आत्महत्या कर लेने के बाद साम्राज्य को स्थिरता प्रदान किया।
- मंगोल नेता चंगेज खां के भय से ख्वारिज्म के शासक के पुत्र मंगबरनी की सहायता न कर सल्तनत को मंगोल आक्रमण से बचा लिया।
- 1229 ई. में बगदाद के खलीफा से दिल्ली सल्तनत की खिलाफत प्राप्त किया। इसने दो सिक्के, चांदी के टका और तांबे का जीतल, चलवाया। इल्तुतमिश पहला शासक है जिसने सिक्के का मानकीकरण करवाया। इसने **'चहलगामी'** (चालीस गुलामों का दल) की स्थापना करवाया। इसने न्याय के लिए दरबार में घंटा लगवाया।
- कुतुबमीनार के निर्माण के कार्य को पूरा करवाया।

रजिया सुल्तान

- इल्तुतमिश ने रजिया सुल्तान को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया लेकिन तुर्क अमीरों एवं इक्तादारों ने एवं रूकुनुद्दीन फिरोज की माता शाहतुर्कान ने फिरोज को सुल्तान घोषित कर दिया। यह बिलासी एवं अत्याचारी शासक था। रजिया जनता के समर्थन से सुल्तान बनी।
- रजिया पहली मुस्लिम महिला है जिसने सुल्तान का पद प्राप्त किया। भटिण्डा का शासक अल्तूनिया 1240 ई. में विद्रोह कर दिया रजिया इसके विरुद्ध अभियान चलाई लेकिन बंदी बना ली गई लेकिन **'अल्तूनिया'** से रजिया विवाह कर दिल्ली की गद्दी प्राप्त करने की कोशिश की लेकिन 1240 ई. में कैथल के निकट दोनों की हत्या कर दी गई।

बहरामशाह

- इसका शासनकाल 1240-42 ई. रहा। इसके समय में पहली बार नायब ए ममलिकात (संरक्षक) का पद बनाया गया इस पद पर पहली बार एतगीन को बहाल किया गया। इसके समय मंगोल का प्रथम आक्रमण हुआ।

महमूद शाह

- इसका शासन काल 1242-46 तक रहा। इसके समय में मंगोलों का दुबारा आक्रमण हुआ।

नासिरुद्दीन महमूद

- इसका शासन काल 1246-65 ई. तक रहा। 1265 ई में नासिरूद्दीन महमूद की मृत्यु हो गई। इसके समय बलबन नायब-ए-ममलिकात के पद पर बहाल हुआ। लेकिन विरोध के कारण बलबन को हटाकर पहली बार एक भारतीय मुसलमान अबुल रेहान को इस पद पर बैठाया गया। कुछ समय बाद फिर बलवन इस पद पर दुबारा नियुक्त हो गया।

बलबन

- इसका शासन काल 1266-86 ई. रहा। इसने चालीस दल को भंग कर दिया। **इसने सिजदा पैबोस की नीति लागू की। इसके अतिरिक्त नौरोज का त्योहार भी प्रारंभ कराया।** इसकी साम्राज्य नीति लौह एवं रक्त की नीति पर आधारित थी।
- बलबन के राजत्व सिद्धान्त की दो मुख्य विशेषताएं थी –
  1. सुल्तान का पद ईश्वर के द्वारा प्रदान किया हुआ होता है।
  2. सुल्तान का निरंकुश होना आवश्यक है।
- उसके अनुसार 'सुल्तान पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि है और उसका स्थान पैगम्बर के पश्चात् है।
- बलबन अपने को 'फिरदौसी के शाहनामा' में वर्णित अफरासियाब वंशज' तथा शान को ईरानी आदर्श के रूप में सुव्यवस्थित किया।
- बलबन ने चालीसा दल का दमन किया।
- बलबन का गुप्तचर विभाग 'वरीद' था।
- अमीर खुसरो जिसका नाम तुतिये हिन्द था तथा अमीर हसन ने अपना साहित्यिक जीवन शाहजादा मुहम्मद (बलबन का ज्येष्ठ पुत्र) के समय शुरू किया।

कैकुवाद

- 1286 ई. में बलवन की मृत्यु के बाद कैकुबाद शासक बना। इसने आरिज ए मुमालिक के पद पर जलालुद्दीन खिलजी को नियुक्त किया।

कैमुर्स

- जलालुद्दीन खिलजी ने कैकुवाद की हत्या कर कैमुर्स को शासक बनवाया लेकिन वास्तविक सत्ता जलालुद्दीन के हाथ में आ गयी। कुछ दिन बाद इसकी हत्या कर दी और खिलजी वंश की स्थापना हुई।
- बलवन ने आरिज ए मुमालिक (सेना विभाग) की स्थापना किया।

खिलजी वंश

जलालुद्दीन खिलजी

- खिलजी वंश का संस्थापक जलालुद्दीन खिलजी था जिसने किलोखरी महल में सत्ता ग्रहण किया जिसका निर्माण बलवन ने करवाया था। 70 वर्ष के उम्र में शासक बना।
- मुसलमानों का दक्षिण भारत पर प्रथम आक्रमण जलालुद्दीन के समय देवगिरि के शासक रामचन्द्र देव पर हुआ। इसी के साथ ईरानी फकीरी सीदी मौला को हाथी के पैरो तले

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

कुचला गया।

अलाउद्दीन खिलजी

- इसका शासन काल 1296-1316 ई. तक रहा इसके बचपन का नाम अली गुरशास्प था। यह जलालुद्दीन की हत्या कर शासक बना था।
- अलाउद्दीन की साम्राज्यवादी नीति का प्रमुख अभियान गुजरात था जिस पर बघेल वंश के राय कर्णदेव बघेल शासन कर रहा था। इस अभियान में रानी कमलादेवी पकड़ ली गई जिससे अलाउद्दीन ने शादी कर ली।
- 1303 ई. में चितौड़ अभियान किया जिसका कारण रानी पद्मिनी को पाना था। अलाउद्दीन ने चितौड़ विजय कर अपने पुत्र खिज्र खां को शासक बनाया और चितौड़ का नया नाम खिज्राबाद रखा।
- अलाउद्दीन के दक्षिण अभियान का नेतृत्व मलिक काफूर ने किया। देवगिरी अभियान में वहां के शासक रामचन्द्र और देवलरानी को दिल्ली लाया गया। रामचन्द्र को राय-रयान की उपाधि दी गई एवं देवलरानी की शादी खिज्र खाँ से कर दी गई।
- अलाउद्दीन खिलजी ने 'सिकंदर सानी' (द्वितीय सिकंदर) की उपाधि धारण की थी।
- विद्रोह को रोकने के लिए आपसी मेल जोल पर रोक, मद्यपान पर रोक लगा दिया।
- प्रशासन में सुधार के क्रम में घोड़े के लिए दाग एवं हुलिया प्रणाली शुरू किये। गुप्तचर प्रणाली के सुधार के लिए बरीद-ए-मुमालिक विभाग बनाया। बाजार पर नियंत्रण के लिए बाजार नियंत्रण व्यवस्था लागू की। अलाउद्दीन ने भूमि की माप कराई, राजस्व के संचालन के लिए दीवान- ए-मुस्तखराज विभाग खोला।
- बाजार व्यवस्था के देख रेख के लिए दीवान-ए-रियासत का गठन किया गया। इसके लिए शहना-ए-मंडी नामक अधिकारी होता था।
- अलाउद्दीन ने दिल्ली में एक किला कुश्क-ए-सिरी का निर्माण करवाया। अलाई दरवाजा का निर्माण करवाया। कुतुबमीनार के दुगने आकार के मीनार बनाने का निर्णय किया। 1316 ई. में अलाउद्दीन की मृत्यु हो गया।
- अलाउद्दीन ने सीरी को अपनी राजधानी बनाया।

मुबारक शाह खिलजी

- मुबारक शाह खिलजी मलिक काफूर की हत्या कर गद्दी पर बैठा। इसका शासन काल 1316-1320 रहा। यह दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने स्वयं को खलीफा घोषित किया।
- 1320 ई. में खुसरों ने इसकी हत्या कर शासक बन गया लेकिन विलासी प्रवृत्त एवं प्रशासनिक अक्षमता के कारण दीपालपुर के गाजी मलिक ने एक छोटे मुठभेड़ में इसकी हत्या कर दी और गियासुद्दीन तुगलक के नाम से गद्दी पर बैठा।

तुगलक वंश

- इस वंश का संस्थापक **गयासुद्दीन तुगलक** था जिसने 1320-25 ई. तक शासन किया। यह एक विद्वान शासक था। लगान के रूप में उपज का 1/10 तक लेने का आदेश दिया। सिंचाई हेतु नहर निर्माण कराने वाला ग्यासुद्दीन पहला शासक था। अलाउद्दीन द्वारा चलायी गयी **दाग तथा चेहरा प्रथा** को प्रभावशाली ढंग से लागू कराया।
- सर्वप्रथम ग्यासुद्दीन तुगलक के समय में ही दक्षिण के क्षेत्रों को दिल्ली सल्तनत में मिलाया गया, इसमें सर्वप्रथम वारंगल था।
- निजामुद्दीन औलिया ने ग्यासुद्दीन तुगलक के बारे में कहा था ''दिल्ली अभी बहुत दूर है''

मुहम्मद बिन तुगलक

- गियासुद्दीन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र जौना खाँ मुहम्मद बिन तुगलक के नाम से गद्दी पर बैठा। इसका शासन काल 1324-1351 ई. रहा।
- इसके शासन काल में अफ्रीकी यात्री इब्नबतुता भारत आया था। सुल्तान ने इसे दिल्ली का काजी नियुक्त किया। इब्नबतुता सुल्तान के राजदूत की हैसियत से चीन के शासक तोगन तिमूर के दरबार में गया। इसने अपनी इस यात्रा का उल्लेख रेहला नामक पुस्तक में किया है।
- इसने खुतबा पर से खलीफा का नाम बाहर कर दिया। यह हिन्दुओं के होली के त्योहार में भाग लेता था। इसके जैन विद्वान जिनप्रभा सूरी को अपने महल में स्वागत किया। नई राजधानी देवगिरी का नया नाम दौलताबाद रखा।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने प्रतीकात्मक मुद्रा जारी करने का निर्णय लिया। तांबे एवं कांसे की मुद्रा जारी की गई।
- कृषि विस्तार के उद्देश्य से दीवान-ए-कोही नामक विभाग खोला जिसका प्रधान अमीर-ए-कोही होता था।
- इसी के शासनकाल में 1336 ई. में हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाइयों ने विजयनगर साम्राज्य को स्थापित कर लिया 1338 ई. में बंगाल स्वतंत्र हो गया। देवगिरी के आसपास के क्षेत्र में हसन गंगु के नेतृत्व में बहमनी साम्राज्य की नीव पड़ी।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने जहांपनाह नगर एवं आदिलाबाद के दुर्ग का निर्माण करवाया।
- सुल्तान की पांच मुख्य राजनीतिक एवं प्रशासनिक योजनाएं निम्न थीं - 1. दोआब में कर वृद्धि 2. देवगिरि को राजधानी बनाना। (देवगिरि को कुबतुल इस्लाम कहा गया) 3. सांकेतिक मुद्रा जारी करना। 4. खुरासान पर आक्रमगण 5. कराचिल का अभियान
- सुल्तान ने कृषकों को सहायता प्रदान करने के लिए कृषि विभाग की स्थापना की, अकाल राहत संहिता तैयार कराई तथा अकालग्रस्त कृषकों को तकाबी (कृषि ऋण)प्रदान की

Downloaded From www.studymasterofficial.com

गयी।

- दिल्ली सुल्तानों में यह प्रथम सुल्तान था जिसने हिन्दुओं के त्योहारों विशेषत: होली में भाग लेता था।
- सिंध के थट्टा में विद्रोह दमन के दौरान सुल्तान की मृत्यु हो गई। इसकी मृत्यु पर बदायूँ ने कहा था ''सुल्तान को उसकी प्रजा से और प्रजा को इस सुल्तान से मुक्ति मिल गयी।''

फिरोज शाह तुगलक

- थट्टा में मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु के बाद वहीं पर अमीरों के कहने पर फिरोज तुगलक ने सत्ता संभाल ली। इसकी माँ बीबी जैला राजपूत सरदार रणमल की पुत्री थी।
- इसने किसानों के ऋण को माफ कर दिया सरकारी पद को वंशानुगत बना दिए।
- शुक्रवारी खुतबे में दिल्ली साम्राज्य के सभी सुल्तानों का नाम शामिल किया। इसमें ऐबक का नाम नहीं है।
- इसने ब्राह्मणों को भी जजिया कर देने के लिए बाध्य किया। इसने 23 प्रकार के करों को समाप्त कर शरीयत के अनुसार केवल चार प्रकार के कर जजिया, जकात, खम्स एवं खराज लिया। इसके अलावा सिंचाई कर के रूप में हक-ए-शर्ब लिया जाता था।
- उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से दासों को खरीदा गया। इनकी संख्या 1,80,000 तक पहुँच गया। इनकी देखभाल के लिए सुल्तान ने दीवान-ए-बंदगान विभाग बनाया।
- इसने मुस्लिम गरीबों के कल्याण के लिए दीवान-ए-खैरात नामक एक विभाग की स्थापना किया। अलाउद्दीन खिलजी द्वारा निर्मित हौज-ए-खास की मरम्मत भी करवाया।
- इसने अशोक के दो अभिलेख टोपरा एवं मेरठ से दिल्ली मंगवाया। इसने फतेहाबाद, फिरोजाबाद, हिसार, फिरोजपुर और जौनपुर नामक नगर को बसाया।
- तुगलक वंश का अंतिम महत्वपूर्ण शासक मुहम्मद शाह बना। इसी के समय जौनपुर में शर्की साम्राज्य का उदय हुआ। 1398 ई. में तैमुर लंग का आक्रमण इसी के शासन काल में हुआ।

सैय्यद वंश

- इस वंश के संस्थापक खिज्र खाँ था जिसने 1414 ई. में इस वंश की स्थापना किया। यह सुल्तान की उपाधि धारण न कर रैयत-ए-आला की उपाधि से ही खुश रहा।

शाहआलम

- 1434 ई. में मुबारक शाह की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठा। यह 1451 ई. में सरहिन्द के गवर्नर बहलोल लोदी के पक्ष में गद्दी छोड़ कर बदायूँ चला गया जहां 1476 ई. में इसकी मृत्यु हो गयी।

लोदी वंश

- बहलोल लोदी ने प्रथम अफगान राज्य की स्थापना 1451 ई. में किया। इसने बहलोल नामक सिक्का चलाया इसके शासन काल में अफगानों का पलायन काफी मात्रा में भारत की ओर हुआ।

सिकन्दर शाह लोदी

- 1489 ई. में बहलोल लोदी की मृत्यु के बाद यह शासक बना। इसने 1504 ई. में आगरा नगर बनवाया, तथा 1506 ई. में आगरा राजधानी बना। इसने भूमि की माप कराई। इसके लिए उसने गज-ए-सिकन्दरी का प्रयोग किया।
- इसने थानेश्वर के एक तालाब में हिन्दुओं के स्नान पर प्रतिबंध लगाया। मुसलमानों को ताजिया निकालने एवं स्त्रियों को पीरों एवं संतों के मजार पर जाने से मना किया।
- इसके आदेश पर संस्कृत के एक आयुर्वेद ग्रन्थ का फारसी में फरहंगे सिकन्दरी के नाम से अनुवाद हुआ।
- इसने आगरा को अपनी नयी राजधानी बनवाया।

इब्राहिम लोदी

- 1517 ई. में सिकन्दर की मृत्यु के बाद इब्राहिम लोदी शासक बना। इसके शासन काल में पानीपत का प्रथम युद्ध हुआ जिसमें बाबर ने इसे पराजित कर मुगल वंश की स्थापना किया। 1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध में पराजय के बाद लोदी वंश का अंत हो गया और एक नये वंश मुगल वंश की स्थापना हुई।

सल्तनत काल के प्रमुख अधिकारी तथा उनके कार्य

अधिकारी का नाम	कार्य
आरिज-ए-मुमालिक	सैन्य विभाग (दिवान-ए-अर्ज), का प्रधान था। सैनिको की भर्ती करना प्रमुख कार्य था।
इंशा-ए-मुमालिक	पत्राचार विभाग का प्रधान था।
रसालत-ए-मुमालिक	विदेश विभाग का प्रधान था।
वकील-ए-दर	शाही महल एवं सुल्तान की व्यक्तिगत सेवाओं का प्रबंधकर्त्ता था।
अमीर-ए-हाजिब	दरबारी शिष्टाचार के नियमों को लागू कराता था।
सर-ए-जांदार	सुल्तान के अंग रक्षकों का प्रधान
अमीर-ए-बहर	आंतरिक नौकायन तथा जलमार्गो का नियंत्रण करता था।
अमीर-ए-मजलिस	सभाओं एवं दावतों जैसे विशेष उत्सवों का प्रबंध करता था।
मुस्तौफी-ए-मुमालिक	महालेखा परीक्षक यह राज्य के खर्चो की जांच करता था (ऑडीटर जनरल)
मुशरिफ-ए-मुमालिक	महालेखाकार (राज्य की आय से

Downloaded From www.studymasterofficial.com

	संबंधित)
दीवान-ए-रियासत	बाजार पर नियंत्रण रखना।
शहना-ए-मंडी	बाजार मूल्य नियंत्रण की जांच करना
कोतवाल	शहर मे शांति व्यवस्था करने के लिए उत्तरदायी था।
अमीर-ए-दाद	बड़े नगरों का मजिस्ट्रेट
काजी-उल-कुजात	न्याय विभाग का प्रधान
मुहतसीब	लोगों के आचरण पर नियंत्रण रखता था।
मतशर्रिफ	शाही कारखाने की देखभाल करता था।
मुफ्ती	धर्म की व्याख्या करता था।
सद्र-उस-सुदूर	धर्म सम्बंधी कार्यो का प्रमुख था।

नाम	विभाग	कार्य
दीवान-ए-विजारत	वजीर का विभाग	मुख्यत: वित्त सम्बंधी कार्य परन्तु लोक प्रशासन के प्रत्येक विभाग पर नियंत्रण।
दीवान-ए-आरिज	सैन्य विभाग	सैनिकों की भर्ती, सैनिक अभियानों का आयोजन, सैनिकों के वेतन का निर्धारण एवं सैन्य निरीक्षण
दीवान-ए-अमीर कोही	कृषि विभाग(मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा स्थापित)	कृषि के तहत भूमि का विस्तार करना
दीवान-ए-मुस्तखराज	राजस्व विभाग (अलाउद्दीन द्वारा स्थापित)	बकाया करों की वसूली करना।
दीवान-ए-बंदगान	दास विभाग(फिरोजशाह तुगलक द्वारा स्थापित)	दासों की संख्या में वृद्धि करना
दीवान-ए-खैरात	दान विभाग (फिरोजशाह तुगलक द्वारा स्थापित)	गरीब मुस्लिम कन्याओं का विवाह करना, विधवा एवं अनाथों की मदद करना।

दीवान-ए-इस्तिहाक	पेंशन विभाग (फिरोजशाह तुगलक द्वारा स्थापित)	अवकाश प्राप्त कर्मचारियों को वजीफा देना या सैन्य अभियानों में मृत सैनिकों के आश्रितों को मदद देना।
दीवान-ए-वकूफ	व्यय विभाग (जलालुद्दीन खिलजी द्वारा स्थापित)	व्यय के कागजात की देखभाल करना।

सल्तनतकालीन स्थापत्य कला

इमारत	शासक	स्थान
अढ़ाई दिन का झोपड़ा	कुतुबुद्दीन ऐबक	अजमेर
जामा मस्जिद	इल्तुतमिश	बदांयू
अतारकिन का दरवाजा	इल्तुतमिश	नागौर (जोधपुर)
कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद	कुतुबुद्दीन ऐबक	दिल्ली
कुतुबमीनार	कुतुबुद्दीन ऐबक और इल्तुतमिश	दिल्ली
इल्तुतमिश का मकबरा	इल्तुतमिश	दिल्ली
सुल्तानगढ़ी अथवा नसिरूद्दीन का मकबरा	इल्तुतमिश	दिल्ली
लाल महल	बलबन	दिल्ली
बलबन का मकबरा	बलबन	दिल्ली
जमात खाना मस्जिद	अलाउद्दीन खिलजी	दिल्ली
अलाई दरवाजा	अलाउद्दीन खिलजी	दिल्ली
हजार सितून	अलाउद्दीन खिलजी	दिल्ली
तुगलकाबाद	ग्यासुद्दीन तुगलक	दिल्ली
ग्यासुद्दीन तुगलक का मकबरा	ग्यासुद्दीन तुगलक	दिल्ली
आदिलाबाद का किला	मुहम्मद बिन तुगलक	दिल्ली
जहांपनाह नगर	मुहम्मद बिन तुगलक	दिल्ली
शोख निजामुद्दीन औलिया	मुहम्मद बिन तुगलक	दिल्ली
फिरोजाबाद का मकबरा	फिरोज तुगलक	दिल्ली
खान-ए-जहां तेलंगानी	जूनाशाह खानेजहां	दिल्ली
काली मस्जिद	जूनाशाह खानेजहां	दिल्ली
खिर्की मस्जिद	जूनाशाह खानेजहां	दिल्ली
बहलोल लोदी का	लोदी काल	दिल्ली

Downloaded From www.studymasterofficial.com

मकबरा		
सिकन्दर लोदी का मकबरा	इब्राहिम लोदी	दिल्ली
मोठ की मस्जिद	सिकन्दर लोदी के प्रधानमंत्री मियाँभुवा	दिल्ली

स्वतंत्र प्रान्तीय राज्य

जौनपुर का शर्की राज्य

- जौनपुर नगर की स्थापना फिरोज शाह तुगलक ने 1460 ई. में किया। मलिक सरवर जिसे तुगलक ने **'मलिक-उस-शर्क'** (पूर्व का स्वामी) का उपाधि प्रदान किया था इसने तैमूर के आक्रमण के अव्यवस्था का लाभ उठाकर जौनपुर में शर्की वंश की स्थापना की।
- इब्राहिम शाह शर्की इस वंश का एक महत्वपूर्ण शासक हुआ जिसने प्रभावशाली ढंग से राज्य का विस्तार किया। उसने शिराज-ए-हिन्द (भारत का शिराज) की उपाधि प्राप्त की।
- इसके उत्तराधिकारी कमजोर थे। हुसैन शाह शर्की के समय बहलोल जौनपुर पर अधिकार कर लिया।
- पद्मावत के रचनाकार मलिक मुहम्मद जायसी यहां रहते थे। इब्राहिम शाह शर्की ने अटाला मस्जिद का निर्माण किया।

बंगाल

- 1338 ई. में मुहम्मद बिन तुगलक की व्यस्तता का लाभ उठाकर फखरूद्दीन मुबारक शाह ने बंगाल को एक स्वतंत्र राज्य बनाया।
- बंगाल का एक महत्वपूर्ण शासक सिकन्दर शाह बना जो 1389 ई. तक शासन किया। सिकन्दर ने पाण्डुआ में अदीना मस्जिद का निर्माण करवाया।
- 1493 ई. में अलाउद्दीन हुसैन शाह बंगाल का शासक बना जो चैतन्य का समकालीन था। इसने छोटा सोना मस्जिद का निर्माण करवाया।
- इसका उत्तराधिकारी नुसरत शाह हुआ। इसने गौड़ में बड़ा सोना एवं कदम रसूल मस्जिद का निर्माण करवाया।
- इस वंश का अंतिम शासक ग्यासुद्दीन महमूद शाह हुआ 1538 ई. में शेरशाह ने बंगाल पर अधिकार कर लिया।

मालवा

- मालवा में स्वतंत्र राज्य की स्थापना 1401 ई. में दिलावर खाँ ने किया।
- इसके पुत्र एवं उत्तराधिकारी अलप खाँ हुसंगशाह के नाम से गद्दी पर बैठा। यह मालवा की राजधानी धार से माण्डु ले गया।
- इस वंश का अंतिम शासक महमुद शाह द्वितीय हुआ। 1531 ई. में गुजरात के शासक बहादुर शाह ने माण्डु पर आक्रमण कर इसे मार डाला एवं मालवा को गुजरात में मिला लिया।

गुजरात

- गुजरात में स्वतंत्र राज्य की स्थापना 1407 ई. में जफर खाँ ने की।
- 1411 ई. में इसकी मृत्यु के बाद अहमदशाह शासक बना। इसे गुजरात के स्वतंत्र राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। अहमदशाह ने अहमदाबाद नगर की स्थापना किया और राजधानी पाटन से हटाकर अहमदाबाद में स्थापित किया। गुजरात के हिन्दुओं पर पहली बार जजिया कर लगा दिया।
- 1441 ई. में अहमदशाह की मृत्यु के बाद सबसे महत्वपूर्ण शासक महमूद बेगडा (1459-1511 ई.) शासक बना। इसने गिरनार की पहाड़ी के नीचे मुस्तफाबाद नाम का नया शहर बसाया। और इसे अपनी दूसरी राजधानी बनाया। महमूद बेगडा ने चम्पानेर के निकट महमूदाबाद नगर की स्थापना किया।
- 1511 ई. में इसकी मृत्यु के बाद बहादुरशाह शासक बना जिसने मालवा को अपने राज्य में मिला लिया।

मेवाड

- 1303 ई. में अलाउद्दीन ने मेवाड़ के राजा रतन सिंह को पराजित कर इस पर अधिकार कर लिया। MBT के समय सिसोदिया वंश के हम्मीरदेव ने मेवाड़ में स्वतंत्र राज्य की स्थापना किया।
- इस वंश का महत्वपूर्ण शासक राणाकुम्भा था। इन्होंने पड़ोसियों को परास्त कर मेवाड़ का विस्तार किया। इसने चितौड़ के कीर्ति स्तम्भ का निर्माण करवाया।
- इस वंश का एक महत्वपूर्ण शासक राणा सांगा था। मालवा के सरदार मेदनी राय के सहयोग से मालवा के सुल्तान महमूद द्वितीय को बंदी बना लिया। 1527 ई. में खानवा की लड़ाई में पराजित हो गया।

कश्मीर

- 1339 ई. में कश्मीर में पहला मुस्लिम शासन स्थापित हुआ। इसकी स्थापना शम्सुद्दीन शाह मीर ने किया।
- 1420 ई. में जैन-ऊल-आबदीन गद्दी पर बैठा। इसने कश्मीर में जजिया को हटा दिया। गोवध पर प्रतिबंध लगा दिया। इसके निर्देश पर महाभारत एवं राजतरंगिणी का फरसी में अनुवाद करवाया गया। **इसे कश्मीर का अकबर कहते है।**

भक्ति आंदोलन

- भक्ति आंदोलन का विकास दो चरणों में हुआ पहला चरण दक्षिण भारत में 7वीं सदी से 13वीं सदी तक तथा दूसरा चरण 13वीं सदी से 16वीं सदी तक पूरे भारत में हुआ।
- आठवीं सदी में शंकराचार्य का जन्म केरल के कालदी ग्राम में हुआ इन्होंने ज्ञानमार्ग को मोक्ष प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन बताया। शंकराचार्य ने अद्वैतवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।
- दक्षिण भारत में अलवार (वैष्णव) एवं नयनार (शैव) संतों ने 7वीं से 12वीं सदी के मध्य भक्ति मार्ग का प्रचार किया।
- आंडाल (गोदा) महिला अलवार थीं।

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

रामानुज

- 12वीं सदी में इनका जन्म तिरूपति के निकट हुआ था। इन्होंने सगुण भक्ति पर बल देते हुए विशिष्टाद्वैत का प्रतिपादन किया।

माध्वाचार्य

- माध्वाचार्य का जन्म उडुपी में हुआ और वह विष्णु के भक्त थे। इन्होंने द्वैतवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। ये कहते थे ईश्वर को केवल भक्ति के मार्ग से प्राप्त किया जा सकता है।

निम्बार्कचार्य

- इनका जन्म मद्रास के बेलारी में हुआ। ये कृष्ण के उपासक थे। इन्होंने द्वैताद्वैत के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

बल्लभाचार्य

- ये तेलगु ब्राह्मण थे जिनकी शिक्षा काशी में हुई। फिर कृष्णदेवराय के दरबार में चले गये। ये कृष्ण भक्ति को श्रेष्ठ मानते थे। इन्होंने शुद्धाद्वैत के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

रामानन्द

- **भक्ति आंदोलन को दक्षिण से उत्तर लाने का श्रेय है** इन्होंने राम की उपासना पर बल दिया। इनके 12 शिष्यों में कबीर (जुलाहा) सेना (नाई) रैदास (चमार) धन्न (जाट) शामिल थे। हिन्दी में उपदेश देने वाले प्रथम वैष्णव संत थे।

कबीर

- कबीर ने एकेश्वरवाद में आस्था एवं निराकार ब्रह्म की उपासना पर बल दिया। इसके उपदेशों को बीजक में संकलित किया गया है।

गुरू नानक

- इनका जन्म 1489 ई. में मृत्यु 1538 ई. में हुआ। इनके विचारों को गुरू ग्रन्थ साहिब में संकलित किया गया है।

चैतन्य

- चैतन्य महाप्रभु का जन्म नादिया जिले में हुआ था। कृष्ण की उपासना एवं भक्ति को व्यापक स्वरूप इन्होंने प्रदान किया और कीर्तन को उपासना का माध्यम बनाया।

मीरा

- मीरा राठौर वंश की बेटी और सिसोदिया वंश की बहु थी। इन्होंन कृष्ण भक्ति को अपनाया। नरसी जी का मायरो मीरा की प्रसिद्ध रचना है।

सूरदास

- यह कृष्ण भक्ति को अपनाया। इन्होंने वल्लभाचार्य से शिक्षा ली थी। सूरसागर इनकी प्रमुख रचना है।

तुलसीदास

- राम भक्ति के रूप में प्रसिद्ध है। रामचरितमानस इनकी प्रसिद्ध रचना है। अन्य रचनाएं- पार्वती मंगल, विनयपत्रिका, हनुमान बाहुक, कवितावली, दोहावली, जानकीमंगल।

महाराष्ट्र व अन्य भागों के प्रमुख भक्ति संत-

1. महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन पंढरपुर के प्रमुख देवता विठोबा (विट्ठल) के चारों ओर केंद्रित था, जो कि कृष्ण का ही एक रूप है। वारकरी संप्रदाय महाराष्ट्र का प्रमुख वैष्णव संप्रदाय है।
   नामदेव, ज्ञानेश्वर, तुकाराम और रामदास महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत थे। तुकाराम के भक्ति गीत 'अंभग' के नाम से प्रसिद्ध है। रामदास शिवाजी के आध्यात्मिक गुरू थे। 'दासबोध' उनका प्रसिद्ध ग्रन्थ है।
2. गुजरात में दादू दयाल का कार्य क्षेत्र राजस्थान था। उन्होंने 'परब्रह्म संप्रदाय' की स्थापना की।
3. आसाम में शंकरदेव ने विष्णु और कृष्ण की भक्ति के लिए 'एक शरण संप्रदाय' की स्थापना की तथा 'नामधर' आंदोलन चलाया।
4. नरसी मेहता गुजरात के प्रसिद्ध संत थे। गांधी जी का प्रिय भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहिए' मेहता जी की रचना है। उनके भजन 'सुरत संग्राम' में संग्रहित है।

सूफी आंदोलन

- इस्लाम में विभिन्न रहस्यात्मक प्रवृत्तियों एवं आंदोलनों को सूफी मत कहते है। सूफीवाद ने इस्लामी कट्टरपन को त्याग दिया। सूफी अपने ईश्वर को प्रियतमा मानते है। जिन्हें आकृष्ट करने के लिए नाच गाना और कव्वाली का भी सहारा लिया।
- प्रारम्भ में सूफी मत का केन्द्र मध्य एशिया था। महिला सूफी राबिया के काल में सूफी मत चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया।
- भारत में सूफी मत का प्रचार प्रसार लगभग 12वीं शताब्दी में शुरू हुआ। सूफी मत की अनेक विचारधारा भारत आई।

चिश्ती सिलसिला

- इसके संस्थापक मुईनुद्दीन चिश्ती गोरी के साथ भारत आए। इनकी गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र अजमेर था। इस परम्परा के अन्य सुफी कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, बाबा फरीद, निजामुद्दीन औलिया प्रमुख है।

चिश्ती संत	प्रसिद्ध नाम
ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती	गरीब नवाज
बाबा फरीद	गंज-ए-शकर
हजरत निजामुद्दीन औलिया	महबूब-ए-इलाही
नासिरूद्दीन महमूद	चिराग-ए-दिल्ली

सूफी संतो के आश्रम को 'खानकाह' और समाधि को 'दरगाह' कहते हैं।

सुहरावर्दी

- भारत में इसकी सथापना का श्रेय बदरूद्दीन जकारिया को है। इनका केन्द्र सिन्ध एवं मुल्तान था। मुल्तान में इन्होंने एक बड़ा खानकाह बनाया।

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

कादिरी सिलसिला

- इसकी स्थापना सैयद अब्बुल कादिर अल जिलानी ने किया।

सत्तारी सिलसिला

- इसके संस्थापक अब्दुल्ला सत्तारी थे। इसके महत्त्वपूर्ण संत मुहम्मद गौस थे। तानसेन ने ईरानी संगीत की शिक्षा इन्हीं से ली।

चोल साम्राज्य

- 850 ई. में विजयालय को चोल साम्राज्य का द्वितीय संस्थापक कहा जाता है। इसने पाण्ड्य से तंजौर छीनकर उरैयूर के स्थान को अपनी राजधानी बनाया। एवं नरकेसरी की उपाधि धारण की।
- परांतक प्रथम एक महत्वपूर्ण शासक हुआ जिसने पाण्ड्यों को बेल्लुर के युद्ध में पराजित कर मदुरा पर अधिकार कर लिया एवं मदुरैकोंड की उपाधि धारण की।

राजराज

- 985 ई. में राज राज शासक बना। इसकी सबसे महत्वपूर्ण विजय श्रीलंका के शासक महेन्द्रवर्मन पांचवाँ को हराकर उसकी राजधानी अनुराधापुर को नष्ट कर दिया। इस अभियान में जीते प्रदेश का नाम मामुण्डी चोलमण्डलम रखा एवं उस क्षेत्र की राजधानी पोलोनरूवा को बनाया। इसने तंजौर में प्रसिद्ध राजराजेश्वर या बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।
- राजाराज प्रथम के बाद उसका पुत्र उत्तराधिकारी राजेन्द्र प्रथम बना। जल सेना की मजबूती की वजह से बंगाल की खड़ी इसके लिए चोल झील में परिवर्तित हो गया। इसने शैलेन्द्र शासकों को अपनी अधीनता मानने के लिए बाध्य किया। उत्तर भारत के सफल अभियान के कारण इसने गंगैकोण्डचोल की उपाधि धारण की तथा इस विजय के उपलक्ष्य में कावेरी तट के निकट गंगैकोण्ड चोलपुरम नामक नयी राजधानी का निर्माण करवाया।
- चोल शासक कुलोतुंग प्रथम के समय 1077 ई. में चीनी दरबार में 92 व्यक्तियों का एक दूत मंडल भेजा गया जो एक व्यापारिक दूत मंडल था।
- चोल प्रशासन की प्रमुख विशेषता स्थानीय स्वशासन था ग्राम स्तर पर उर एवं सभा नामक दो समितियां कार्य करती थी।

चोल काल के बाद के वंश

होयसल

- इसका उदय पहाड़ी सरदार के रूप में हुआ। राजवंश के रूप में इसकी स्थापना विष्णुवर्द्धन ने की। इसका केन्द्र आधुनिक मैंसुर के निकट द्वार समुद्र था। यह रामानुज से प्रभावित था।

यादव वंश

- यह देवगिरी में स्थापित हुआ। इस राज्य की स्थापना भिल्लन ने की।

पाण्डय

- संगम काल से ही किसी न किसी रूप में पाण्डय राज्य का अस्तित्व बना रहा। 13 वीं शताब्दी में तमिल देशों में चोलों को परास्त कर अपनी शक्ति का विस्तार किया। मार्कोपोलो 1288 से 1293 ई. तक पाण्ड्य राज्य में रहा।

काकतीय

- 12 वीं शताब्दी में सक्रिय हो गया। चालुक्यों से स्वाधीनता की घोषणा प्रोलराज द्वितीय ने किया।

बहमनी राज्य

- MBT के शासनकाल में 1347 ई. में जफर खाँ ने अलाउद्दीन हसन बहमान शाह की उपाधि धारण की एवं स्वतंत्र बहमनी राज्य की स्थापना की। इसने गुलबर्गा को अपनी राजधानी बनाया।

मुहम्मद प्रथम

- बहमान शाह की मृत्यु के बाद शासक बना। इसका शासन काल 1358-1375 ई. रहा। इसकी अधिकांश समय विजय नगर के साथ संघर्ष में बीता। मुद्गल के किले पर बुक्का प्रथम के साथ संघर्ष हुआ। यही पर बारूद का पहली बार प्रयोग प्रारम्भ हुआ। प्रशासन की सुविधा के लिए बहमनी साम्राज्य को प्रांतों में बांटा:- दौलताबाद, बरार, बीदर और गुलबर्गा।
- 1397 ई. में बहमनी साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण शासक फिरोज गद्दी पर बैठा। इसने भीमा नदी के किनारे फिरोजाबाद नगर की नीव डाली। इसने दौलताबाद में वेधशाला बनाया।
- इसके बाद अहमद प्रथम गद्दी पर बैठा। इसने सर्वप्रथम गुलबर्गा के स्थान पर बीदर को अपनी राजधानी बनाया। बीदर का नया नाम मुहम्मदाबाद किया गया।
- बहमनी साम्राज्य के पतन के बाद निम्न राज्य बन बैठे।

(1) 1527 ई. में अमीर उल बरीद ने अंतिम बहमनीशासक कलिमुल्ला को खदेड़ कर बरीद शाही वंश की स्थापना की।

(2) बरार में इमादशाही वंश की स्थापना हुई।

(3) 1489-90 में युसुफ आदिल शाह ने बीजापुर में आदिल शाही वंश की स्थापना की। इसी वंश के इब्राहिम आदिल शाह ने बीदर को अपने राज्य में मिला लिया।

(4) 1490 में मलिक अहमद ने अहमद नगर में निजाम शाही वंश की स्थापना किया। 1517 में बरार को इस राज्य में मिला लिया गया।

(5) गोलकुण्डा में कुतुबशाह द्वारा कुतुबशाही वंश की स्थापना की गई।

विजय नगर साम्राज्य

- संगम के 5 पुत्रों में से हरिहर तथा बुक्का ने तुंगभद्रा नदी के उत्तरी तट पर विजय नगर शहर एवं राज्य की नीव MBT के शासन काल में 1336 ई. में डाली। इन्होंने अपने पिता के

Downloaded From www.studymasterofficial.com
Committed to Excellence

नाम पर संगम वंश की स्थापना किया।

- दोनों भाईयों ने बारी बारी से शासन किया। पहले हरिहर प्रथम उसके बाद बुक्का प्रथम गद्दी पर बैठा। बुक्का के पुत्र कुमार कम्पन ने मदुरा विजय की। इस उपलक्ष्य में उसकी पत्नी गंगादेवी ने मदुरा विजयम नामक ग्रन्थ लिखा।
- इस वंश का एक महत्वपूर्ण शासक देवराय प्रथम हुआ। इसी के शासन काल में 1420 ई. में इटली के निकोलोकोण्टी नामक यात्री विजयनगर आया। देवराय प्रथम विजय नगर का प्रथम शासक था जिसने 10,000 मुसलमानों को सेना में नियुक्त किया।
- इसकी मृत्यु के बाद देवराय द्वितीय गद्दी पर बैठा। फारस का राजदूत अर्ब्दुरज्जाक इसके समय में विजयनगर आया। देवराय द्वितीय ने स्वयं संस्कृत ग्रन्थ महानाटक एवं ब्रह्मसुत्र की रचना की।
- संगम वंश का अंतिम शासक विरूपाक्ष द्वितीय था। इसके समय सालुव नरसिंह नामक एक सेनानायक ने संगम वंश का अंत कर स्वंय सत्ता संभाल ली। इसे प्रथम बलापहार कहा जाता है।

सालुव वंश

- इस वंश के शासकों में सालुव नरसिंह एवं इम्माडि नरसिंह प्रमुख है। एक सैनानी नरसा नायक के पुत्र वीर नरसिंह ने 1505 ई. में इम्माडि नरसिंह की हत्या कर तुलुब वंश की स्थापना की। इस परिवर्तन को द्वितीय बलापहार कहा जाता है।

तुलुब वंश

- वीर नरसिंह का शासन काल अशांतिपूर्ण रहा। इसकी मृत्यु के बाद इसका छोटा भाई कृष्ण देव राय 1509 ई. में गद्दी पर बैठा।
- विजयनगर एवं बहमनी के बीच युद्ध का कारण रायचुर दोआव के क्षेत्र पर कब्जा करना था। कृष्ण देव ने अनेकों विजयों द्वारा साम्राज्य का विस्तार किया। इसने 1510 ई. में भटकल में पुर्तगालियों को किला बनाने की अनुमति दी।
- पुर्तगाली यात्री डोमिंगों पायस विजयनगर की यात्रा पर आया। इसने कृष्ण देवराय की प्रशंसा की।
- कृष्णदेव राय के दरवार में तेलगु के आठ महान विद्वान (जिसे अष्ठ दिग्गज कहा जाता है) रहते थे।
- कृष्णदेव राय ने अमुक्त माल्यदा एवं जांबवती कल्याणम नामक ग्रन्थ की रचना की।
- निर्माण के क्षेत्र में कृष्णदेव राय ने नागलपुर नामक नये नगर की स्थापना की। इसने हजारा एवं विट्ठल स्वामी नामक मंदिर का निर्माण करवाया। उसने शतरंज को प्रोत्साहन दिया।

संदाशिव राय

- इस वंश का अंतिम शासक सदाशिव राय हुआ जो 1570 ई. तक शासन किया लेकिन वास्तविक शक्ति एक मंत्री राम राजा के हाथ में रही।
- इसी के समय 1565 ई. में राक्षसी तंगड़ी (ताली कोटा) के युद्ध हुआ जिसमें एक तरह चार मुस्लिम प्रांत बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुण्ड, वीदर था। इसमें विजयनगर बुरी तरह पराजित हुआ। रामराय इस युद्ध में मारा गया।
- तिरूमल के सहयोग से सदाशिव ने पेनुकोड़ा को राजधानी बनाकर शासन करना शुरू किया।

अरविंदु वंश

- 1570 ई. में तिरूमल ने सदाशिव को पदच्युत कर चौथे राजवंश अरिवंद वंश की स्थापना किया।
- इस वंश का अंतिम शासक श्रीरंग तृतीय था। जो विजयनगर साम्राज्य का भी अंतिम शासक था।

मुगल काल

मुगलकालीन साहित्य

फारसी साहित्य

- बाबरनामा या तुजुक-ए-बाबरी: यह बाबर द्वारा तुर्की भाषा में लिखी गई उसकी आत्मकथा है। इससे तत्कालीन भारत के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है। बाबर ने 5 मुस्लिम और दो हिन्दू राज्य की बात की है। अकबर के समय रहीम खान खाना ने इसका अनुवाद फारसी में किया।

हुमायूँनामा

- बाबर की बेटी एवं हुमायूँ की बहन गुलबदन बेगम ने इसकी रचना की।

तोहफा-ए-अकबरी

- इसकी रचना अब्बास खाँ शेरवानी ने की। इससे शेरशाह की विजय में जानकारी मिलती है।

तबकात-ए-अकबरी

- निजामुद्दीन अहमद ने रचना की। इससे अकबर के समय की जानकारी मिलती है।

अकबरनामा

- अबुल फजल द्वारा रचित है। इससे अकबर के विषय में जानकारी मिलती है।

तुजुक-ए-जहाँगीरी

- जहाँगीर द्वारा स्वंय लिखी उसकी आत्मकथा है।

पादशाहनामा

- अब्दुल हमीद लाहौरी द्वारा रचित हैं इसमें शाहजहाँ के शासनकाल के 20 वर्षों का उल्लेख है।
- **कुछ ग्रन्थ का फारसी में अनुवाद**

महाभारत – 1589 ई. में बदायूँनी ने रज्मनामा के नाम से
अथर्ववेद – हाजी इब्राहिम सरहिन्दी
राजतरंगिणी – मौलाना मुहम्मद शाहाबादी

Downloaded From www.studymasterofficial.com

भागवत पुराण- टोडरमल

अथर्ववेद - इब्राहिम सरहिन्दी

भगवद्‌गीता, योगवशिष्ठ एवं बावन उपनिषदों का 'सिर्र-ए-अकबर' नाम से अनुवाद दाराशिकोह की देखरेख में।

लिलावती - फैजी

हिन्दी साहित्य

- अकबर ने बीरबल को कविप्रिय की उपाधि प्रदान की। कश्मीर के कवि मुहम्मद हुसैन को जर्रीकलम की उपाधि दी।

बाबर

- बाबर पितृपक्ष की ओर से तैमुर के 5वें पीढ़ी के सदस्य थे जबकि मातृपक्ष की ओर से चंगेल खाँ के 14वें वंश का अंग था। 1494 ई. में बाबर फरगना का शासक बना। बाबर ने अपने पूर्वजों की उपाधि मिर्जा को त्याग कर बादशाह की नई उपाधि धारण की।
- बाबर का भारत की ओर पहला अभियान युसुफजाई जाति के विरूद्ध था। इस प्रथम अभियान में सर्वप्रथम बाबर ने तोपखाने का प्रयोग किया।
- भारत पर 5वें अभियान में बाबर और इब्रहिम लोदी के बीच 20 अप्रैल 1526 ई. पानीपत की प्रथम लड़ाई हुआ। बाबर ने इस युद्ध में पहली बार तुलुगमा युद्ध नीति का प्रयोग किया। इसके फलस्वरूप बाबर विजयी रहा और मुगल वंश की स्थापना स्वरूप की।
- बाबर ने इस विजय के उपलक्ष्य में प्रत्येक काबुल निवासी को एक चाँदी का सिक्का उपहार दे दिया। इसी उदारता के कारण उसे कलन्दर की उपाधि दी गई।
- 1527 ई. में खानवा के युद्ध में बाबर एवं राणा सांगा के बीच मुकाबला हुआ। बाबर ने अपने सैनिकों के उत्साहवर्द्धन के लिए शराब पीने और बेचने पर प्रतिबंध लगा दिया। मुसलमानों से तमगा कर न लेने का ऐलान किया। फलस्वरूप बाबर विजयी रहा।
- 1528 ई. में बाबर ने चंदेरी के युद्ध में मेदनी राय को पराजित किया।
- 1529 ई. में बाबर ने घाघरा के युद्ध में बंगाल एवं बिहार की संयुक्त सेना को पराजित किया।
- काबुल के विद्रोह के दमन के लिए जाते हुए लाहौर में 1530 ई. को बाबर की मृत्यु हो गयी। काबुल में उसे दफना दिया गया।

हुमायूँ

- बाबर की मृत्यु के बाद 30 दिसम्बर 1530 ई. को 23 वर्ष की उम्र में गद्दी पर बैठा।
- हुमायूँ ने दिल्ली के पास दीन पनाह नामक नगर बनवाया।
- चितौड़ की रानी कर्णावती ने हुमायूँ के पास राखी भेजी थी।
- हुमायूँ ने बंगाल अभियान के दौरान गौड़ का नया नाम जन्नताबाद रखा।
- 26 जुन 1539 ई. को चौसा के मैदान में मुगल सेना पर रात में शेरशाह ने हमला कर मुगल सेना को पराजित किया। हुमायूँ आगरा आ गया।
- 17 मई 1540 का कन्नौज या बिलग्राम का युद्ध हुआ। इसमें हुमायूँ पराजित हुआ। शेर खाँ ने आगरा और दिल्ली पर अधिकार कर लिया।
- आगरा, दिल्ली खोने के बाद हुमायूँ सिन्ध पहुंचा वहां उसने हिन्दाल के आध्यात्मिक गुरू फारसीवासी मीर बाबा की पुत्री हमीदा बानू बेगम से 1541 ई. में विवाह किया। इसके बाद अमर कोट के राणा बीरसाल के पास पहुंचा। 1542 ई. में यही अकबर का जन्म हुआ। 1543 ई. में फारस के शाह तहमास्प के यहां चला गया।
- फरवरी 1555 में हुमायूँ लाहौर पर अधिकार कर लिया। मई 1555 ई. में हुए मच्छीवाड़ा के युद्ध के फलस्वरूप सम्पूर्ण पंजाब पर अधिकार कर लिया। जुन 1555 ई. में सरहिन्द के युद्ध में अफगान सुल्तान सिकन्दर सूर को पराजित कर दिल्ली पर अधिकार कर लिया।
- 23 जुलाई 1555 को हुमायूँ फिर दिल्ली की गद्दी पर बैठा। जनवरी 1556 ई. में दीनपनाह भवन में स्थित पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरने के कारण हुमायूँ की मृत्यु हो गयी।

सूर वंश

- शेर शाह के पिता हसन खाँ पंजाब में आकर बसे। शेर शाह का जन्म 1472 ई. में यहीं हुआ। उसके बचपन का नाम फरीद था। एक दिन शेर के शिकार करने में वीरता से प्रभावित होकर खाँ लोहानी ने शेर खाँ की उपाधि दी। कन्नौज विजय के बाद शेर शाह की उपाधि धारण की।
- शेरशाह ने उत्तरी पश्चिमी सीमा की सुरक्षा के लिए एक शक्तिशाली रोहतासगढ़ किले का निर्माण करवाया।
- कालिंजर के किले के घेरे के दौरान तोप के गोले के फटने से शेरशाह की मृत्यु 1545 ई. में हो गयी।
- शेरशाह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र इस्लाम शाह 1545 से 1553 तक शासन किया। यह अपनी राजधानी आगरा से ग्वालियर ले गया।
- इस्लाम शाह की उसके चाचा मुबारिज खाँ ने हत्या कर दी एवं आदिलशाह सुर के नाम से वह शासक बना।
- शेरशाह ने शुद्ध चांदी का रूपया तथा तांबे के दाम ढलवाए जो 180 ग्राम (178 ग्रेन) का था। शेरशाह दिल्ली में पुराना किला का निर्माण करवाया। शेरशाह का मकबरा सासाराम (बिहार) में है।

अकबर

- 1551 ई. में 9 वर्ष की उम्र में अकबर को गजनी की सुबेदारी सौपी गयी। 1555 में अकबर लाहौर का गवर्नर बना।
- हुमायूँ की मृत्यु के बाद बैरम खाँ ने गुरूदासपुर के निकट

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

कलानौर में फरवरी 1556 ई. में अकबर का राज्याभिषेक करवाया।

- पानीपत के द्वितीय युद्ध में अफगान सेनापति हेमू को पराजित कर दिल्ली पर मुगलों के अधिकार को स्थायी बनाया। हेमु आदिल शाह सूर का सेनापति था उसने 24 युद्धों में 22 युद्ध जीता था।
- अकबर 1556-1560 तक बैरम खाँ का संरक्षक रहा। अकबर ने बैरम खाँ को मक्का की यात्रा पर जाने को कहा। पाटन में मुबारक खाँ नामक अफगान युवक ने बैरम खाँ की हत्या कर दी। अकबर ने बैरम खाँ की विधवा से विवाह कर उसके पुत्र को खान-खाना की उपाधि दी।
- 1560 में बैरम खाँ से मुक्त होकर हरम दल के प्रभाव में चला गया। इस दल की प्रमुख धाय माँ माहम अनगा थी। यह काल 1562 ई. तक रहा। इसे पेटीकोट सरकार कहते है।
- अकबर ने राजनीतिक विजय की शुरूआत 1561 ई. में मालवा विजय से शुरू की जहाँ बाज बहादुर शासक था। 1562 ई. में ही आमेर के राजा भारमल ने स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार कर लिया और अपनी पुत्री की शादी अकबर से कर दी जिससे जहांगीर पैदा हुआ। इसी वंश के भगवान दास एवं मानसिंह को उच्च मनसब पद प्राप्त हुआ।
- 1568 ई. में चितौड अभियान किया। उदय सिंह शासक था। युद्ध में जयमल एवं फत्ता मारे गए। आगरा में जयमल एवं फत्ता की मूर्ति अकबर ने लगवायी। उदय सिंह की मृत्यु की बाद महाराणा प्रताप शासक बना। 1576 ई. में हल्दीघाटी के युद्ध में राणा पराजित हुआ। 1597 ई. में राणा की मृत्यु के बाद अमर सिंह शासक बना।
- 1600 ई. में अहमदनगर पर कब्जा कर लिया गया।
- 1602 ई. में सलीम के कहने पर वीर सिंह बुन्देला ने अबुल फजल की हत्या कर दी। 1605 ई. में अकबर की मृत्यु हुई। उसका मकबरा सिकंदरा (आगरा) में है।

जहाँगीर

- 1605 ई. में फतेहपुर सिकरी में अकबर की मृत्यु के बाद जहाँगीर शासक बना। सलीम का जन्म फतेहपुर सिकरी में स्थित सलीम चिश्ती की कुटिया में भारमल की बेटी मरियम उज्जमानी के गर्भ से 30 अगस्त 1569 ई. को हुआ। अकबर जहाँगीर को शेखों बाबा के नाम से पुकारता था। सलीम की शादी 1585 ई. में आमेर के राजा भगवान दास की पुत्री मानबाई से हुआ।
- शासक बनने के बाद आगरा में जहाँगीर ने सोने की न्याय की जंजीर लगवायी। लोक कल्याण के कार्यों से संबंधित 12 आदेशों की घोषणा की।
- जहाँगीर ने सिक्खों के पंचम गुरू अर्जुन देव को खुसरों की सहायता करने के आरोप में मृत्युदण्ड दिया गया।
- 1611 ई. में जहाँगीर ने नूरजहाँ से शादी किया। इसका वास्तविक नाम मेहरून्निसा था। इसकी पहली शादी अली कुली वेग जिसे शेर अफगान भी कहते हैं, से शादी हुई थी।
- जहाँगीर के शासन काल में मेवाड़ ने अंतिम रूप से मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली। राणा अमर सिंह ने अपने पुत्र कर्ण सिंह को मुगल मनसवदारी में शामिल होने के लिए भेजा।
- 7 नवम्बर 1627 में भीमवार नामक स्थान पर जहाँगीर की मृत्यु हो गयी उसे लाहौर के शहादरा में रावी नदी के किनारे दफनाया गया।
- नूरजहाँ की माँ अस्मत वेग ने गुलाब से इत्र निकालने की विधि को खोजा।

शाहजहाँ

- शाहजहाँ का वास्तविक नाम खुर्रम था। इसका जन्म जोधपुर की राजकुमारी जोधाबाई के गर्भ से हुआ था। उसके अनेकों विवाह में सबसे प्रमुख आसफ खाँ की पुत्री अर्जुमन बानू बेगम (जिसे मुमताज-ए-महल कहा जाता है।) से किया।
- जहाँगीर की मृत्यु के बाद 6 फरवरी 1628 को आगरा में राज्यभिषेक हुआ। नूरजहाँ को 2 लाख रुपया वार्षिक पेंशन दे कर लाहौर भेज दिया गया जहाँ 1645 ई. को उसकी मृत्यु हो गयी।
- शाहजहाँ की महत्त्वपूर्ण विजय अहमदनगर रही। 1633 ई. में इसे मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।
- 1657 ई. में शाहजहाँ बीमार पड़ा। उत्तराधिकार का युद्ध शुरु हो गया। इस समय औरंगजेब दक्षिण का, मुराद गुजरात का, शुजा बंगाल का गवर्नर था।
- धरमट के युद्ध में दारा (जसवंत सिंह) पराजित हुआ। विजय की स्मृति में औरंगजेब ने फतेहाबाद नगर बसाया।
- 1659 ई. सामूगढ़ के युद्ध में दारा अंतिम रूप में पराजित हुआ।
- शाहजहाँ आगरा के किले में अपनी बेटी जहाँआरा के साथ 1666 तक रहा। जनवरी 1666 ई. में इसकी मृत्यु हो गयी। मुमताज महल के पास में इसे दफनाया गया।

औरंगजेब

- जुलाई 1658 को औरंगजेब बादशाह बना। इसे जिन्दा पीर, शाही दरवेश इत्यादि नामों से पुकारा जाता है। आलमगीर उसकी उपाधि थी।
- औरंगजेब की साम्राज्यवादी नीति की महत्त्वपूर्ण सफलता दक्कन रहा। 1686 ई. में उसने बीजापुर तथा 1687 ई. में गोलकुण्डा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- मराठा पर नियंत्रण के लिए शाइस्ता खाँ को 1660 में दक्कन का सूबेदार बनाया। 1663 ई. में शिवाजी ने आक्रमण कर शाइस्ता खाँ को घायल कर दिया। 1665 ई. में जय सिंह ने शिवाजी के साथ पुरन्दर की संधि की।

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

सिक्ख

- सिक्ख धर्म की स्थापना गुरु नानक द्वारा की गई इसके दूसरे गुरू अंगद थे। चौथे गुरु रामदास के समय गुरु का पद वंशानुगत हो गया। इन्हें अकबर ने अमृतसर में जमीन प्रदान की जिस पर स्वर्ण मंदिर का निर्माण हुआ।
- 5वें गुरु अर्जुन देव ने गुरु ग्रन्थ साहिब (आदिग्रन्थ) का संकलन किया। 1606 ई. में जहाँगीर ने मृत्युदण्ड दिया। इन्होंने अनिवार्य आध्यात्मिक कर लगाए।
- 6वें गुरु हरगोविन्द ने सिक्खों का सैनिकीकरण किया।
- अंतिम गुरु गुरु गोविन्द सिंह थे जिसने खालसा पंथ की स्थापना किए।

मराठा

- शिवाजी का जन्म पूना के निकट शिवनेर के किले में जीजावाई के गर्भ से हुआ। इनके पिता का नाम शाहजी था। शिवाजी के उपर उसके माता, संरक्षक दादाजी कोण्डदेव एवं गुरु रामदास का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा।
- शाहजी ने शिवाजी को पूना की जागीर प्रदान की और स्वयं बीजापुर की नौकरी कर ली।
- 1656 ई. में शिवाजी ने रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया। 16 जुन 1674 को शिवाजी ने रायगढ़ में प्रसिद्ध विद्वान गंगाभट्ट द्वारा अपना राज्याभिषेक करवाया। और छत्रपति, हिन्दू धर्मोद्वारक की उपाधि धारण की।
- 1680 ई. में शिवाजी की मृत्यु को गयी।
- शिवाजी को प्रशासन के कार्य में सहायता के लिए अष्टप्रधान परिषद थी। इसमें पेशवा की भूमिका सर्वाधिक प्रमुख थी।
- शिवाजी के बाद शम्भुजी (शम्भा जी) शासक बना। 1689 ई. में शम्भा जी एवं उसके सलाहकार कविकलश को संगमेश्वर के किले से पकड़कर उनकी हत्या कर दी गई।
- शम्भा जी के बाद छत्रपति राजाराम (1689-1700) शासक बना। राजाराम 1700 ई. में मुगलों के साथ संघर्ष में मारा गया। इसकी विधवा तारबाई थी।

मुगल प्रशासन

- अकबर ने स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि घोषित किया। उसने खलीफा के समान स्वयं ही खुतबा पढ़ा और जमीबोस और सिजदा की प्रथा आरम्भ किया। 1579 ई. में मजहर की घोषणा के बाद धार्मिक मामलों का प्रधान बन गया।
- अकबर के शासन में 1580 ई. में 12 सूबा था। शासन के अंत में 15 हो गए। औरंगजेब के समय 20 तथा शाहजहाँ के समय सूबों की संख्या 18 थी।
- अकबर के समय राजस्व निर्धारण के पूर्व भूमि की माप कराई जाती थी। 1587 ई. में अकबर ने सन के रस्सी से निर्मित सिकन्दरी गज के स्थान पर इलाही गज का प्रयोग प्रारम्भ किया। अकबर ने 1580 ई. में दहसाला नामक नवीन प्रणाली को प्रारम्भ किया। इसकी देखरेख राजा टोडरमल करते थे।
- अकबर ने सूर्य पर आधारित इलाही संवत को चलाया। इसे फसली संवत भी कहा जाता है।
- मनसबदारी प्रथा की शुरुआत अकबर ने किया। मनसब शब्द का प्रथम उल्लेख अकबर के शासन के 11वें वर्ष में मिलता है। किन्तु मनसब प्रदान करने का उल्लेख 1577 ई. में मिलता है। पहले जात शब्द का उल्लेख होता था किन्तु 1594-95 से सवार कर पद भी जुड़ने लगा।
- अकबर ने दाग प्रथा का प्रचलन किया। अकबर के समय मनसबदारों की संख्या 1803 थी जो औरंगजेव के समय 14449 हो गयी।
- जहाँगीर ने सवार पद में दुआस्पा-सिहआस्पा की व्यवस्था की।
- 1604-05 में सबसे पहले पुर्तगालियों द्वारा तम्बाकू लाया गया।
- मुगल काल में नहर निर्माण का श्रेय शाहजहाँ को है। उसने फैज एवं शाह नहर का निर्माण करवाया।
- मुगल काल में बाबर ने चाँदी का शाहरुख एवं बाबरी नाम का सिक्का चलाया। अकबर ने सोने के अशर्फी सिक्का चलाया। अकबर के तांबें के सिक्के दाम कहलाए।
- 1 रुपया = 40 दाम
- जहाँगीर ने निसार (रुपया का चौथाई) नाम का सिक्का चलाया।
- अकबर के काल में केवल 4 ही मंत्री पद थे। वकील, दीवान (वजीर), मीर बख्शी एवं सद्र।

वकील - अकबर के काल में मुगल प्रधानमंत्री को वकील कहा जाता था। इसे सैनिक तथा असैनिक दोनों मामलों में अधिकार प्राप्त थे। बैरमखां के पतन के बाद अकबर ने एक नया पद **दीवान-ए-वजारत-ए-कुल** की स्थापना की और धीरे-धीरे वकील के एकाधिकार को समाप्त करके उसके अधिकारों को दीवान, मीरबख्शी और सद्र-उस-सुदूर में बांट दिया।

दीवान - यह वित्त एवं राजस्व का सर्वोच्च अधिकारी होता था। इसे वजीर भी कहा जाता था। मुगल बादशाहों के काल में - मुजफ्फर खाँ तुरबती, राजा टोडरमल, एवाजशाह मंसूर (अकबर कालीन) एत्मादुद्दौला (जहांगीर), सादुल्ला खां (शाहजहां कालीन) और असद खां (औरंगजेब कालीन) मुख्य दीवान थे। मुगल काल में असद खां सर्वाधिक 31 वर्ष दीवान के पद पर कार्यरत रहा। दीवान वित्त मंत्री होने के बावजूद अपनी इच्छा से धन व जागीर नहीं दे सकता था। किन्तु वह खलिसा, जागीर और इनाम आदि जमीनों का केन्द्रीय अधिकारी होता था। दीवान की सहायता के लिए अन्य अधिकारी भी होते थे - **दीवाने खालिसा** (शाही भूमि की देखभाल करने वाला अधिकारी) **दीवान-ए-तन** (वेतन तथा जागीरों की देखभाल करने वाला) **मुस्तौफी** (आय-व्यय का निरीक्षक) तथा मुशरिफ।

मीर बख्शी - मीर बख्शी सैन्य विभाग का सर्वोच्च अधिकारी होता था। इस पद का विकास अकबर के काल में शुरू हुआ था। मीर बख्शी का प्रमुख कार्य सैनिकों की भर्ती, उसका हुलिया रखना, रसद प्रबंध, सेना में अनुशासन इत्यादि कार्य थे। मीर बख्श द्वारा 'सरखत' नामक पत्र पर हस्ताक्षर

Downloaded From www.studymasterofficial.com

करने के बाद ही सेना का 'मासिक वेतन' निर्धारित होता था। प्रान्तों में **'वाकयानवीस'** मीर बख्शी को सीधे सूचना देते थे।

मीर-ए-सॉमा – घरेलू मामले का प्रधान होता था। वह सम्राट परिवार, महल तथा उसकी दैनिक आवश्कताओं की पूर्ति करता था। यह पद बहुत ही विश्वासी व्यक्ति को दिया जाता था।

सद्र-उस-सुदूर (सद्र-ए-कुल) – यह धार्मिक मामलों में बादशाह का सलाहकार होता था उसका प्रमुख कार्य दान-पुण्य की व्यवस्था करना, धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था करना, विद्वानों को कर मुक्त-भूमि एवं वजीफा प्रदान करना तथा इस्लामी कानूनों के पालन को समुचित व्यवस्था करना था। सद्र-उस-सुदूर को **'शेख-उल-इस्लाम'** भी कहा जाता था। सद्र-उस-सुदूर को कभी-कभी मुख्यकाजी का भी पद दिया जाता था। अर्थात् जब वह न्याय विभाग के प्रमुख के रूप में कार्य करता था तब उसे **'काजी-उल-कुजात'** कहा जाता था।

मुगलकाल के अन्य उच्चाधिकारी

मीर-आतिश	यह शाही तोपखाने का प्रधान था।
साहिब-तौजीह	यह सैनिक लेखाधिकारी होता था।
दीवान-ए-तन	यह वेतन और जागीरों से सम्बंधित मामलों का निपटारा करता था।
दरोगा-ए-डाक	गुप्तचर विभाग का प्रमुख। पत्र व्यवहार का प्रभारी।
मीर-ए-अर्ज	बादशाह के पास भेजे जाने वाले आवेदन-पत्रों का प्रभारी।
मीर-ए-बहर	जल सेना का प्रधान
मीर-ए-तुजुक	इसका कार्य धार्मिक उत्सव का प्रबंध करना था।
मीर-ए-बर्र	यह वन विभाग का अधीक्षक था।
नाजिर-ए-बयूतात	शाही कारखानों का अधिक्षक।
वाकिया-नवीस तथा स्वानिध-निगार	समाचार लेखक
खुफिया-नवीस	गुप्त पत्र लेखक जो केन्द्र को महत्वपूर्ण खबरें उपलब्ध कराते थे।
हरकारा	जासूस एवं संदेश वाहक
वितिक्ची	अकबर के काल में दरबारी घटनाओं को लिखने के लिए इनकी नियुक्ति की गई। इसके अतिरिक्त यह प्रांतों की भूमि एवं लगान सम्बंधी कागजात तैयार करता था।
मुशरिफ	राज्य की आय-व्यय का लेखा-जोखा रखता था।
मुस्तौफी	यह मुशरिफ द्वारा तैयार आय-व्यय के लेखा-जोखा की जांच करता था।
मुसद्दी	यह बंदरगाहों के प्रशासन की देखभाल करता था।

मुगलकालीन मुद्रा व्यवस्था

अकबर के काल में दिल्ली में एक शाही टकसाल का निर्माण हुआ जिसका प्रधान अब अब्दुस्समद को नियुक्त किया गया। मुगलकाल में टकसाल का अधिकारी दरोगा के नाम से जाना जाता था। अबुल फजल लिखते हैं – मुगलकाल में स्वर्ण सिक्कों के निर्माण के लिए 4 टकसालें, चांदी सिक्कों के लिए 14 टकसालें एवं तांबे के सिक्कों के लिए 42 टकसालें थी। जहांगीर कालीन कुछ सिक्कों पर जहांगीर को हाथ में शराब का प्याला लिये हुए दर्शाया गया है जबकि अकबर के सिक्कों पर राम-सीता की आकृति व सूर्य-चन्द्र की महिमा में लिखे कुछ पद्य भी प्राप्त होते हैं। अकबर द्वारा असीरगढ़ विजय की स्मृति में कुछ सिक्कों पर बाज की आकृति अंकित कराई गई।

मुहर – यह अकबर कालीन स्वर्ण सिक्का था। इसका मूल्य नौ रूपये था।

शंसब – यह भी अकबर कालीन सबसे बड़ा स्वर्ण सिक्का था। जो 101 तोले का होता था।

इलाही – यह अकबर द्वारा प्रचलित वृत्ताकार स्वर्ण सिक्का था। यह 10 रुपये मूल्य का होता था।

रूपया – यह एक 175 ग्रेन का शुद्ध चांदी का सिक्का था।

जलाली – यह चांदी का वर्गाकार या चौकोर सिक्का होता था।

दाम – यह तांबे का सिक्का था। जो रूपये के चालीसवें भाग के समतूल्य था।

जीतल – तांबे का सबसे छोटा सिक्का होता था। इसे फुलूस अथवा पैसा कहा जाता था। यह दाम के पच्चीसवें भाग के समतुल्य था।

निसार – जहांगीर कालीन तांबे का सिक्का। रूपये के चौथाई मूल्य के समतुल्य।

आना – यह सिक्का दाम एवं रूपये के मध्य का था।

माप की इकाई

सिकंदरी गज – 39 अंगुल या 32 इंच

इलाही गज – 41 अंगुल या 33 इंच

कोवाड़ – यह दक्षिण भारत मे प्रचलित सूती और ऊनी वस्त्रों के नाप की इकाई थी।

बहार – अरब व्यापारियों द्वारा इस ईकाई को समुद्री तटों पर नाप-तौल करने को लागू किया गया था।

कैण्डी – यह गोवा में प्रचलित माप-तौल की इकाई थी।

राजपूत नीति

- अकबर ने राजपूतों के साथ सुलह-ए-कुल की नीति अपनाया। अकबर ने बीकानेर के शासक राय कल्याणमल और जैसलमेर के राजा हरराय के साथ भी वैवाहिक संबंध स्थापित किया। 1584 ई. में अकबर ने भगवानदास की पुत्री से जहाँगीर का विवाह किया जिससे खुसरो का जन्म हुआ।

मुगलों की धार्मिक नीति

- अकबर ने 1562 ई. में युद्ध बंदियों को दास बनाने की प्रथा

Downloaded From www.studymasterofficial.com

को बंद कर दिया। 1563 ई. में अकबर ने हिन्दू तीर्थ स्थल (मथुरा) की यात्रा की और तीर्थ कर समाप्त कर दिया। 1564 ई. में जजिया कर समाप्त कर दिया। 1565 ई. में बल पूर्वक धर्म परिवर्तन पर रोक लगा दी।

- 1575 ई. में अकबर ने फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना की स्थापना की जिसका उद्देश्य धार्मिक बाद विवाद द्वारा सभी धर्मों के सार को जानना था। जैन विद्वान हरिविजय सूरी एवं जिन सेन सूरी भी भाग लिया।
- जून 1579 ई. में दीन-ए-इलाही (तहकीक-ए-इलाही) नामक धर्म का प्रवर्तन किया। दीन-ए-इलाही में शिक्षा के लिए इतवार का दिन नियत था। इस धर्म को स्वीकार करने वाला एक मात्र हिन्दू बीरबल था।
- अकबर के दरबार में नवरत्न रहते थे जिसमें अधिकांश हिन्दू थे। नवरत्न में बीरबल, टोडरमल आदि थे। टोडरमल को जब्ती प्रणाली का जनक माना जाता है। भगवान दास, तान सेन, फैजी, भी थे। फैजी अबुल फजल का बड़ा भाई था।
- शाहजहाँ के काल में तीर्थ यात्रा कर को पुनः लगाने की आज्ञा दी गई।
- औरंगजेब ने इस्लाम धर्म के नियमों के पालन कराने के उद्देश्य से दीवान-ए-मुलाजिम नामक विभाग बनाया जिसका प्रमुख अधिकारी मोहतसिव था।
- औरंगजेब ने झरोखा दर्शन, दरबार में नृत्य संगीत, टीका प्रथा, नवरोज त्योहार पर प्रतिबंध लगा दिया। 1669 ई. में मुहर्रम का त्योहार मनाने पर प्रतिबंध लगा दिया।
- 1679 ई. में जजिया कर पुनः लगा दिया।
- मुगल काल में धर्म की भाषा अरबी थी। फारसी दरबार की सरकारी भाषा थी।

शिक्षा

- बाबर ने शिक्षा के विकास के लिए शुहरत ए आम नामक विभाग की स्थापना की जिसका कार्य स्कूलों एवं कालेजों का निर्माण करना था। हुमायूँ ने पुराने किले के शेरमंडल नाम के हॉल में अपना पुस्तकालय बनाया। अकबर ने अनुवाद विभाग की स्थापना की।

मुगलकालीन स्थापत्य

- बाबर ने आगरा में रामबाग एवं जोहरा बाग नामक दो बगीचे बनवाए।
- हुमायूं ने 1533 ई. में दिल्ली में दीनपनाह बनाया जिसे आज पुराना किला कहा जाता है। इसकी मृत्यु के बाद 1564 ई. में इसकी पत्नी हमीदा बानू बेगम ने इसका मकबरा बनवाया।
- शेरशाह ने दीनपनाह को तुड़वाकर उसके स्थान पर पुराने किले का निर्माण करवाया। इसी किले में किला-ए-कुहना मस्जिद का निर्माण करवाया।
- अकबर ने 1566 में आगरा के किले का निमार्ण करवाया। इस किले में अकबर ने जहाँगीर महल का निर्माण करवाया जो पूर्णतः हिन्दू शैली में बना है। इसके अलावा इलाहावाद एवं लाहौर के किले का निर्माण करवाया। अकबर ने फतेहपुर में अपनी राजधानी का निर्माण कार्य भी किया। 1571 ई. में इसे राजधानी बनाया।
- जहाँगीर के काल में सिकन्दरा स्थित अकबर का मकबरा एवं नूरजहाँ के पिता एतामादुद्दौला का मकबरा मुख्य है। एतमादुद्दौला के मकबरे को हुमायूँ के मकबरे एवं ताजमहल के बीच की कड़ी माना जाता है।
- शाहजहाँ ने दिल्ली में लाल किला का निर्माण करवाया। 1638 ई. में शाहजहाँ ने दिल्ली में नई राजधानी बनाने के उद्देश्य से शाहजहाँ जहानाबाद की नीव रखी। दिल्ली स्थित जामा मस्जिद का निर्माण इसी ने किया। ताजमहल का निर्माण भी इसी समय हुआ।
- औरंगजेब ने दिल्ली के लाल किले में मोती मस्जिद का निर्माण करवाया।

शासक	निर्माण-कार्य
बाबर	काबुली बाग मे स्थित मस्जिद (पानीपत)
	जामी मस्जिद (संभल)
	आगरे की मस्जिद आगरा (लोदी किले के भीतर)
हुमायूँ	फतेहाबाद की मस्जिद (पंजाब)
	दीनपनाह नगर (दिल्ली।)
हाजी बेगम (अकबर की सौतेली माँ)	हुमायूँ का मकबरा (दिल्ली)
अकबर	आगरा का किला (आगरा)
	जहांगीर महल (आगरा)
	अकबरी महल (आगरा)
	जहांगीरी महल (फतेहपुर सीकरी)
	दीवाने आम (फतेहपुर सीकरी)
	दीवाने खास (फतेहपुर सीकरी)
	हवा महल या पंचमहल (फतेहपुर सीकरी)
	मरियम महल (फतेहपुर सीकरी)
	जामा महल (फतेहपुर सीकरी)
	बुलंद दरवाजा (फतेहपुर सीकरी)
	शेख सलीम चिश्ती का मकबरा (फतेहपुर सीकरी)
	लाहौर का किला (लाहौरा)
	इलाहाबाद में चालीस स्तम्भों वाला किला (अकबर कालीन अंतिम इमारत)
जहाँगीर	अकबर का मकबरा (सिकंदारा)
नूरजहाँ	एत्मादुद्दौला का मकबरा (आगरा)
	जहाँगीर का मकबरा (शहादरा-लाहौर)
शाहजहां	दीवाने आम (आगरा),
	दीवाने खास (आगरा)
	मच्छी भवन (आगरा)
	शीशमहल (आगरा)
	खास महल (आगरा)
	शाह बुर्ज (आगरा)
	नगीना मस्जिद (आगरा)

Downloaded From www.studymasterofficial.com

मोती मस्जिद (आगरा)
जहाँआरा – जामी मस्जिद (आगरा)
शाहजहाँ – शाहजहाँनाबाद (दिल्ली)
जामा मस्जिद (दिल्ली)
लाल किला (दिल्ली)
दीवाने आम (दिल्ली)
दीवाने खास (दिल्ली)
मोती महल (दिल्ली)
हीरा महल (दिल्ली)
रंग महल (दिल्ली)
नहरे बहिश्त (दिल्ली)
दीवाने आम (लाहौर)
शाह बुर्ज (लाहौर)
शीश महल (लाहौर)
नौलखा महल (लाहौर)
ख्वाब महल (लाहौर)
औरंगजेब –राबिया-उद-दुर्रानी का मकबरा (औरंगाबाद)
बादशाही मस्जिद / बीबी का मकबरा (लाहौर)
मोती मस्जिद (दिल्ली-लाल किले के भीतर स्थित)

मुगलकालीन साहित्य एक नजर में

तुर्की भाषा – तुजुके-बाबरी/बाबरनामा (स्वंय बाबर द्वारा लिखित आत्मकथा)
दीवान (बाबर का काव्य संग्रह)
रिसाल-ए-उसज/ खत-ए-बाबरी (बाबर)
मुबइयान (बाबर की काव्य शैली)
फारसी भाषा – हुमायूँनामा – गुलबदन बेगम (बाबर की पुत्री)
तारीखे रसीदी– मिर्जा हैदर दोगलत (बाबर का मौसेरा भाई)
तजकिरात-उल-वाकयात – जौहर आफताबची (हुमायूँ का पुराना नौकर)
वाकयात-ए-मुश्ताकी – रिजकुल्लाह मुश्ताकी
तोहफा-ए-अकबरशाही – अब्बास खां सरवानी
नफाइस-उल-मासिर – मीर अलाउल्ला कजवीनी
तारीखे-ए-अल्फी – मुल्ला दाउद
अकबरनामा/आइने अकबरी – अबुल फजल
मुंतखब-उल-तवारिख – अब्दुल कादिर बदायूँनी
तककाते-अकबरी – निजामुद्दीन अहमद
तुजुके जहाँगरी (जहाँगीर की आत्मकथा) – जहाँगीर – मौतमिद खां, मुहम्मद हादी
इकबालनामा-ए-जहाँगीरी – मौतमिद खां बख्शी
मआसिरे-जहाँगीरी – ख्वाजा कामगार
पादशाहनामा – मुहम्मद अमीन कजमीनी (ने प्रारंभ किया)
पादशाहनामा – अब्दुल हमीद लाहौरी – मुहम्मद वारिस ने पूर्ण किया।
अमल-ए-सालेह – मुहम्मद सालेह
चहार- चमन – चन्द्रभान
शाहजहाँनामा – इनायत खां
आलमगीरनामा – काजिम शिराजी
वाकयात-ए-आलमगीरी – आकिल खां
फुतूहात-ए-आलमगीरी – ईश्वरदास नागर
मासिर-ए-आलमगीरी – साकी मुसतइद खां
मुल्तखब-उल-लुबाब – खफी खां
नुक्सा-ए-दिलकुशाँ – भीमसेन सक्सेना बुरहानपुरी
खुलासत-उत-तवारिख – सुरजन राय भंडारी
मज्म-उल-बहरीन – दाराशिकोह

मुगलकालीन अनुवादित पुस्तकें

फारसी भाषा – महाभारत के विभिन्न भागों का रज्मनामा के नाम से संकलन – बदायूँनी, नकीब खां एवं अब्दुल कादिर।
रामायण – अब्दुल कादिर बदायूंनी
अथर्ववेद – हाजी इब्राहिम सरहिन्दी
भागवतपुराण – राजा टोडरमल
भगवद्गीता – दारा शिकोह
योगवाशिष्ठ – दारा शिकोह
बावन उपनिषद (सिर्र-ए-अकबर) – दारा शिकोह
कालियादमन (अयार-ए-दानिश) – अबुल फजल
पंचतंत्र (कालीला एवं दिमना) – मौलाना शाह मोहम्मद शाहाबादी
राजतरंगिणी – फैजी
लीलावती (गणित की पुस्तक)- अब्दुर्रहीम खानखाना एवं पायन्दा खां
बाबरनामा तजक या तुजुक (ज्योतिष ग्रंथ) – मुकम्मल खां गुजराती
नलदमयंती – फैजी

चित्रकला

- बाबर के समय फारस का प्रसिद्ध चित्रकार ''बिहजाद'' (पूर्व का रैफेल) भारत आया था। वास्तविक रूप से मुगल चित्रकला की नींव हुमायूँ के शासन काल में पड़ी। मुगल चित्रशाला में मुगल कालीन चित्र संग्रह **'हम्जनामा'** के नाम से जाना जाता है। जिसको **'दास्ताने-अमीर-हम्जा'** भी कहते हैं।
- जहांगीर की आत्मकथा तुजुके जहांगीरी में उल्लेख है कि – कोई भी चित्र चाहे वह किसी भी चित्रकार के द्वारा बनाया गया हो मै देखते ही तुरन्त बता सकता हूँ कि यह किस चित्रकार की कला है। यदि उस चित्र में एक से अधिक चेहरे या कृतियां है तो मैं प्रत्येक को पृथक-पृथक करके बता सकता हूँ कि किस भाग को किस चित्रकार ने बनाया है।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

मुगलकालीन प्रमुख चित्रकार

हुमायूँ कालीन चित्रकार – *''मीरसैय्यदअली''एवं ''अब्दुस्समद''*

अकबर कालीन चित्रकार –

अग्रणी चित्रकार – *दसवंत*

सर्वोत्तकृष्ट चित्रकार – *बसावन*

जहांगीर कालीन चित्रकार –अग्रणी चित्रकार – *बिसनदास*

सर्वोत्तकृष्ट चित्रकार – *उस्ताद मंसूर* (यह पशु-पक्षी विशेषज्ञ चित्रकार था। इसको नादिर-उल-असर की उपाधि प्राप्त थी।)

अबुल हसन – यह 'व्यक्ति-चित्र' में पारंगत था। इसकी उपाधि नादिर-उल-जमाँ थी।

- एक कृशकाय घोड़े के साथ एक मजनूँ का निर्जन स्थान में भटकता चित्र – बसावन (अकबर)
- बीजापुर के सुल्तान आदिल शाह का एक चित्र – फारूख बेग (जहांगीर)
- साइबेरिया का एक सारस – उस्ताद मंसूर
- बंगाल का एक अनोखा फूल – उस्ताद मंसूर
- तुजुके जहांगीरी पुस्तक के कवर पेज के लिए चित्र – अबुल हसन

अकबर के शासनकाल की प्रमुख घटनाएं

वर्ष	घटनाएं
1660-62	पेटीकोट सरकार का अस्तित्व
1562	दास प्रथा का अंत
1563	तीर्थ यात्रा कर की समाप्ति
1564	जजिया कर की समाप्ति
1571	फतेहपुर सिकरी की स्थापना (इसका प्रारूप बहाउद्दीन ने तैयार किया था।)
1575	फतेहपुर सिकरी में इबादतखाने का निर्माण
1578	इबादतखाने को धर्म संसद में परिवर्तित किया।
1579	मजहर या तथाकथित अमोघत्व की घोषणा (स्मिथ ने इसे इनफैबिलिटी डिक्री कहा है।)
1582	तौहीदे-इलाही की घोषणा
1583	कुछ निश्चित दिनों पर पशुवध का निषेध
1584	गुजरात विद्रोह दबाने के कारण अब्दुर्रहीम को खानखाना की उपाधि
1575-76	सम्पूर्ण साम्राज्य 12 सूबों में बांटा गया (दक्षिण विजय के बाद संख्या 15 हो गई)
1573-74	गुजरात विजय के बाद मनसबदारी प्रथा आरंभ हुई (इसकी प्रेरणा अब्बा सईद)

दाराशिकोह

- दाराशिकोह का जन्म 1615ई. शाहजहां की प्रिय पत्नी मुमताज महल के गर्भ से हुआ था।
- दारा सूफियों की कादिरी परंपरा से बहुत प्रभावित था।
- लेनपुल दारा को ''लघु अकबर'' कहा है।
- दारा का सबसे महत्वपूर्ण कार्य वेदों का संकलन है। उसने वेदों को ईश्वरकृत माना।
- दाराशिकोह ने एक मौलिक पुस्तक मज्म-उल-बहरीन (दो समुद्रों का संगम)की रचना की जिसमें हिन्दू और इस्लाम को एक ईश्वर की प्राप्ति के दो मार्ग बताये गये।
- दारा ने स्वंय काशी के कुछ संस्कृत के पंडितों की सहायता से ''52 उपनिषदों'' का ''सिर्र-ए-अकबर'' नाम से फारसी में अनुवाद कराया।
- शाहजहां ने दारा को ''शाहबुलंद इकबाल'' की उपाधि दी।
- दाराशिकोह ने स्वंय अपनी देखरेख में संस्कृत ग्रंथ भगवत गीता और योगवशिष्ठ का फारसी में अनुवाद कराया।

दाराशिकोह के सूफी मत से संबंधित ग्रंथ

- सफीनत-उल-औलिया (विभिन्न परम्पराओं के सूफियों का जीवन-वृत्त)
- सकीनत-उल-औलिया (भारत के कादरी परंपरा के सूफियों का जीवन-वृत्त)
- हसनात-उल-आफरिन (विभिन्न संतों की वाणी का संकलन)
- तरिकत-उल-हकीकत (आध्यात्मिक मार्ग के विभिन्न चरण)
- रिसालाय-हक-नुमा (सूफी प्रथाओं का वर्णन)

औरंगजेब के समय के प्रमुख विद्रोह

अफगान विद्रोह	**उद्देश्य** – (पृथक अफगान राज्य की स्थापना।)इसे ''रोशनाई'' नामक धार्मिक संप्रदाय में पृष्ठभूमि प्रदान की
1667	अफगान विद्रोही भागु के नेतृत्व में मुगल सुबेदार अमीरखान ने दमन किया।
1772	अफरीदी नेता अकमल खां के नेतृत्व में स्वंय को राजा घोषित किया और अपने नाम का खुतबा पढ़वाया और सिक्का भी चलवाया।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

जाट विद्रोह	पहला संगठित विद्रोह (औरंगजेब के समय का) कारण – किसानों एवं भूमि विषयक समस्या। इस विद्रोह को ''सतनामी'' नामक धार्मिक आंदोलन में पृष्ठभूमि प्रदान की। विद्रोह की मुख्य रीढ़ किसान एवं काश्तकार थे किन्तु नेतृत्व मुख्यतः जमींदारों ने किया।
1669	गोकुला के नेतृत्व में मुगल फौजदार हसनअली खां ने विद्रोह का दमन किया।
1685-88	राजाराम के नेतृत्व में अधिक सुसंगठित विद्रोह सिकंदरा स्थित अकबर के मकबरे को लुटा। औरंगजेब के पौत्र बिदर वक्श और विशनदास ने दमन किया।
1688ई. के बाद से औरंगजेब की मृत्यु पर्यन्त	राजाराम के भतीजे चुड़ामन के नेतृत्व में औरंगजेब की मृत्युपर्यन्त तक विद्रोह करता रहा और मथुरा के पास भरतपुर नामक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।
सतनामी विद्रोह (1672)	इस विद्रोह की शुरूआत एक सतनमी एवं स्थानीय मुगल सरदार के झगड़े को लेकर हुआ। सतनामी समुदाय मूलरूप से एक धार्मिक सम्प्रदाय शुद्धअद्वैतवाद में विश्वास करता था। इन्हें मुंडिया भी कहा जाता था।
बुंदेला विद्रोह (1661-1707)	पहला विद्रोह ओरछा के शासक चम्पतराय के नेतृत्व में हुआ। चम्पतराय पराजित होने के बाद अधिनता स्वीकार करने के स्थान पर आत्महत्या कर ली। इसके उपरांत छत्रसाल के नेतृत्व में औरंगजेब के खिलाफ विद्रोह हुआ। यद्यपि छत्रसाल ने पुरंदर की संधि तथा बीजापुर घेरे के दौरान औरंगजेब की सराहनीय सेवा की थी। इसको विद्रोह की प्रेरणा शिवाजी से मिली थी। 1707ई. में बुंदेलखंड का स्वतंत्र शासक बना।
अकबर का विद्रोह (1681 ई.)	मेवाड़ एवं मारवाड़ से सहायता का आश्वासन पाकर शाहजादा अकबर ने अपने आपको स्वतंत्र बादशाह घोषित किया। पराजित होने के उपरांत यह फारस भाग गया और वहीं उसकी मृत्यु हो गई।
अंग्रेजों का विद्रोह(1686ई)	अंग्रेजों को हुगली से बाहर भगाया गया।
राजपूत विद्रोह (1679-1709)	**कारण** – उत्तराधिकार की समस्या
सिख विद्रोह (1675ई. से) औरंगजेब की मृत्यु तक	यह औरंगजेब के काल का एकमात्र धार्मिक एवं अंतिम विद्रोह था। यह विद्रोह गुरूतेजगबहादुर को प्राण दंड दिये जाने के बाद से शुरू हुआ।

मुगलकालीन प्रसिद्ध महिलाएँ

गुलबदन बेगम – हुमायूँनामा की रचना की।

माहम अनगा – अकबर की धाय माँ माहम अनगा ने 1560-62 तक 'पर्दा-शासन' या 'पेटीकोट सरकार' को चलाया। इसने हुमायूँ के साथ मिलकर दिल्ली में 'मदरसा-ए-बेगम' की स्थापना की।

नूरजहाँ – जहाँगीर की पत्नी, 'जुन्तागुट' का नेतृत्व किया, शासनकार्य में बराबर का हिस्सा लिया। इसने अनेक श्रृंगार-प्रसाधनों एवं जेवरातों में सुरूचिपूर्ण परिवर्तन किया।

मुमताज महल – शाहजहाँ की प्रिय पत्नी। उत्तराधिकार युद्ध में दारा का पक्ष लिया। सूफी मत के कादिरी सिलसिले से प्रभावित। शाहजहाँ के बंदी समय के दौरान शाहजहाँ के साथ रही और शाहजहां की सेवा की।

जेबुन्निसा – यह औरंगजेब की पुत्री थी। विद्रोही शहजादा अकबर से पत्र व्यवहार करने के कारण औरंगजेब ने इसे निर्वासित कर दिल्ली भेज दिया जहां इसने बैतुल-उल-उलूम नामक पुस्तकालय की स्थापना की।

अस्मत बेगम – यह नूरजहाँ की माँ थी। इसने इत्र बनाने की विधि का अविष्कार किया।

Downloaded From www.studymasterofficial.com
Committed to Excellence

आधुनिक भारत

इतिहास –

इतिहास निरंतरता व परिवर्तनीयता का समग्र अध्ययन है। वस्तुत: इतिहास वर्तमान और भूत के बीच निरंतर होने वाला संवाद है जिससे हमारा भविष्य सुरक्षित या प्रकाशित होता है।

उत्तरी काले पालिशदार मृदभाण्ड

- वास्तविक तौर पर इतिहास की परिभाषा के अनुसार कालिक विभाजन उचित नही है फिर भी प्राचीन, मध्य व आधुनिककाल में इसे अध्ययन की सुविधा ओर कुछ विशेष प्रवृत्तियों की अधिकता के कारण बांटा जाता है।
- **उदाहरण स्वरूप** –धर्मतंत्र व सामंतवाद का होना मध्ययुगीन प्रवृत्ति मानी जाती है तो लोकतंत्र व मानववाद आधुनिक युग की पहचान है।
- आधुनिक भारत के इतिहास की शुरूवात को लेकर विद्वानों में मतभेद है सामान्यत: 1707 में औरंगजेब की मृत्यु और 1757 में प्लासी के युद्ध के बाद इसकी शुरूआत मानी जाती है और इस आधार पर आधुनिक भारतीय इतिहास की राजनैतिक प्रवृत्तियां निम्नलिखित हैं –
  1. मुगल साम्राज्य का पतनशील होना।
  2. उत्तराधिकारी व क्षेत्रीय राज्यों का उदय।
  3. विदेशी औपनिवेशिक शक्तियों का भारत में प्रवेश।

भारत में औपनिवेशिक शक्तियों का आकर्षण क्यों?

- प्राचीन काल से ही भारत अपनी समृद्धि के लिए विख्यात रहा है। विशेषत: शाहजहां के काल में कई विदेशी यात्रियों ने भारत की यात्रा की और यूरोप जाकर भारत की सम्पन्नता का अत्यधिक प्रचार किया फ्रांसी यात्री बर्नियर (चिकित्सक) का तो यह कहना था कि विश्व का सारा सोना घुम-फिरकर भारत में एकत्र हो जाता है अर्थात् व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में रहता है और आर्थिक प्रगति के लिए भारत से बेहतर संबंध बनाना महत्वपूर्ण है।

15वीं-16वीं शताब्दी में यूरोप में पुर्नजागरण, वैज्ञानिक अविष्कार तथा भौगोलिक खोजों की प्रवृत्ति बढ़ी ओर इसी समय पूंजीवादी विचारधारा यह भावना प्रसारित कर रही थी कि जिस देश का अधिपत्य जितने अधिक क्षेत्रों पर होगा, उनके संसाधनों के प्रयोग से वह देश उतना ही सशक्त व विकसित हो सकेगा इसी विचार ने उपनिवेशीकरण को बढ़ावा दिया तथा एशिया व अफ्रीका के संसाधनों पर प्रभुत्व की लड़ाई शुरू की गई।

उपनिवेशवाद किसी संप्रभु देश का किसी अन्य देश पर इस उद्देश्य से राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित करता है कि उसके संसाधनों का इस्तेमाल वह अपने आर्थिक हितों के लिए कर सके औपनिवेशिक प्रणाली उस स्वप्न की तरह है जो गंगा नदी के स्रोतों को निचोड़कर टेम्स नदी में उड़ेल देती है। प्रभावी आर्थिक शोषण के लिए वह गुलाम देश में राजनैतिक, प्रशासनिक व सामाजिक परिवर्तन भी कराई है भले ही वह प्रगतिशील कदम हो किन्तु उसका उद्देश्य संसाधनों का शोषण होता है।

- नये देशों की खोज और उसके संसाधनों पर प्रभुत्व के लिए जब पुराने मार्ग से भारत प्रवेश संवभ नही हुआ(कुस्तुनतुनिया पर तुर्को का कब्जा) तो स्वभाविक था कि नये रास्तों की खोज की जाये इसी क्रम में पार्थिलिमियों ने केप ऑफ गुड होप की ,खोज की जो आगे चलकर भारत प्रवेश के लिए मुख्य मार्ग सिद्ध हुआ।

भारत में औपनिवेशिक शक्तियां –

- कम्पनी स्थापना का क्रम – P, E, D, F

  भारत आने का क्रम – P, D, E, F

पुर्तगाली

- 1498 में वास्कोडिगामा द्वारा केप ऑफ गुड होप के रास्ते से भारत की खोज हुई जिसमें एक गुजराती व्यापारी अब्दुल माजीद ने उसकी सहायता की सर्वप्रथम वह कालीकट पहुंचा जहां हिन्दु शासन जमोरिन ने उसका स्वागत किया। भारत से व्यापारिक संबंधो की स्थापना हेतु पुर्तगालियों ने पूरब के साथ व्यापार के लिए कम्पनी बनायी तथा 1505 में डी. अल्मोडा पहला गवर्नर बनकर भारत आय। अल्मीग ने भारत पर नियंत्रण के लिए Blue Water Policy चलायी अर्थात् समुद्री मार्गो पर नियंत्रण की नीति।
- पुर्तगालियों का सबसे लोकप्रिय गवर्नर अल्बुकर्क था जिसने पुर्तगाली कम्पनी को व्यापार से बढाकर क्षेत्रीय विस्तार से जोड़ दिया। उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि 1510 में बीजापुर से गोवा को छीनना था। अबुकर्क ने विजय नगर साम्राज्य के सबसे प्रभावी शासक कृष्णदेव राय से मित्रवत संबंध बनाये और साथ ही अनपे पुर्तगालियों भारतीय महिलाओं से विवाह के लिए प्रेरित किया जिससे भारत पर उनकी पकड़ मजबू हो सके।
- पुर्तगालियों की पहली राजधानी कोचीन थी जिसे बाद में गोवा स्थानांतरित कर दिया गया। इनका मुख्य ध्यान मसालों के व्यापार पर अधिपत्य जमाना था तथा प्रिंटिंग प्रस व तम्बाकू सर्वप्रथम पुर्तगाली ही भारत लाये।
- 1632 में शाहजहां ने पुर्तगालियों को पश्चिमी तट से इसलिए बाहर निकाला क्योंकि साम्राज्य के लोगों को धर्म पालन (हज यात्रा) में पुर्तगालियों ने कार्टेज पद्धति चलायी जो एक प्रकार का लाइसेंस होता था जिसके तहत उनके बंदरगाहों से

Downloaded From www.studymasterofficial.com

जहाजहों के आवागमन हेतु किसी भी शक्ति को एक निर्धारित शुल्क देना होता था यहां तक कि अकबर ने भी इस पद्धति को स्वीकारा।

डच

- 1602 में डच कंपनी की स्थापना हुई जिसे पूरब के साथ व्यापार के लिए 21 वर्षो का चार्टर मिला इस कंपनी में निर्देशकों की संख्या 17 थी इसीलिए यह (Gental Man-17) के नाम से भी जानी जाती है।
- डचों की पहली फैक्ट्री मुस्लीपट्टनम (आन्ध्र प्रदेश) में स्थापित हुई डचों एकमात्र किलेबंदी कुलीकट में की।
- विश्व बाजार में भारतीय कपड़ों को स्थापित करने का श्रेय डचों को ही दिया, इन्होंनें कभी भी भारतीय वस्त्र व्यापार पर मनमाने शुल्क नहीं लगाये।
- 1759 के बेदरा के युद्ध में अंग्रेजों ने इन्हें निर्णायक शिकस्त दी। वेदरा के युद्ध में - डच व अंग्रेज

अंग्रेज

- 1600ई. में महारानी एलीजाबेथ द्वारा कंपनी को 15 वर्षो का चार्टर दिया गया। जिसे बाद में जेम्स प्रथम ने अनिश्चित काल के लिए बढ़ा दिया गया। आधिकारिक रूप से भारत में फैक्ट्री खोलने की इजाजत लेने हेतु हॉकिन्स जहांगीर के दरबार में आया और उसने तुर्की तथा फारसी भाषा में बात की और जहांगीर ने उसे 400 जात का मनसब प्रदान किया।
- थॉमस रो 1615 में ब्रिटिश शासक का व्यक्तिगत दूत बनकर आया और 3 वर्षो तक भारत में रहा।
- अंग्रेजों ने अपनी फैक्ट्री अस्थायी रूप से 1608 में सूरत में खोली और 1613 में इसे स्थायी रूप दे दिया गया। दूसरी तरफ दक्षिण में अंग्रेजों ने अपनी पहली फैक्ट्री मुसलीपट्टनम मे स्थापित की।
- 1632 में गोलकुंडा के शासक ने ब्रिटिश कंपनी को सुनहरा फरमान दिया जिसके द्वारा उसने अपने क्षेत्र में अंग्रेजों के अत्यधिक व्यापारिक रियायतें उपलब्ध करायी।

स्थान	वर्ष	विशेष
मद्रास (सेंट जार्ज	1640	फ्रांसीस को मद्रास का मतदाता कहा जाता है।
बंबई	1720	चार्ल्स बून ने इस किले का निर्माण करवाया।
कलकत्ता (फोर्ट बिलियम)	1698	इस किले का प्रथम अध्यक्ष चार्ल्स आयर था।

- 1698 में अंग्रेजों ने सूतानाटी, कालीकट व गोविन्दपुर की जमींदारी हासिल कर इन्हें मिलाकर कलकत्ता की स्थापना की।
- अंग्रेजों ने भारत के पूरब में अपनी पहली कोठी बालसोर (उड़ीसा) में स्थापित की।
- पुर्तगाली शासक ने ब्रिटेन के राजा चार्ल्स द्वितीय को मुम्बई 1661 में दहेज में दे दिया तथा चार्ल्स ने 1667-68 में इसे कम्पनी को 10 पौंड प्रतिवर्ष की लीज पर सौंप दिया।
- औरंगजेब के शासन के दौरान अंग्रेजों ने सूरत के तट पर उत्पात मचाया और उन्हें कड़ी शिकस्त मिल यहां तक की जेर्ज चाइल्ड को माफी मांगनी पड़ी। 1689 में हूबली में अंग्रेजों ने लूट की कोशिश की किन्तु वहां भी उन्हें शर्मिन्दा होना पड़ा।

फ्रांसीसी

- 1664 में फ्रांस के शासक लुई-चौदह के मंत्री कोलबल्ट ने फ्रांसीसी कंपनी की स्थापना की। 1668 ने फ्रांसीसीयों ने अपनी पहली फैक्ट्री सूरत मे स्थापित की तथा पांडिचेरी की विजय के बाद फ्रेंककोइस मार्टिन को वहां का गवर्नर बनाया गया जो आधुनिक पांडिचेरी का संस्थापक कहा गया।
- फ्रांसीसी कंपनी का सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रभावी गवर्नर डूप्ले था जिसने भारतीय राज्यों के आंतरिक राजनैतिक मामलों में हस्तक्षेप किया और यहीं से भारतीय शक्तियों का विदेशी शक्तियों से राजनैतिक संघर्ष आरंभ हुआ। इसी क्रम में ब्रिटेन और फ्रांसीसी शक्तियों एक दूसरे से संघर्षरत हो गई।
- **सेण्ट टोमे का युद्ध** - 1746
- **आम्बेर का युद्ध** - 1749
- **वांडीवाश का युद्ध** (1760) - यह निर्णायक युद्ध था जिसमें ब्रिटिश सेना का नेतृत्व आयरकूट ने किया। अंग्रेजों और फ्रांसीसीयों के बीच विवाद का कारण ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार का भी मुद्दा था।
- **फ्रांसीसीयों के अंग्रेजों से हार के दो महत्वपूर्ण कारण थे** - 1. फ्रांसीसी कंपनी पर अत्यधिक सरकारी नियंत्रण होना। डूप्ले को वापस बुलाकर काउण्ट डी लाली को गवर्नर बनाना योजना की एक बड़ी भूल साबित हुआ। 2. ब्रिटिश नौसेना का सर्वश्रेष्ठ होना।

अन्य शक्तियां

- 1616 में डेनिस कंपनी भारत में आयी और अपना मुख्यालय सेराम्पोर (श्रीरामपुर) बंगाल में बनाया।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

- 18वीं सदी में स्वीडिश कंपनी भारत आयी लेकिन उसका ध्यान व्यापार पर न होकर धर्म प्रचार पर अधिक था अत: वह अधिक लोकप्रिय न हो सकी।

क्षेत्रीय राज्य

- **बंगाल** - बंगाल मुख्यत: 1719 में मुर्शिद कुलीखां के नेतृत्व में एक मजबूत इकाई के रूप में उभरा और उसने प्रशासनिक व कुछ आर्थिक सुधारों से बंगाल को नई मजबूती दी किन्तु मुगल शासक को नजराना देना जारी रखा। मुर्शिद ने बंगाल की राजधानी ढाका की जगह मुर्शिदाबाद को बनाया।
- अलीवर्दी खां ने घेरिया के युद्ध में सरफराज खां को हराकर नवाब का पद हासिल कर लिया। किंतु यही से प्रशासिनक वर्चस्व की टकराहट भी शुरू हो गयी। अलीवर्दी एक महत्वाकांक्षी शासक था जिसने मुगल नजराने में कटौती कर बंगाल की वास्तविक स्वायत्ता की नींव रखी। अलीवर्दी का मराठों से भी संघर्ष हुआ और अंग्रेजों की कुटिलता से भी वाकिफ था **अत: उसने अंग्रेजों को मधुमक्खी के छत्ते के समान कहा।**
- **सिराजुद्दौला** - सिराज के नवाब बनने से दरबार के अधिकांश प्रभावी लोग असंतुष्ट हो उठे और उसके विरूद्ध असंतुष्टों का एक समूह बन गया जिसमें उसकी मौसी घसीटी बेगम, सेनापति मीरजाफर तथा धनी बैंकर जगतसेठ शामिल थे।
- जब सिराज ने अंग्रेजों को किलेबंदी से मना किया तो अंग्रेजों ने उसकी अवहेलना कर उसे असंतुष्ट कर दिया। सिराज ने आक्रमण कर किले को जीत कर उसका नाम अली नगर रख दिया। किंतु जब क्लाइव में नेतृत्व में मद्रास से भी अंग्रेजी सेना बंगाल आ गयी तो सिराज ने विवश होकर फरवरी 1757 में अली नगर की संधि स्वीकारी और अंग्रेजों को किलेबंदी का अधिकार देना पड़ा इस घटना में मानिकचंद नामक अधिकारी ने विश्वासघात किया।
- 23 जून 1757 को उचित अवसर देखते हुए क्लाइव ने प्लासी के युद्ध की नींव रख दी। वास्तव में यह युद्ध न होकर एक छोटी से झड़प थी क्योंकि क्लाइव की कूटनीति व षडयंत्र के कारण युद्ध का परिणाम पहले ही निश्चित हो गया था। नवाब की तरफ से मीरमदान और मोहनलाल जैसे कुछ विश्वासपात्र अधिकारी ही लड़े।
- इस युद्ध के परिणाम ने कंपनी को व्यापारिक शक्ति से राजनीतिक शक्ति में रूपान्तरित कर दिया। उल्लेखनीय है अभी प्रत्यक्ष बंगाल का शासन अपने हाथों में नही लिया बल्कि वहां कठपुतली नवाब बनाये जाते रहे।
- मीरजाफर को नवाब बनाया गया जिसने पुरस्कार स्वरूप अंग्रेजों को 24 परगनों की जमींदारी दे दी। किन्तु शीघ्र ही जब जाकर उन्हें इतना लाभदायक महसूस नही लगा तो डचों सम्पर्क के बहाने उसे गद्दी से हटा दिया।
- **विशेष** - हॉलवेल नामक ब्रिटिश अधिकारी का सिराज पर लगाया गया आरोप ब्लैकहोल या कालकोठरी की घटना के नाम से विख्यात है। उसके अनुसार अलीनगर पर आक्रमण करते समय सिराज ने अंग्रेजों को एक कोठरी में बंद कर दिया जिसमें कुछ ही अंग्रेज जीवित बच सके। इस घटना का उल्लेख इसके अतिरिक्त किसी अन्य समकालीन विद्वान ने नहीं किया।
- **मीरकासिम** - 1760 में मीरकासिम को नवाब बनाया गया तत्कालीन गवर्नर वेंसीटॉर्ट ने इसे क्रांति की संज्ञा दी। मीरकासिम के पास प्रशासनिक अनुभव था और वह पूर्णिया का फौजदार रह चुका था शीघ्र उसने यह आकलित कर लिया था कि अंग्रेज केवल बंगाल का शोषण करना चाहते है और उनकी नजरों में नवाब की महत्ता नहीं।
- मीरकासिम ने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानांतरित की और अंग्रेजों के नियंत्रण से दूर होकर आधुनिक प्रशासन और शस्त्रागार की नींव रखी।
- 1764 में बक्सर का युद्ध हुआ उस समय बंगाल का गवर्नर बेरलेस्ट था। इस युद्ध में मीरकासिम के साथ अवध का नवाब सिराजुद्दौला तथा मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय का एक त्रिगुट तैयार हुआ और यह वास्तविक युद्ध था। जिसमें अंग्रेजों ने भारत की तीन महत्वपूर्ण शक्तियों को परास्त कर दिया और इस तरह प्लासी के निर्णय की पुष्टि बक्सर ने कर दी। इस युद्ध में ब्रिटिश सेना का नेतृत्व हेक्टर मुनरों ने किया।
- 1765 में इलाहाबाद की संधि की गई जिसमें राबर्ट क्लाइव, अवध का नवाब व मुगल शासक शामिल थे। इस संधि के द्वारा बंगाल में द्वैध शासन लागू हुआ और मुगल सम्राट ने बंगाल की दीवानी का अधिकारी अंग्रेजों को सौंप दिया। अंग्रेजों ने निजामत बंगाल के नवाब के पास ही रहने दी।
- 1765 तक द्वैध शासन जारी रहा।
- **प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध** (1767-69ई.) -
- **द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध** (1780-84ई.)-
- **तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध** (1790-92 **तक**)
- **चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध** (1799ई.)

Downloaded From www.studymasterofficial.com

टीपू सुल्तान

- टीपू ने मैसूर को आधुनिक प्रशासनिक इकाई के रूप में व्यवस्थित करने का प्रयास किया और इस क्रम में नई आधुनिक कलेण्डर व नई मुद्रा प्रणाली को अपनाया।
- टीपू ने व्यापारी प्रगति के लिए अपने दूत विदेशों में भी भेज और साथ ही नौसेना स्थापित करने और आधुनिक बंदरगाहों की स्थापना करने का भी प्रयास भी किया।
- फ्रांसीसीयों से टीपू के बेहतर संबंधों के कारण अंग्रेज आशंकित थे कहीं टीपू और नेपोलियन का मेल न हो जाये।
- उल्लेखनीय है कि टीपू फ्रांसीसी क्रांति का समर्थक था और उसने न केवल श्रीरंगपट्टनम के किले में स्वतंत्रता का वृक्ष लगाया बल्कि के फ्रांस के क्रांतिकारी संगठन जैकोवियन क्लब की सदस्यता भी हासिल की।
- 1790-92 के तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध में लार्ड कार्नवालिस के समय टीपू को कड़ी शिकस्त मिली और 1792 में श्रीरंगपठ्टनम की संधि द्वारा टीपू को 3 करोड़ रूपया लड़ाई का हर्जाना तथा आधा राज्य देना पड़ा।
- 1799 में लार्ड वेलेजली गवर्नर जनरल भारत आया और टीपू को सहायक संधि स्वीकार करने को कहा किन्तु टीपू के इंकार के बाद 1799 के चौथे व अंतिम आंग्ल मैसूर युद्ध में लड़ते हुए टीपू श्रीरंगपट्टनम के किले में शहीद हो गया।

विशेष

- टीपू को यह श्रेय जाता है कि उसने पहली बार (द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध में रॉकेट का प्रयोग किया इसके साथ ही मराठों द्वारा क्षतिग्रस्त शारदा देवी के मंदिर के जीर्णोद्वार के लिए टीपू ने आर्थिक मदद भी की।

अन्य शक्तियां

- **हैदराबाद** - 1724 में निजामउलमुल्क (चिनकिलिच खां) ने इस स्वायत्त राज्य की नीवं रखी।
- हैदराबाद पहला राज्य बना जिसने वेलेजली के सहायक संधि को स्वीकारा
- आजादी के समय अंतिम निजाम उस्मान अली ने भारत में शामिल होने का कड़ा विरोध किया।

त्रावणकोर - राजा मार्तण्ड वर्मा तथा राजा रवि वर्मा का शासन था। राजा रवि वर्मा बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। ये कवि, चित्रकार, साहित्यकार, नाटककार आदि थे इसलिए इन्हें हिन्दुतान का लियनार्डो द विन्सी कहा जाता है।

- **जाट साम्राज्य** - औरंगजेब के विरूद्ध जाट विद्रोहों ने लोकप्रियता हासिल की वस्तुत: ये धार्मिक विद्रोह न होकर कृषक असंतोष की उपज थी। राजाराम ने अकबर के मकबरे की लूट की तथा चुड़ामन व बदन सिंह ने भरतपुर साम्राज्य की स्थापना की।
- जाटों का अफलातून (प्लेटो)सूरजमल को कहा जाता है जो सबसे प्रभावशाली शासक सिद्ध हुआ।

राजा जय सिंह

- आधुनिक मानकों पर जयपुर शहर की स्थापना।
- सामाजिक कुरीतियों का विरोध अर्थात् अपने राज्य में सतीप्रथा निषेध, विधवा, पुनर्विवाह आदि को लागू करने का श्रेय।
- नक्षत्रों की जानकारी के लिए 5 स्थानों पर जयपुर, मथुरा, दिल्ली, उज्जैन, वाराणसी वेधशालाएं बनवायीं।

मराठा

- छत्रपति शिवाजी के द्वारा मराठा साम्राज्य की स्थापना की गई। जिसके अष्ट प्रधान में पेशवा का पद प्रधानमंत्री जैसा होता था।
- शम्भ जी की मृत्यु के बाद औरंगजेब ने शाहू को गिरफ्तार कर लिया और इन परिस्थितियों में राजाराम ने मुगलों से संघर्ष जारी रखा और उसकी पत्नी ताराबाई ने 1700-07ई. तक मराठा संघर्ष को जारी रखा। इस दौर को मराठो का स्वतंत्रता संग्राम कहा जाता है।

बालाजी विश्वनाथ

- वस्तुत: ये 7वें नंबर के पेशवा थे इनकी दूरदर्शिता से पेशवा का पद अति महत्वपूर्ण होने लगा। इनकी सबसे महत्वपूर्ण भूमिका शाहू जी की रिहाई करवाना और मराठों के लिए अधिकार प्राप्त करना था।

बाजीराव प्रथम

- बाजीराव प्रथम शिवाजी के बाद गुरिल्ला युद्ध प्रणाली में सबसे दक्ष माने गये।
- इन्होंने हिन्दू पदशाही के धर्म का प्रचार किया। अर्थात् हिन्दू शासकों को एकजूट कर मुगलों से संघर्ष का समर्थन किया। जो कि मराठा साम्राज्य विस्तार में महत्वपूर्ण साबित हुआ।

बालाजी बाजीराव (नाना साहब)

- इनके समय तक पेशवा का पद पेशवा का पद वंशानुगत हो गया और ये मराठा साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक भी कहलाया।
- मराठों की शक्ति अब इतनी बढ़ चुकी थी। उसने दिल्ली के गद्दी के मामलों में भी हस्तक्षेप शुरू कर दिया तथा नानासाहब ने हिन्दू पद पादशाही के आदर्श का उल्लंघन किया।
- अफगान सेनापति अहमशाह अब्दाली के प्रतिनिधि को जब मराठों ने पंजाब से हटा दिया तो इन दो शक्तियों के बीच संघर्ष अपरिहार्य हो गया। अर्थात् इस युद्ध का मुख्य कारक दोनों शक्तियों के महत्वाकांक्षा की टकराहट थी।

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

- अफगानों का साथ भारतीय क्षेत्रीय शक्ति रूहेलों बंगसों आदि ने दिया। किन्तु मराठों के साथ कोई भारतीय शक्ति खड़ी नहीं हुई।
- मराठा सेना का नेतृत्व सदाशिवराव ने किया जो अदूरदर्शी सेनापति साबित हुआ। उसने किसी प्रमुख नेता की सलाह न मानकर मराठों को प्रत्यक्ष युद्ध में झोक दिया। इस युद्ध में मराठा सेना को कड़ी शिकस्त झेलनी पड़ी एवं जानमाल की भारी क्षति उठानी पड़ी।
- पानीपत तृतीय युद्ध में मराठों के तोपखाने का नेतृत्व इब्राहिम गार्दी ने किया था।
- पानीपत तृतीय युद्ध के परिणाम ने यह सिद्ध कर दिया। मुगलों के उत्तराधिकारी कहे जाने वाले मराठे संभवतः भारत पर शासन नहीं कर सकेंगे।

विशेष

- पानीपत तृतीय युद्ध के बाद शीघ्र ही मराठा शक्ति माधवराव के नेतृत्व में (1761 से 1772)उठ खड़ी हुई और हैदर जैसे सेनापति को शिकस्त दी। किन्तु इसकी आकस्मिक मृत्यु के बाद रघुनाथ राव गद्दी पाने के लिए षड्यंत्र करना शुरू कर दिया व नारायण राव को जहर दे दिया।
- नाना फड़नवीश व महादजी सिंधिया के नेतृत्व में बारभाई परिषद का गठन हुआ। जिसने रघुनाथ राव का विरोध किया और माधवराव द्वितीय को पेशवा बना दिया।

बाजीराव द्वितीय

- बाजीराव द्वितीय एक अकुशल व अदूरदर्शी पेशवा साबित हुआ अपनी प्रभुता बनाये रखने के लिए उसने सिंधिया और होल्कर को आपस में लड़ाया लेकिन जब यशवंत राव होल्कर ने पेशवा व सिंधिया की संयुक्त सेना को हरा दिया तो पेशवा ने 1802 में वसीन की संधि स्वीकार कर लिया और अंग्रेजों को सर्वोच्च बना दिया। इसके विरूद्ध 1803 में द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध हुआ। क्योंकि अन्य मराठा सरदार इस संधि से असंतुष्ट थे।
- लार्ड हेस्टिंग्स जब गवर्नर जनरल बनकर आया तो उसका उद्देश्य अंग्रेजों को सर्वोच्च शक्ति बनाना था। इसलिए पिंडारियों के आखेट के बहाने तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध 1817 से 1818 तक लड़ा गया और मराठों के विस्तृत क्षेत्र को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।
- स्मरणीय है कि पहला आंग्ल मराठा युद्ध (1775 से 1782) तक चला। जिसमें मराठों का पलड़ा भारी रहा और सिद्ध कर दिया। पानीपत तृतीय की हार व माधवराव की आकस्मिक मृत्यु के बाद मराठा शक्ति अभी समाप्त नही हुई है और अंग्रेजों को अंततः 1782 में सालबाई की संधि स्वीकार करनी पड़ी।
- **विशेष** – मराठा साम्राज्य के राजस्व का मुख्य हिस्सा चौथ व सरदेशमुखी था। सामान्यतः माना जाता है कि पड़ोसी राज्य से उसके राजस्व का एक चौथाई भाग ही चौथ कहलाता था और मराठा सरदारों के प्रमुख के रूप में प्राप्त होने वाली आय सरदेशमुखी कहलाती थी।

पंजाब

- गुरू नानक जी द्वारा सिख धर्म की स्थापना की गई। जो गुरू गोविन्द सिंह तक अपनी जुझारू प्रवृत्ति के कारण महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरी। विशेषतः मुगलों के साथ संघर्ष के कारण ऐतिहासिक शक्ति बनकर उभरी।
- सिख मुख्यतः 12 मिसलों में विभाजित थे। जिसमें सुकरचकिया मिसल के रणजीत सिंह ने अपनी दुरदर्शिता के कारण पंजाब साम्राज्य का निर्माण कर दिया।
- रणजीत सिंह ने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया और उनकी आरंभिक सफलता अफगान शासक से मित्रवत व्यवहार के कारण आरंभ हुई।
- उनके मंत्रीमंडल में अजीजुद्दीन व दीनानाथ प्रमुख पद पर थे। विक्टर जाकमो नामक विद्वान इन्हें भारत का नेपोलियन कहता है।
- रणजीत सिंह ने अमृतसर गुरूद्वारे पर स्वर्ण कमल चढ़ाया। अर्थात इन्हीं के शासनकाल से स्वर्ण मंदिर संपन्नता और वैभव से युक्त होने लगा।
- दो आंग्ल सिख युद्धों के द्वारा 1849ई. में डलहौजी द्वारा पंजाब साम्राज्य का विलय कर लिया गया।

आर्थिक मीमांसा – धन की निकासी

- नैरोजी ने पहली बार (इंग्लैड डेबिट्स टू इंडिया) नामक लेख में इसकी चर्चा की किन्तु उसे व्यवस्थित रूप (पावर्टी एण्ड अन ब्रिटिश रूल इन इंडिया) में दिया।
- नैरोजी के अनुसार भारत से एकतरफा धन की निकासी ब्रिटेन की ओर होती रही और बदले में भारत को कुछ भी नहीं मिला। नैरोजी ने इसे अनिष्टों का अनिष्ट कहा इसी कारण भारत गरीबी के दुष्चक्र में ऋणग्रस्ता के दलदल में फंसता चला गया।
- इस निकासी के द्वारा 1757-65 तक 40लाख पौंड और 18वीं सदी के अंत तक 150 करोड़ पौंड की निकासी की गयी। इसी संदर्भ में उन्होंने भारत की प्रति व्यक्ति आय मात्र 20रूपये आंकलित की।

भू-राजस्व व्यवस्था

- भारत में निरंतरता व अधिकतम लाभ के लिये अंग्रेजों ने 3 तरह की भू-राजस्व व्यवस्था को अपनाया।
- **१. जमींदारी / स्थायी / इस्तमरारी** – 1790 में लार्ड कार्नवालिस ने जमींदारों को भू-स्वामी मानते हुए और उन्हें

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

ही राजस्व वसूली का दायित्व देते हुए 10 वर्षीय व्यवस्था लागू की। स्मरणीय हो कि वारेन हेस्टिंग्स ने इससे पहले 5 वर्षीय व्यवस्था को अपनाया था। किन्तु असफलता के बाद एक वर्षीय कर दिया। तथा इजारेदारी प्रथा को अपनाया।

- 1793ई. में कार्नवालिस ने इसे स्थायी बंदोबस्त का नाम दे लिया। अर्थात् अब राजस्व की दरों में कोई परिवर्तन नहीं किया जाना था। भारत के 19 प्रतिशत भाग पर ये व्यवस्था लागू की गई । जिसमें बंगाल, बिहार, उड़ीसा जैसे उर्वर क्षेत्र शामिल थे। तथा वाराणसी तथा उत्तरी मद्रास में यह लागू किया गया।
- लगान का 10/11 भाग सरकार का तथा शेष 1/11 भाग जमींदारों के लिए निश्चित किया और नगद वसूली पर ध्यान केन्द्रित किया गया।
- 1794ई. में सूर्यास्त के नियम के द्वारा यह मान्यता स्थापित की गई कि यदि कोई जमींदार निश्चित तिथि के सूर्यास्त होने तक राजस्व जमा करने में असमर्थ रहा तो उसकी जमींदारी नीलाम कर दी जायगी और इस नियम में अनुपस्थित दूरवासी जमींदारी प्रथा को जन्म दिया गया। दूरवासी जमींदारी प्रथा में किसानों के शोषण को बढ़ावा दिया गया।
- वाद में संशोधन के द्वारा यदि कोई किसान लगान देने में असमर्थ रहा तो न्यायालयों की पूर्व अनुमति के बिना जमींदारों को उनकी जमींन नीलाम करने की इजाजत दी गई। जिससे किसानों का शोषण चरम पर पहुंच गया।

रैय्यतवाड़ी

- इस व्यवस्था में किसानों को ही भूमि स्वामी माना गया। किन्तु वास्तविक स्वामित्व अंग्रेजों के पास रहा।
- 1792 में मद्रास के बारहमहल क्षेत्र में सर्वप्रथम कर्नल रीड ने इसे अपनाया। किन्तु 1820 में थॉमस मुनरो द्वारा इसे व्यवस्थित रूप दिया गया। यह बंबई, मद्रास और पूर्वोत्तर भारत के लगभग 51 प्रतिशत भाग पर लागू हुआ।
- सैद्धांतिक रूप से इसमें मापन व सर्वेक्षण की बात कहीं गई किन्तु फिर भी यह अतिशोषणकारी व्यवस्था सिद्ध हुई। क्योकि राजस्व की दर बहुत अधिक थी तथा इन क्षेत्रों में सरकारी अधिकारियों का अत्याचार बढ़ता गया और भ्रष्टाचार भी व्यापक हो गया। इन क्षेत्रों में कलेक्टर की भूमिका को बढ़ाया गया।
- रैय्यतवाड़ी क्षेत्र में 1875 में दक्कन कृषक विद्रोह हुआ जो इतना प्रभावशाली था कि 1879ई. में अंग्रेजों को दक्कन कृषक राहत अधिनियम पारित करना पड़ा।

महालवाड़ी

- यह जमींदारी व रैय्यतवाड़ी का मिश्रण माना जाता है। इसमें भूमि पर सामुदायिक स्वामित्व को स्वीकार किया गया। तथा गांवों के समूह के आधार पर इसे व्यवस्थित रूप प्रदान किय गया।
- 1822ई. में हाल्ट मैकेंजी द्वारा इसे विस्तृत रूप से अपनाया गया। अवध, पंजाब तथा केन्द्रीय प्रांत आदि के लगभग 30 प्रतिशत भाग पर लागू किया गया।
- लार्ड बिलियम बेटिंक के समय मार्टिन बर्ट द्वारा इस व्यवस्था में मानचित्रों का प्रयोग किया गया।
- रैय्यतवाड़ी की तरह इस व्यवस्था में भी मापन और सर्वेक्षण को स्वीकारा गया।

भारत में उपनिवेशवादी चरण

- रजनी पाम दत्त ने भारत में उपनिवेशवादी स्वरूप को 3 चरणों में बांटा है।
- **प्रथम चरण** (1757-1813) - प्लासी की विजय के बाद से ही युद्धों, संघर्षों एवं संधियों के द्वारा भारत को लूटे जाने की शुरूआत हो गयी। राजकोषीय विनियोग के द्वारा भी राजकोषीय अधिशेष को ब्रिटेन भेजा जाने लगा। 1765ई. की इलाहाबाद की संधि से दीवानी का अधिकार मिलने के बाद राजस्व की उगाही की गई।
- **द्वितीय चरण** (1813-1857) - यह दौर मुख्य व्यापार का दौर कहलाया अगर इसी समय स्मिथ द्वारा अहस्तक्षेप के सिद्धान्त को लोकप्रिय बनाया जा रहा था। इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति की सफलता से नये पूंजीपति वर्ग का उदय हुआ। जिसने ब्रिटिश संसद पर दबाव डाला कि भारत पर EIC का समाप्त हो और भारतीय बाजार सबके लिए खोल दिया जाय।
- 1813 के अधिनियम से कंपनी के व्यापारिक अधिकार पर रोक लगा दिया गया। भारी मशीनों आधारित अत्यधिक उत्पादन ही औद्योगिक क्रांति का आधार था। अंग्रेजों ने भारतीय उद्योगों को जानबुझ कर नष्ट कर दिया और ब्रिटिश मशीनों के लिए भारत को कच्चे माल का उत्पादक देश बना दिया। अर्थात् अब भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि आधारित हो गई। फसलों का चयन भी ब्रिटिश उद्योगों के अनुसार होने लगा।
- अंग्रेजों ने भारत में अपने उत्पादों की बिक्री के लिये आयात-निर्यात शुल्क को मनमाने ढंग से निर्धारित किया। जिससे भारतीय उत्पाद ब्रिटिश बाजार में महंगे हो गये जबकि ब्रिटिश उत्पाद भारत में सस्ते इस चरण में भारतीय उद्योग लगभग समाप्त हो गये। कारीगरों को आत्महत्या करनी पड़ी।

Downloaded From www.studymaterofficial.com
GS World Committed to Excellence

कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में रूपान्तरण के कारण कृषि भूमि पर जनसंख्या दबाव बढ़ने लगा।

- **तीसरा चरण** (1860) - पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का यह शीर्ष चरण माना जाता है। भारत में निवेश के माध्यम से अंग्रेजों ने अधिक लाभ कमाना चाहा और गारंटीयुक्त ब्याज दर पर रेलवे, बीमा, बैकिंग, बागानों आदि में निवेश किया गया। इस निवेश का उद्देश्य केवल लाभ ही नही बल्कि भारत से कच्चे माल की निर्बाध आपूर्ति की सोच भी थी।
- अंग्रेजों ने अतिरिक्त लाभ तथा दो अन्य उद्देश्यों से भारत में इसकी नींव रखी।
- भारत के दूरस्थ क्षेत्रों/ गांवों को बाजार से जोड़ने के लिये अर्थात भारतीय संसाधनों के बेहतर दोहन के लिए एवं विद्रोही क्षेत्रों में ब्रिटिश सेना को तेजी से प्रसारित करने के लिए 1849ई. में पहली बार रेल लाइन कलकत्ता से रानीगंज बिछाई गई। 1853ई. बम्बई व थाणे के बीच पहली रेल चलाई गई।
- उदारवादियों ने अंग्रेजों द्वारा रेलवे विकास की प्रशंसा की क्योंकि उनके अनुसार यह आधुनिकीकरण को बढ़ावा देगा। किंतु उग्रवादियों ने विशेषत: (तिलक)ने इसकी तीव्र आलोचना की और कहा कि इससे भारत को कोई लाभ नहीं होगा बल्कि यह शोषण को बढ़ावा देगा।
- भारत में रेलवे के विकास में व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनो निवेशों को बढ़ावा दिया गया। घाटे के बावजूद 5 प्रतिशत का गारंटी युक्त ब्याज दिया गया।

ब्रिटिश अर्थव्यस्था का भारत पर प्रभाव

- भारतीय किसानों की दशा अत्यधिक दयनीय हो गई व किसान से कृषक मजदूर बनने को विवश हो गये। साहूकार और महाजन कृषि संरचना में अनिवार्य वर्ग बनते चले गये।
- अंग्रेजों ने भारत में बलपूर्वक कृषि का वाणिज्यिकरण कर दिया और भारतीयों को उनकी इच्छा के अनुसार नगदी फसल उगानी पड़ी और उनके द्वारा निर्धारित कीमत पर ही बेचना पड़ा। कृषि के वाणिज्यिकरण से अंग्रेजों को दोहरा लाभ हुआ। नगदी फसलों की कीमतों में उतार-चढ़ाव बना रहता था। इस रूप में भारतीय किसानों के लिए यह हमेशा शोषण का पर्याय बना। जिसका महत्वपूर्ण उदाहरण नील की खेती है। स्मरणीय रहें 1860 में बंगाल में नील विद्रोह हुआ। जिस पर दीनबंधु मित्र ने नील दर्पण नामक नाटक लिखा। जिसमें उन्होंने किसानों की दुर्दशा का वर्णन प्रस्तुत किया।
- अंग्रेजों ने परंपरागत भारतीय उद्योगों को नष्ट कर दिया। जिससे राजाओं और नवाबों की विलासिता की सामग्रियों में कमी आयी। उद्योगों के पतन से दस्तार और बुनकर कृषि कार्य हेतु विवश हुए जिससे कृषि भूमि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ा। फलस्वरूप उत्पादन में गिरावट आई।
- अंग्रेजों की आर्थिक नीति के कारण ही भारत में अकाल पड़ने लगे। जिससे अत्यधिक क्षति उठानी पड़ी, 1943ई. में बंगाल के अकाल का अत्यधिक मार्मिक चित्रण जैनुल आबदीन ने कार्टून चित्र द्वारा प्रस्तुत किया।
- इस तरह सम्पन्न भारतीय अर्थव्यस्था को अंग्रेजों ने पूरी तरह से अपने ऊपर निर्भर बना दिया और भारत गरीबी, भूखमरी, अकालों का देश बनकर रह गया।

१८५७ का महाविद्रोह

- 1857ई. का महाविद्रोह इसलिए अतिविशिष्ट हो जाता है क्योंकि यह भारत का पहला ऐसा विद्रोह था जिसमें बहुवर्गीयता थी और इसका विस्तार उत्तर भारत के क्षेत्रों में अधिक था। जब राष्ट्रवादी चेतना भारत में अनुपस्थित थी। फिर भी इतना प्रभावी विद्रोह का होना स्वतंत्रता संग्राम का महत्वपूर्ण अध्याय बन जाता है।

कारण

- **राजनैतिक कारण** - अंग्रेज सदैव विदेशी बने रहे। इन्होंने भारतीय संसाधनों का अत्यधिक दोहन करने के लिये इसे अपना उपनिवेश बनाया। डलहौजी ने ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार के लिए हड़प नीति को अपनाया। सतारा, झांसी, नागपुर का विलय कर लिया। किन्तु जब यह नीति अवध पर लागू न हो सकी तो 1856 में उस पर अकुशलता का आरोप लगाकर ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने की घोषणा कर दी गई।

सैन्य कारण

- नस्लीयता का सेना में अतिप्रभावित होना।
- लार्ड कैनिंग ने सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम पारित किया जिसके द्वारा किसी भी क्षेत्र में भारतीय सैनिकों को युद्ध हेतु भेजा जाना था। भले ही भारतीय समाज उसे निषिद्ध क्षेत्र मानता हो। उदाहरणस्वरूप अफगानिस्तान।
- पोस्टल सेवा में भी सैनिकों हेतु नि:शुल्क व्यवस्था समाप्त कर दी गई। जिससे सैनिकों को महसूस हुआ कि उनके अधिकारों में कमी की जा रही है।
- धार्मिक प्रतिबंधों के कारण भी सैनिक असंतुष्ट थे। पगड़ी न पहनने व धार्मिक चिन्हों की मनाही को लेकर ही 1806 में वेल्लौर सैनिक विद्रोह हुआ था।

सामाजिक-धार्मिक कारण

- हमारी परंपरागत व्यवस्था में अंग्रेजों का हस्तक्षेप भारतीय समाज को असंतुष्ट करता है। ईसाई धर्म प्रचारकों के द्वारा धर्मान्तरण की कार्यवाहियां भी उनके असंतोष को बढ़ा रही थी।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

- 1850ई. में धार्मिक अयोग्यता अधिनियम लाया गया। जिसके अनुसार किसी हिन्दू द्वारा धर्मपरिवर्तन के बाद भी पैतृक सम्पत्ति से उसका अधिकार वैध माना गया। जो धर्मान्तरण को बढ़ावा दे रहा था।

आर्थिक-प्रशासनिक कारण

- अंग्रेजों ने भारत से अधिकतम संसाधनों के दोहन व हुआ। साम्राज्य के स्थायित्व के लिये आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था की नींव रखी तथा अलग-अलग क्षेत्रों में जो जाति-धर्म के अनुसार कानून बने थे उनकी जगह विधि का शासन स्थापना में प्रशासनिक एकीकरण को अंजाम दिया। इससे भी परंपरागत समाज असंतुष्ट हुआ।

तात्कालिक कारण

- ब्राउन वैस राइफल के स्थान पर एनफील्ड राइफल के प्रयोग में गाय व सुअर की चर्बीयुक्त कारतूसों के इस्तेमाल के अफवाह ने इस विद्रोह की शुरूआत की अर्थात् असंतोषरूपी बारूद में इसने चिंगारी का कार्य किया।

कथन	व्यक्तित्व
स्वार्थी सैनिकों का विद्रोह	सीले व लारेंस
राष्ट्रीय विद्रोह	डिजराइली
प्रथम स्वतंत्रता संग्राम	बी.डी. सावरकर

- **विशेष** – आजादी के बाद 1857 के विद्रोह का आधिकारिक इतिहासकार पहले आर.सी. मजूमदार को चुना गया किन्तु मतभेदों के बाद सुरेन्द्र नाथ सेन को आधिकारिक इतिहासकार चुना गया। इन्होंने 1857 नामक पुस्तक लिखी।
- सर सैयद अहमद खां विद्रोह के समय बिजनौर में सदर अमीन के पद पर थे। इन्होंने विद्रोह पर (Causes of Indian Muteny)नामक पुस्तक लिखी। इन्होंने भी इसे सैनिक विद्रोह कहा है।
- राजाओं, नवाबों व जमींदारों ने अंग्रेजों का साथ दिया तो नवोदित शिक्षित मध्यम वर्ग तटस्थ रहा। राजाओं की सहायता के कारण विद्रोह को दबाने में आसानी हुई अत: कैनिंग ने इन राजाओं व जमींदारों को तरंग अवरोधक कहा।

स्थान	नेतृत्वकर्ता	विशेष
दिल्ली	बहादुरशाह जफर	वास्तविक नेतृत्व बख्तशां के हाथों में था। जफर विद्रोह की सफलता के प्रति आशंकित बने रहे।
लखनऊ/अवध	बेगम हजरत महल	अपने पुत्र विजरिस कादिर के नाम से विद्रोह किया। अंग्रेजों को चिनहट में कड़ी शिकस्त मिली।
कानपुर	नाना साहब (धोधुपंत, तात्यां टोपे)	
रूहेलखंड(आधुनिक बरेली)	खान बहादुर खान	यहां ब्रिटिश सेना का नेतृत्व कैंपवेल ने किया।
झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई (वास्तविक नाम मणिकर्णिका, लोकप्रिय नाम मनु)	पति गंगाधर राव थे। सेनापति ह्यूरोज ने इन्हें विद्रोहियों में एकमात्र मर्द कहा था।
आरा जगदीशपुर	बाबू कुंवर सिंह	बिलियम टेलर ने इनके विद्रोह का दमन किया।

- **विशेष** – 29 मार्च को बैरकपुर में मंगल पाण्डे ने विद्रोह की शुरूआत कर दी। इसी क्रम में 9 मई को मेरठ में सैनिकों ने एकजुट होकर विद्रोह कर दिया और दिल्ली जाकर मुगल सम्राट बहादुर शाहजफर को विद्रोह का नेता घोषित कर दिया।
- अवध क्षेत्र में इस विद्रोह की व्यापकता सर्वाधिक थी तो इलाहाबाद और वाराणसी में स्वत:स्फूर्त था।
- मौलवी अहमद उल्लाह जो मूलत: मद्रास के रहने वाले थे उन्होंने फैजाबाद को अपना कार्यक्षेत्र बनाया और अंग्रेजों के विरूद्ध जेहाद का नारा दिया।
- नानासाहब और बेगम हजरत महज नेपाल की ओर चले गये और जफर की गिरफ्तारी हुमायूँ के मकबरे मे हुई तथा इन्हें रंगून निर्वासित कर दिया गया।
- रसेल नामक यूरोपीय पत्रकार को इस विद्रोह का साक्षी माना जाता है।
- यद्यपि धार्मिक सांस्कृतिक तत्वों के प्रयोग से जनता राष्ट्रीय आन्दोलन की ओर आकर्षित हुई किन्तु मुस्लिम समुदाय की सहभागिता प्रभावित हुई और साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिला।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पूर्व की संस्थाएँ

- भारत की पहली राजनीतिक संस्था 1838 ई. में लैंड होल्डर सोसाइटी (Land holders society) के नाम से कलकता में बनी। इसकी शुरुआत बिहार, बंगाल, उड़ीसा के जमींदार वर्गो

Downloaded From www.studymasterofficial.com

के हितों की रक्षा के लिए किया गया। 1843 ई. में ब्रिटिश इंडियन सोसाइटी का गठन किया गया। 1851 में दोनों का गठन हो गया और ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन का गठन किया गया।

- 1852 ई. में मद्रास नेटिव एसोसिएशन और बॉम्बे एसोसिएशन की स्थापना की गई।
- 1866 ई. में दादा भाई नौरोजी ने लंदन में ईस्ट इंडिया एसोसिएशन की स्थापना की गई। इसका उद्देश्य भारतीय प्रश्नों पर विचार करना और भारत के कल्याण के दिशा में ब्रिटेन के नेताओं को प्रभावित करना।
- नौरोजी का जन्म 1825 ई. में हुआ था। इन्हें भारत का पितामह (Grand old man of India) कहा जाता है।
- जुलाई 1876 ई. में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी तथा आनंद मोहन बोस के नेतृत्व में इंडियन एसोसिएशन की स्थापना किया गया।
- 1884 ई. में मद्रास एसोसिएशन की स्थापना किया गया। 1885 ई. में फिरोज शाह मेहता के. टी. तैलंग और तैयबजी ने मिलकर बम्बई प्रेसीडेंसी एसोसिएशन की स्थापना की।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

- कांग्रेस की स्थापना का श्रेय ए. ओ. ह्यूम को दिया जाता है। इसका प्रथम अधिवेशन दिसम्बर 1885 ई. में बम्बई में हुआ। इसमें 72 सदस्य शामिल थे। इस अधिवेशन की अध्यक्षता डब्लू. सी. बनर्जी ने किया।
- लाला लाजपत राय ने कांग्रेस की स्थापना को सुरक्षा वाल्व कहा।
- कांग्रेस के उदारवादी चरण 1885 से 1905 ई. तक रहा। इस समय मुख्य नेता दादाभाई नौरोजी, महादेवगोविन्द रानाडे फिरोज शाह मेहता, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले मुख्य थे।
- 1886 ई. में कांग्रेस अधिवेशन में 436 प्रतिनिधि सदस्य हो गये।
- कांग्रेस की स्थापना के समय डफरिन गवर्नर जनरल था।

उग्रवादी चरण

- कांग्रेस का दूसरा चरण 1905 से 1915 तक रहा। इस पर उग्रवादियों का प्रभाव रहा। इस समय आंदोलन का नेतृत्व बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, बिपिन चन्द्रपाल और अरविन्द घोष कर रहे थे। उग्रवादियों का प्रमुख लक्ष्य स्वराज प्राप्त करना था। उन्होंने विदेशी माल का बहिष्कार, स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षा पर बल दिया।
- तिलक ने मराठा पत्रिका अंग्रेजी में और केसरी मराठी में निकाली। 1893 ई. में तिलक ने गणपति उत्सव और 1895 ई. में शिवाजी महोत्सव का आरम्भ किए।
- तिलक पहले व्यक्ति थे जिन्होंने महाराष्ट्र के किसानों को सलाह दी कि जब भी सूखा, अकाल आदि से फसल नष्ट हो तो लगान देना बंद कर दें।
- 20 जुलाई 1905 को कर्जन ने बंगाल विभाजन किया। 16 अक्टूबर को इसे लागू किया गया। इस दिन को शोक दिवस के रुप में मनाया गया।
- बंगाल विभाजन के विरोध में स्वदेशी आंदोलन शुरु किया गया। 1905 में गोखले की अध्यक्षता में कांग्रेस के बनारस अधिवेशन में बंगाल मे स्वदेशी आंदोलन और बहिष्कार आंदोलन का समर्थन किया गया। 1906 के कलकत्ता अधिवेशन में नौरोजी ने अध्यक्षता करते हुए कहा कांग्रेस का उद्देश्य स्वराज की स्थापना करना है।
- 1907 के सूरत अधिवेशन में स्वदेशी आंदोलन को लेकर पार्टी में विभाजन हो गया। मिन्टो ने मार्ले को लिखा। सूरत में कांग्रेस का विभाजन हमारी सबसे बड़ी जीत है।
- इसी समय अंग्रेज के सहयोग से ढाका के नवाब ने इंडियन मुस्लिम लीग की स्थापना 1906 ई. में की।
- इसी समय तिलक को बंदी बनाकर 6 वर्ष के लिए मांडले जेल भेजा गया। यही इसने गीता रहस्य नामक पुस्तक लिखी।

क्रांतिकारी आंदोलन

- क्रांतिकारी आंदोलन की शुरुआत महाराष्ट्र के चितपावन ब्राह्मण ने 1897 में **W.C. Rand** की हत्या करके की। ये दोनों भाई दामोदर चापेकर और बाल कृष्ण चापेकर थे।
- अरविन्द घोष, वारीन्द्र घोष, भूपेन्द्र दत्त चटोपाध्याय ने युगांतर का संपादन किया। मैडम कामा ने वंदे मातृरम पत्र का सम्पादन किया।
- महाराष्ट्र में वी. डी. सावरकर और गणेश सावरकर नामक दो भाइयों ने 1904 ई. में अभिनव भारत नामक संगठन की स्थापना की।
- 1908 ई. में मुजफ्फरपुर के एक बदनाम जज किंग्सफार्ड की हत्या के प्रयास में प्रफुल्ल चाकी ने गोली मारकर आत्महत्या कर ली और खुदीराम बोस को गिरफ्तारी के बाद फाँसी दी गई।
- अरविन्द घोष पांडिचेरी चले गए जहाँ उन्होंने एक आश्रम की स्थापना की। उन्होंने सावित्री और द लाइफ डिवाइन को रचना की।
- प्रथम विश्व युद्ध के समय 1914 ई. में कामागाटामारु प्रकरण हुआ। गुरदीप सिंह नामक एक भारतीय सिंगापुर से एक कामागाटामारु जहाज लेकर वेंकुवर पहुँचा ।
- 1913 ई. में लाल हरदयाल और सोहन सिंह भाकना ने सैन फ्रांसिस्को में गदर पार्टी की स्थापना की। इसने नवम्बर 1913 में गदर पत्रिका निकाली जो अंग्रेजी, उर्दु और गुरुमुखी तीनों में प्रकाशित हुआ।
- माण्डले जेल से लौटने के बाद तिलक ने कांग्रेस के साथ समझौते की नीति अपनाई जिसमें एनी बेसेंट ने सहायता की। तिलक ने 28 अप्रैल 1916 को बेलगाँव (कर्नाटक) में होमरुल लीग की स्थापना की। एनी बेसेंट ने भारत में

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

आयरलैण्ड की तरह सितम्बर 1916 में मद्रास में होमरुल लीग की स्थापना की।

- तिलक को वेलेंटाइन शिरोल ने भारतीय अशांति का जनक कहा।
- 1916 में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में कांग्रेस के दोनों धड़े फिर से एक हो गए। लखनऊ के कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष अम्बिका चरण मजूमदार थे। लखनऊ में अपने पुराने मतभेद भुलाकर कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने भी समझौता कर लिया। इसे लखनऊ समझौता के नाम से जाना जाता है।
- 1914 ई. में सरकार ने अबुल कलाम आजाद के पत्र अल हिलाल और मौलाना मोहम्मद अली के पत्र कामरेंड को बंद कर दिया।

सम्प्रदायवाद का विकास

- आगा खाँ के जुड़ने के बाद मुस्लिम लीग अब अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। मौलाना मोहम्मद अली, मौलाना जफर अली खान और मजहरुल के नेतृत्व में उग्र राष्ट्रवादी अहरार आंदोलन की स्थापना हुई। 1911 ई. में तुर्की एवं इटली के बीच युद्ध की स्थिति में भारत से डा. एस. ए. अंसारी के नेतृत्व में तुर्की की सहायता के लिए एक मेडिकल मिशन भेजा गया।
- 1909 ई. में पंजाब हिन्दू सभा की स्थापना हुई। अप्रैल 1915 ई. में कासिम बाजार के राजा की अध्यक्षता में अखिल भारतीय हिन्दू महासभा का पहला अधिवेशन बनारस में हुआ।

गाँधी जी

- गाँधी जी 24 वर्ष की उम्र में 1893 में दादा अब्दुल्ला नामक एक गुजराती व्यापारी का मुकदमा लड़ने के लिए दक्षिण अफ्रीका के डरबन गए। वहाँ "नटाल भारतीय कांग्रेस" का गठन किया। गाँधी जी ने टॉलस्टॉय फार्म की स्थापना की जो बाद में गाँधी आश्रम बन गया।
- गाँधी जी 46 वर्ष की उम्र में जनवरी 1915 ई. को भारत लौट आए 1916 ई. में अहमदाबाद के पास साबरमती आश्रम की स्थापना की।
- गाँधी जी ने सत्याग्रह का पहला प्रयोग बिहार के चम्पारन जिले में 1917 ई. में किया। यह नील की खेती से संबंधित था। 1918 में गाँधी जी ने अहमदाबाद के मिल मजदूरों के पक्ष में आंदोलन किया। 1918 में गुजरात के खेड़ा जिले के किसानो की मदद में आंदोलन किए।

रौलेट सत्याग्रह

- रौलेट की अध्यक्षता में एक कमेटी ने दो विधेयक बनाए जिसे रौलेट बिल नाम दिया रौलेट एक्ट एक काला कानून था जिसका उद्देश्य था कोई वकील नहीं, कोई अपील नहीं कोई दलील नहीं। फरवरी 1919 में गाँधी जी ने सत्याग्रह सभा बनाई।
- 13 अप्रैल 1919 को वैशाखी के दिन सैफुद्दीन किचलू और डा. सत्यपाल के गिरफ्तारी के विरोध में लोग जालियाँवाला बाग में जमा हुए। जनरल डायर ने निहत्थे लोगों पर गोलिया चलाई जिसमें 379 लोग मारे गए। रविन्द्रनाथ टैगोर ने इस काण्ड के विरोध स्वरूप अपनी नाइट की उपाधि लौटा दी।

खिलाफत और असहयोग आंदोलन 1919-1922

- तुर्की की समस्या को लेकर भारतीय मुसलमान अली बंधु मौलाना आजाद हकीम ने खिलाफत कमेटी का गठन किया और नवम्बर 1919 में दिल्ली में अखिल भारतीय खिलाफत सम्मेलन का आयोजन किया।
- खिलाफत की समस्या को लेकर गाँधी जी ने अंसहयोग आंदोलन आरम्भ किए। 31 अगस्त 1920 को खिलाफत एवं असयोग आंदोलन शुरु हुआ। 1 अगस्त 1920 को तिलक की मृत्यु हो गयी असहयोग आंदोलन चलाने के लिए तिलक स्वराज्य कोष की स्थापना की गई जिसमें छः महीने में 1 करोड़ रुपया आ गया।
- 5 फरवरी 1922 को गोरखपुर जिले के चौरी चौरा नामक गाँव में 3000 किसानों ने पुलिस थाने में आग लगा दी जिससे 22 पुलिस कर्मी मारे गए। गाँधी जी ने 12 फरवरी 1922 को गुजरात के वारदोली नामक स्थान पर एक मीटिंग कर असहयोग आंदोलन वापस ले लिया।
- उधर तुर्की में मुस्तफा कमाल पाशा ने नवम्बर 1922 में सुल्तान को सत्ता से वंचित कर खलीफा का पद समाप्त कर दिया फलस्वरुप खिलाफत आंदोलन भी बंद हो गया।
- असहयोग आंदोलन शुरु करने के पहले ही गाँधी जी प्रथम विश्व युद्ध के समय दिए गए पुरस्कार कैसर-ए-हिन्द को लौटा दिए थे।
- मो. अली पहले नेता थे जिन्हें सर्वप्रथम असहयोग आंदोलन के समय गिरफ्तार किया गया।
- स्वराज पार्टी की स्थापना एक जनवरी 1923 में की गयी। अध्यक्ष चितरंजन दास थे। मोती लाल नेहरु सचिव थे। 1923 के चुनाव में स्वराज्य पाटी को मध्य प्रांत में पूर्ण बहुमत मिला 1 जून 1925 में सी. आर. दास की मृत्यु हो गयी।

क्रांतिकारी आंदोलन का दूसरा चरण

- इस समय पुराने क्रांतिकारी राम प्रसाद विस्मिल, योगेश चटर्जी, सचीन्द्रनाथ सान्याल आगे आए। सचीन्द्र सान्याल द्वारा लिखित पुस्तक बंदी जीवन क्रांतिकारी आंदोलनकारियों का मुख पत्र बन गया।
- क्रांतिकारियों का कानपुर में एक सम्मेलन हुआ इसमें हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी अथवा हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का गठन किया गया। 9 अगस्त 1925 को

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

लखनऊ के पास काकोरी षड्यंत्र को अंजाम दिया गया। इसमें शामिल रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक अल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी और रोशन सिंह को फाँसी दी गई। चन्द्रशेखर आजाद फरार हो गए।

- प्रसिद्ध गीत 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है' की रचना पं. राम प्रसाद बिस्मिल ने की थी।
- सितम्बर 1928 को दिल्ली में क्रांतिकारियों का एक सम्मेलन हुआ जिसमें अपने संगठन का नेतृत्व चन्द्रशेखर आजाद के हाथों में देकर उसका नाम बदलकर हिन्दुस्तान सोसलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी कर दिया।
- 30 अक्टूबर 1928 को साइमन कमीशन के लाहौर विरोधी आंदोलन में लाठी से घायल होकर लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गयी।
- 8 अप्रैल 1929 को भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त, राजगुरु ने केन्द्रीय विधान सभा में बम फेका। इसके फलस्वरुप 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी दी गई।
- विद्रोही संगठनों में चटगाँव क्रांतिकारियों का गुट अधिक सक्रिय था। जिसका नेता सूर्यसेन (मास्टर दा) था। 12 जनवरी 1934 को इसे फाँसी दी गई।
- 27 फरवरी 1931 को चन्द्रशेखर आजाद इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में एक पुलिस मुठभेड़ में शहीद हुए।

साइमन कमीशन

- 1919 के भारत शासन अधिनियम के प्रावधानों के सफलता एवं असफलता के जाँच के लिए एक कमीशन का गठन होना था। नवम्बर 1927 को ब्रिटिश सरकार ने इंडियन स्टेटयुटरी कमीशन का गठन किया। इसकी अध्यक्षता साइमन ने की।
- इसके विरोध के कारण में पहला कारण कमीशन का गठन 2 वर्ष पूर्व कर दिया गया एवं कमीशन के सभी सदस्य अंग्रेज थे।
- 3 फरवरी 1928 को साइमन कमीशन बम्बई पहुँचा।

नेहरु रिपोर्ट

- लार्ड बरकेनहेड ने कांग्रेसी नेताओं को चुनौती दी कि आप में योग्यता है तो आप विभिन्न सम्प्रदायों के आपसी सहमति से एक संविधान का मसविदा प्रस्तुत करे। फलस्वरुप मई 1928 में बम्बई में एक सर्व दलीय बैठक का आयोजन कर मोती लाल नेहरु की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई। अगस्त 1928 ई. में नेहरु रिपोर्ट को अंतिम रुप दिया गया।
- मोहम्मद अली जिन्ना ने नेहरू रिपोर्ट में पृथक निर्वाचक मण्डल नहीं होने के कारण मार्च 1929 में अपनी सुरक्षा के लिए 14 सुत्रीय मांग रखी।
- जवाहर लाल नेहरू को 1929 के लाहौर अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया गया। 31 दिसम्बर 1929 को नेहरू रिपोर्ट को निरस्त घोषित किया गया और पूर्ण स्वराज को अपना लक्ष्य बनाया गया। 26 जनवरी 1930 को प्रथम स्वाधीनता दिवस मनाने का निश्चय किया गया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन

- गाँधी जी 12 मार्च 1930 को अपने 78 अनुयायियों के साथ साबरमती आश्रम से 375 कि.मी. दूर दांडी गाँव के लिए रवाना हुए। वे 6 अप्रैल 1930 को दांडी पहुँचे और समुद्र तट से एक मुट्ठी नमक उठाकर नमक कानून को तोड़ा। इसी के साथ सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत हुई।
- पश्चिमोत्तर प्रांत पेशावर में **सीमान्त गाँधी** के नाम से प्रसिद्ध **खान अब्दुल गफ्फार खाँ** के नेतृत्व में पठानों ने **खुदाई खिदमतगार** नामक संगठन बनाया। ये लाल कुर्ती वाले कहलाते थे।
- सुभाष चंद्र बोस ने गाँधी जी की दांडी यात्रा के संबंध में कहा था कि "महात्मा जी के दांडी यात्रा की तुलना एल्बा से लौटने पर नेपोलियन की पेरिस मार्च से की जा सकती हैं"।
- नवम्बर 1930 ई. में रैम्जे मैकडोनाल्ड की अध्यक्षता में लंदन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया। कांग्रेस ने इसका विरोध किया। कांग्रेस के अनुपस्थिति के कारण आंदोलन असफल रहा।
- 5 मार्च 1931 को गाँधी जी इरविन से मिले और दोनों के बीच गाँधी इरविन समझौता हुआ। कांग्रेस की ओर से गाँधी जी और सरकार की ओर से इरविन ने हस्ताक्षर किए। इसे दिल्ली समझौता के नाम से जाना जाता है।
- दूसरा गोल मेल सम्मेलन में भाग लेने के लिए गांधी जी 29 अगस्त 1931 को लंदन के लिए रवाना हुए। दक्षिणापंथी खेमे का नेता चर्चिल ब्रिटिश सरकार से इस बात के लिए सख्त नाराज था कि वह देशद्रोही फकीर को बराबरी का दर्जा देकर उससे बात कर रही है। गाँधी जी कांग्रेस के एक मात्र प्रतिनिधि थे।
- 18 अगस्त 1932 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री मैक्डोनाल्ड ने साम्प्रदायिक अधिनिर्णय की घोषणा की। गाँधी जी इस समय यरवदा जेल में थे उन्होंने इसे भारतीय एकता पर हमला कहा इसके विरोध में 20 अगस्त 1932 को आमरण अनशन पर बैठ गए
- मदन मोहन मालवीय, राजेन्द्र प्रसाद, राज गोपालाचारी के प्रयास से गाँधी जी और अम्बेडकर के बीच एक समझौता हुआ। **इसे पूना समझौता कहते है।**
- जेल से छुटने के बाद गाँधी जी ने हरिजन यात्रा शुरु की। गाँधी जी ने दलित वर्ग को हरिजन नाम दिया। 8 जनवरी 1933 को मंदिर प्रवेश दिवस के रुप में मनाया गया। गाँधी जी ने 1933 से साप्ताहिक 'हरिजन पत्र' का प्रकाशन शुरु किया।
- ब्रिटिश सरकार ने 17 नवम्बर 1932 को तृतीय गोलमेज सम्मेलन बुलाया जो 24 दिसम्बर 1932 तक चला। कांग्रेस ने इस सम्मेलन का बहिस्कार किया।

प्रांतीय चुनाव

- कांग्रेस कार्यकारिणी समिति ने भारत शासन अधिनियम 1935 के तहत चुनाव लड़ने का फैसला किया। चुनाव जनवरी फरवरी 1937 ई. में हुआ। जुलाई 1937 के दौरान कांग्रेस ने

Downloaded From www.studymasterofficial.com

सात प्रातों में अपने मंत्रिमण्डल का गठन किया। ये प्रांत थे- मद्रास, बम्बई, मध्य प्रांत, उड़ीसा, बिहार और संयुक्त प्रांत बाद में कांग्रेस ने पश्चिमोत्तर प्रांत, असम और पंजाब में भी मंत्रिमण्डल बनाए।

- 1938 ई. मे कांग्रेस के अध्यक्ष सुभाष चन्द्र बोस ने राष्ट्रीय योजना समिति की नियुक्ति की। 1939 ई. में भी सुभाष चन्द्र बोस कांग्रेस अध्यक्ष चुने गए परन्तु महात्मा गाँधी के विरोध के वजह से इस्तीफा दे दिया और फारवर्ड ब्लॉक की स्थापना की।
- अक्टूबर 1939 में ब्रिटिश सरकार ने जनता से पूछे बिना ही भारत को द्वितीय विश्व युद्ध में झोंक दिया। इसके विरोध में कांग्रेस मंत्रिमण्डल ने त्याग पत्र दे दिया। मुस्लिम लीग ने इसे मुक्ति दिवस के रुप में मनाया। सितम्बर 1939 में जब नाजी जर्मनी ने पोलैण्ड पर आक्रमण किया तो द्वितीय विश्व युद्ध शुरु हो गया।
- 1940 के रामगढ़ कांग्रेस अधिवेशन में सरकार के साथ इस बात पर सहयोग करने का प्रस्ताव रखा कि केन्द्र में अंतरिम सरकार का गठन किया जाए। वायसराय लिनलिथगों ने युद्ध के दौरान कांग्रेस का सहयोग प्राप्त करने के लिए एक प्रस्ताव रखा जिसे 'अगस्त प्रस्ताव' कहा जाता है। इस प्रस्ताव में कांग्रेस के अंतरिम सरकार गठित करने के प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया।
- अगस्त प्रस्ताव से मोहभंग होने के बाद कांग्रेस ने व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरु करने का निश्चय किया। अक्टूबर 1940 में सत्याग्रह शुरु हुआ बिनोबाभावे पहले सत्याग्रही थे और जवाहर लाल नेहरु दूसरे सत्याग्रही थे। इस आंदोलन का नाम 'दिल्ली चलो आंदोलन' पड़ गया।

क्रिप्समिशन

- मार्च 1942 में कैबिनेट मंत्री स्टेफर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल भारत भेजा। युद्ध समाप्ति के बाद संविधान सभा के गठन का प्रस्ताव दिया गया। महात्मा गाँधी ने इसे 'उत्तरतिथीय चेक' ('Post dated cheque') कहा।

भारत छोड़ो आंदोलन

- भारत छोड़ों आंदोलन को **'अगस्त क्रान्ति'** भी कहा जाता है। 14 जुलाई 1942 को वर्धा बैठक में इस आंदोलन के प्रस्ताव की स्वीकृति दे दी। 8 अगस्त 1942 को बम्बई में अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी की बैठक में वर्धा प्रस्ताव की पुष्टि की गई ।
- 8 अगस्त 1942 को गाँधी जी ने घोषणा की "मैं पूर्ण स्वाधीनता से कम किसी चीज से संतुष्ट होने वाला नहीं हूँ।" उन्होंने करो या मरो का प्रसिद्ध नारा दिया।
- बलिया में चितु पाण्डे के नेतृत्व में पहली समानान्तर सरकार की स्थापना हुई।
- सतारा (महाराष्ट्र) में वाई. वी. चव्हाण के नेतृत्व में समानांतर सरकार स्थापित हुई और बंगाल के मिदनापुर जिले के तामलुक नामक स्थान पर 'जातीय सरकार' की स्थापना की गई। सतारा की सरकार 1945 तक चली।
- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गांधी जी को आगा खाँ पैलेस (पूना) में कैद करके रखा गया था। बाकी नेताओं को अहमद नगर के किले में रखा गया। इस दौरान उषा मेहता ने कांग्रेस के गुप्त रेडिया का संचालन किया। जिस पर राम मनोहर लोहिया जनता को संबोधित करते थे।

राजगोपालाचारी फार्मूला या सी. आर. फार्मुला

- कांग्रेस और लीग क बीच सहयोग के लिए सी. आर. फार्मुला का विकास हुआ इसे महात्मा गाँधी का समर्थन प्राप्त था। जिन्ना द्वारा इसे अस्वीकार कर दिया गया।

बैवेल योजना

- कांग्रेस, लीग एवं अन्य नेताओं के बीच सहमति करने के दृष्टिकोण से वायसराय वैवेल ने 25 जून 1945 को शिमला में बैठक बुलाई। इसे बैवेल योजना कहते है।

आजाद हिन्द फौज

- **रास बिहारी बोस ने आई. एन. ए. का गठन किया** जबकि सुभाष चन्द्र बोस द्वारा जर्मनी से सिंगापुर आकर आई. एन. ए. के नेतृत्व को संभाला तो इसमें नई जान आई।
- जुलाई 1944 में सुभाष चन्द्र बोस के द्वारा गाँधी जी को राष्ट्रपिता कहकर संबोधित किया गया एवं गाँधी जी से आशीर्वाद मांगें।
- सुभाष चन्द्र बोस के द्वारा 'जय हिन्द' एवं 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा' का नारा दिया गया।

नौ सैनिक विद्रोह

- 18 फरवरी 1946 ई. को बम्बई में 'तलवार' नामक जहाज के 1100 नौ सैनिक ने नस्लीय भेद, खराब सुविधाओं एवं आई. एन. ए. सैनिक के मुकदमें के विरोध में विद्रोह कर दिए।

कैबिनेट मिशन

- एटली की सरकार द्वारा पैथिक लारेन्स की अध्यक्षता में भारत भेजा जिसमें भारत सचिव स्टेफार्ड क्रिप्स, व्यापार मण्डल के अध्यक्ष ए. वी. अलैक्जैडर सदस्य थे। इसका उद्देश्य सत्ता का शांतिपूर्ण हस्तांतरण के लिए नीति निर्धारण करना था।
- लीग ने कैबिनेट मिशन के प्रस्तावों को मानने से इंकार कर दिया। फिर 16 अगस्त 1946 को सीधी कार्यवाही दिवस मनाया।
- 2 सितम्बर 1946 को अंतरिम सरकार का गठन जवाहर लाल नेहरु की अध्यक्षता में हुई। इसमें लीग भी शामिल हुआ ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली द्वारा 1948 तक सत्ता केन्द्र या विभिन्न प्रातों को सत्ता सौपने की घोषणा की गई।

माउंटबेटन योजना

- इस योजना के अनुसार भारत और पाकिस्तान दो राष्ट्र बने। पाकिस्तान 14 अगस्त एवं भारत 15 अगस्त 1947 ई. को स्वतंत्र हुआ। भारत के गर्वनर जनरल माउटबेंटन जबकि पाकिस्तान में मु. अली जिन्ना बने।
- देशी रियासतों को भारत या पाकिस्तान किसी एक में मिलना अनिवार्य। सीमा निर्धारण के लिए सीमा आयोग रेडक्लिफ आयोग बना।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

भारत में सिविल सेवा का विकास

- कार्नवालिस द्वारा सिविल सेवा को व्यवस्थित किया गया। डी. एम. एवं डी. सी. के पद को अलग-अलग कर दिया गया। इस सेवा को स्टील फ्रेम ऑफ इंडिया के नाम से जाना जाता है।
- 1853 के अधिनियम के अनुसार आई. सी. एस. में नियुक्ति के लिए प्रतियोगिता परीक्षा का प्रावधान।
- 1858 ई. में सिविल सेवा में भर्त्ती की अधिकतम आयु 23 वर्ष जो 1878 में 19 वर्ष कर दी गई।

भारत में प्रेस का विकास

- भारत के प्रिंटिंग प्रेस लाने का श्रेय पुर्तगालियों को है। 1557 ई. में गोवा में कुछ पादरी लोगों ने भारत में पहली पुस्तक छापी।
- 1684 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में प्रिटिंग प्रेस की स्थापना की।
- भारत में पहला समाचार पत्र कम्पनी के विलियम वोल्ट्स ने 1776 ई. में निकालने का प्रयास किया पर असफल रहा सबसे पहले भारत में समाचार पत्र निकाले का श्रेय जेम्स आगस्टस हिक्की को 1780 में मिला जब बंगाल गजट का प्रकाशन किया।

कुछ महत्वपूर्ण पत्र

पत्र	सम्पादक	भाषा
हिन्दू पैट्रियोट	हरिश्चंद्र मुखर्जी	अंग्रेजी
हिन्दू	रानाडे	अंग्रेजी
भारत मित्र	वाल मुकुन्द	हिन्दी
नव जीवन, हरिजन	गाँधी जी	गुजराती
इंडिपेंडेंस	मोती लाल नेहरू	अंग्रेजी
अलहिलाल,अल बिलाग	अबुल कलाम आजाद	उर्दू
कामरेड	मुहम्मद अली	अंग्रेजी
कामनवेल, न्यू इंडिया	एनी बेसेंट	अंग्रेजी
सोम प्रकाश	ईश्वरचंद्र विद्यासागर	बांग्ला
केसरी (मराठी)	तिलक एवं आगरकर	
मराठा (अंग्रेजी)		

बंगाल के गवर्नर जनरल

- क्लाइव 1757 से 1760 ई. भारत में ब्रिटिश राज्य का संस्थापक था। इनके समय में श्वेत विद्रोह तथा बंगाल में द्वैध शासन प्रणाली लागू हुयी। इसके बाद-
- वेन्सिटार्ट (1760 से 65)
- क्लाइव (1765 से 67)
- वेरेल्स्ट (1767 से 69)
- कार्टियर (1769 से 72)

बंगाल का गवर्नर जनरल

वारने हेस्टिंग्स (1772 ई. -1785 ई.)

- गवर्नर जनरल बना। सरकारी खजाना मुर्शीदाबाद से कलकत्ता स्थानांतरित। दीवानी फौजदारी अदालतों की शुरूआत की। 1784 में दक्षिण एशियाटिक सोसाईटी ऑफ बंगाल की स्थापना की। इसके समय रूहेला युद्ध, प्रथम मराठा युद्ध तथा द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध हुआ।
- इसके समय में ही 1781 ई. में कलकत्ता में मुस्लिम शिक्षा के विकास के लिए प्रथम मदरसा स्थापित किया 1775 ई. में नन्द कुमार को फाँसी की सजा तथा 1778 ई. में बनारस के राजा चैत सिंह के साथ दुर्व्यवहार किया। जोनाथन डंकन ने बनारस में संस्कृत महाविद्यालय 1791 ई. की स्थापना की।

लॉर्ड कार्नवालिस (1786 ई. - 1793 ई.)

- इसके समय में तृतीय मैसूर युद्ध तथा श्री रंग पट्टनम की संधि 1792 ई. हुई थी। कार्नवालिस कोड का निर्माण करवाया। कार्नवालिस ने पुलिस सुधार के लिए भी कार्य किया तथा 1793 ई. में बंगाल में स्थायी बंदोबस्त लागू किया जिसके तहत जमींदारों को अब भू-राजस्व का 10/11 भाग कंपनी को देना था तथा 1/11 भाग अपने पास रखना था इत्यादि।

सर जॉन शोर (1793 ई. - 1798 ई.)

- अहस्तक्षेप की नीति अपनायी सिर्फ अवध के उत्तराधिकार के मामले में हस्तक्षेप किया तथा 1795 ई. में निजामों तथा मराठों के मध्य युद्ध इसके समय हुआ।

लॉर्ड बेलेजली (1798 ई. - 1805 ई.)

- बेलेजली के नेतृत्व में अंग्रेजों ने चतुर्थ मैसूर युद्ध (1799 ई.) किया जिसमें टीपू सुल्तान मारा गया। सहायक संधि की शुरूआत की।

जॉर्ज बार्लो (1805 ई. - 1807 ई.)

- इसके समय में वेल्लोर विद्रोह (1806) हुआ जिसमें अनेक अंग्रेज सैनिक मारे गये।

लॉर्ड मिंटो-1 (1807 ई. - 1813 ई.)

- 1813 ई. का चार्टर अधिनियम पारित तथा चार्ल्स मेटकॉफ को मिंटो ने ही रणजीत सिंह के दरबार में भेजा था, जहाँ 1809 ई. में अमृतसर की संधि की गई।

लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813 ई. - 1823 ई.)

- 1814-16 ई. में नेपाल युद्ध तथा 1816 ई. में सुंगौली की संधि हुई। 1818 ई. में अंतिम मराठाा युद्ध इत्यादि।

लॉर्ड एमहर्स्ट (1823 ई. - 1828 ई.)

- इसके समय में प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध (1824-26 ई.) लड़ा गया। 1824 ई. का बैरकपुर का सैन्य विद्रोह भी हुआ। भरतपुर का घेरा भी इसी काल में हुआ था।

भारत के गवर्नर जनरल

लार्ड विलियम बैंटिक 1828 ई. - 1835 ई.

- यह भारत का प्रथम गवर्नर जनरल बना। इसके समय में ही 1829 ई. में सती प्रथा का अंत। ठगों की समाप्ति का श्रेय (1830 ई.) तथा बाल हत्या को प्रतिबंधित किया तथा इसी के समय मैकाले की सिफारिशों के बाद अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम स्वीकार कर लिया गया था।

लॉर्ड चार्ल्स मेटकॉफ (1835 ई. - 1836 ई.)

- प्रेस एक्ट (1835) पारित किया जिसके तहत भारतीय समाचारपत्रों पर आरोपित नियंत्रण को समाप्त कर दिया गया। इसे भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता कहा जाता है।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

- लार्ड एलनबरो 1842 से 1844

ऑकलैण्ड (1836 ई. - 1842 ई.)

- प्रथम ब्रिटिश अफगान युद्ध (1833 ई. - 1842 ई.) जिसमें अंग्रेजों को पराजय का सामना करना पड़ा और भारी नुकसाान भी उठाना पड़ा।

लार्ड एलिनबरो (1842 ई. - 1844 ई.)

- इसके समय 1833 के एक्ट द्वारा 1843 में दास प्रथा को प्रतिबंधित कर दिया गया।
- इसके समय प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध समाप्त हुआ और दास-प्रथा का उन्मूलन हुआ।
- इसने अगस्त 1843 में सिंध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।

लॉर्ड हार्डिंग (1844 ई. - 1848 ई.)

- प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध 1845 ई.-1846 ई. जिसमें अंग्रेजी सेना ने लाहौर पर अधिकार कर लिया। और सिक्खों पर लाहौर की संधि थोप दी।

लॉर्ड डलहौजी (1848 ई. - 1856 ई.)

- द्वितीय आंग्ल-सिक्ख युद्ध (1848 - 49 ई.) तथा पंजाब का ब्रिटिश शासन में विलय। पीगू का प्रदेश प्राप्त किया। शिक्षा संबंधी सुधारों में डलहौजी ने 1854 ई. के 'वुड डिस्पैच' को लागू किया। रुड़की में इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना सैन्य सुधार तथा उसी के समय में हुई राज्य की हड़प नीति इत्यादि। मुंबई से ठाणे तक भारत की पहली रेलगाड़ी चली।

भारत के वायसराय

लॉर्ड कैनिंग (1856 ई. - 1862 ई.)

- लॉर्ड कैनिंग भारत में कम्पनी द्वारा नियुक्त अंतिम गवर्नर जनरल तथा ब्रिटिश सम्राट के अधीन नियुक्त भारत का प्रथम वायसराय था। इसके समय में ही 1857 का महत्त्वपूर्ण विद्रोह हुआ था। 1858 का भारतीय परिषद् अधिनियम पारित। कैनिंग ने ही कलकत्ता, बंबई और मद्रास में विश्वविद्यालय की स्थापना (1857 ई.) की। भारतीय दंड संहिता (IPC) 1860 बनी।

लॉर्ड एल्गिन (1862 ई.- 1863 ई.)

- बहावी आंदोलन का दमन तथा 1863 ई. में इसकी मृत्यु भारत में हुई।

सर जॉन लारेंस (1864 ई. - 1868 ई.)

- भूटान का महत्त्वपूर्ण युद्ध हुआ। अफगानिस्तान के संदर्भ में लारेंस ने अहस्तक्षेप की नीति का पालन किया और तत्कालीन शासक शेरअली से दोस्ती की। अकाल आयोग का गठन।

लॉर्ड मेयो (1869 ई.- 1872 ई.)

- आयकर को 1% से बढ़ाकर 2.5% कर दिया। इसने कृषि विभाग तथा भारतीय सांख्यिकीय सर्वेक्षण विभाग की स्थापना की। इसके समय में ही भारत में पहली बार जनगणना की शुरूआत हुई। अजमेर में मेयो कॉलेज को स्थापना की। इसकी भारत में हत्या कर दी गई।

लॉर्ड नॉर्थ ब्रुक (1872 ई.-1876 ई. तक)

- इसके समय में बिहार बंगाल में भयानक अकाल पड़ा। पंजाब का प्रसिद्ध कूका आंदोलन इसी के समय में हुआ। इसी के समय में प्रिंस ऑफ वेल्स भारत आये।

लॉर्ड लिटन (1876 ई.-1880 ई.)

- यह उपन्यासकार, निबंधकार, लेखक एवं साहित्यकार था। इसे ओवन मैरिडिथ के नाम से जाना जाता था। 1876-78 में. भयंकर अकाल पड़ा जिसमें 50 लाख व्यक्ति मारे गये। इसकी जाँच के लिए रिचर्ड स्ट्रेची की अध्यक्षता में एक अकाल आयोग का गठन।
- 1 जनवरी, 1877 ई. को ब्रिटेन की महारानी को कैसर-ए-हिन्द की उपाधि से सम्मानित करने के लिए दिल्ली में भव्य दिल्ली दरबार का आयोजन किया। द्वितीय अफगान युद्ध (1878-80) हुआ। मार्च 1878 ई. में लिटन ने वर्नाम्युलर प्रेस एक्ट पारित कर भारतीय समाचार पत्रों पर कठोर प्रतिबंध लगा दिया।

लार्ड रिपन (1880 ई. में 1884 ई.)

- इसके समय में प्रथम फैक्टरी अधिनियम, भारत में नियमित जनगणना की शुरूआत तथा स्थानीय स्वशासन की शुरूआत (1882 ई.)। विलियन हंटर के नेतृत्व में शैक्षिक सुधारों के लिए 'हंटर आयोग' की स्थापना तथा इल्वर्ट विधेयक प्रस्तुत किया।

लॉर्ड डफरिन (1884 ई.-1888 ई.)

- तृतीय आंग्ल वर्मा युद्ध (1885-86 ई.) जिसमें वर्मा पराजित हुआ तथा इसी के समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन।

लॉर्ड लैंसडाऊन (1888 ई.-1894 ई.)

- भारत और अफगानिस्तान के मध्य सीमा का निर्धारण जिसे 'डूरंड लाइन' के नाम से जाना जाता है। इसके समय में 1891 ई. में दूसरी फैक्ट्री अधिनियम पारित।

लॉर्ड एल्गिन द्वितीय (1894 ई.-1899 ई.)

- 1895 से 1898 में भयंकर अकाल पड़ा जिसकी जॉच के लिए 'लायड़ आयोग' का गठन। मुण्डा विद्रोह तथा चापेकर बंधुओं द्वारा दो अंग्रेज अधिकारियों की हत्या की घटना।

लॉर्ड कर्जन (1899 ई.-1905 ई.)

- पुलिस सुधार के लिए पुलिस आयोग का गठन। शैक्षिक सुधार के अंतर्गत भारतीय विश्व विद्यालय अधिनियम (1904) पारित। सर्वाधिक रेलवे लाइन का विकास इसके समय। भारतीय पुरातत्व विभाग की स्थापना (1904 ई.) तथा सबसे महत्वपूर्ण घटना 1905 ई. का बंगाल विभाजन था।

लॉर्ड मिन्टो II (1905 ई.-1910 ई.)

- इसके समय में भारतीय परिषद् एक्ट 1909 ई. अथवा मिन्टों-मार्ले सुधार हुआ। आगा खाँ द्वारा 1906 ई. में मुस्लिम लीग की स्थापना की तथा 1907 ई. में कांग्रेस का सूरत अधिवेशन हुआ जिसमें कांग्रेस दो धरों में विभाजित हो गया।

लार्ड हार्डिंग II (1910 ई.-1916 ई.)

- जॉर्ज पंचम का भारत आगमन (12 दिसम्बर 1911 ई.), बंगाल विभाजन रद्द करने की घोषणा (1911 ई.) एवं भारत की

Downloaded From www.studymasterofficial.com

राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित करने की घोषणा (1911 ई.) शामिल है।

- 4 अगस्त, 1914 में प्रथम विश्व युद्ध प्रारंभ हुआ। तिलक एंव एनी वेसेन्ट ने होमरूल लीग (1916 ई.) की स्थापना की।

लार्ड चेम्सफोर्ड (1916 ई.-1921 ई.)

- रौलेट एक्ट (1919 ई.) पास हुआ। जालियाँवाला बाग हत्या काण्ड (13 अप्रैल, 1919) खिलाफत आंदोलन (1920-21 ई.) एवं गाँधी जी के सत्याग्रह असयोग आंदोलन (1920 ई.) की शुरूआत तथा तृतीय अफगान युद्ध आदि।

लॉर्ड रीडिंग (1921 ई.-1926 ई.)

- गाँधी जी द्वारा चलाया गया पहला असहयोग आंदोलन चौरी-चौरा घटना (1922 ई.) के कारण समाप्त। प्रिन्स ऑफ वेल्स ने नवम्बर 1921 ई. में भारत की यात्रा की। भोपाल विद्रोह (1921 ई.), एम.एन. राय द्वारा 1921 ई. में 'भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी' का गठन किया गया। 1923 ई. से प्रशासनिक सेवाओं में भारत एवं लंदन में एक साथ परीक्षा की शुरुआत तथा काकोरी रेल काण्ड इसी के काल की घटना है।

लॉर्ड इरविन (1926 ई.-1931 ई.)

- साइमन कमीशन (1928 ई.), गाँधी द्वारा 6 अप्रैल, 1930 ई. में सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ। लंदन में नवम्बर, 1931 ई. में प्रथम गोल मेज सम्मेलन का आयोजन। गाँधी इर्विन समझौता (5 मार्च, 1930 ई.) हुआ।

लॉर्ड विलिंगटन (1931 ई.-1936 ई.)

- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1931) में गाँधी ने कांग्रेस की तरफ से प्रतिनिधित्व किया। पूना समझौता गाँधी व अम्बेडकर के बीच (26 सितम्बर, 1932)। सांप्रदायिक अधिनियम तथा 1932 में तृतीय गोलमेज सम्मेलन हुआ।

लॉर्ड लिनालिथगो (1936 ई.-1944 ई.)

- 1 सितंबर, 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत। अप्रैल, 1939 ई. में सुभाष चन्द्र बोस ने फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना की। 1940 ई. में पहली बार पाकिस्तान की मांग की गई। अगस्त प्रस्ताव (8 अगस्त, 1940), 1942 ई. में क्रिप्स मिशन भारत आया तथा 1942 ई. में कंग्रेस ने भारत छोड़ो आंदोलन प्रारंभ किया।

लॉर्ड वैवेल (1944 ई.-1947 ई.)

- शिमला समझौता (1945 ई.),। कैबिनेट मेशन (1946 ई.) में भारत आया तथा तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने भारत को जून, 1948 ई. तक स्वतंत्र करने की घोषणा की।

लॉर्ड माउंटबेटन (मार्च, 1947 से जून, 1948 ई.)

- भारत का अंतिम वायसराय तथा स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल था जिसने 3 जून 1947 को यह घोषणा कि की भारत और पाकिस्तान के रुप में भारत विभाजन ही समस्या का हल है।

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (1948 ई.-1950 ई.)

- लॉर्ड माउन्टबेटन की वापसी के बाद 21 जून, 1948 को इनको भारत का गवर्नर जनरल बनाया गया। ये स्वतंत्र भारत के प्रथम भारतीय व अंतिम गवर्नर जनरल थे। उनके बाद भारत के संविधान के अनुसार शासन प्रमुख राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री बनने लगे।

भारत का संवैधानिक विकास

1773 का रेग्यूलेटिंग एक्ट

- इस एक्ट का उद्देश्य भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की गतिविधियों को ब्रिटिश सरकार की निगरानी में लाना था। कोर्ट ऑफ डायरेक्टर का कार्यकाल एक वर्ष के स्थान पर 4 वर्ष का हो गया। कलकत्ता में एक सुप्रीम कोर्ट की स्थापना की गई इम्पे को मुख्य न्यायधीश नियुक्त किया गया।

पिटस् इण्डिया एक्ट (1784)

- गवर्नर जनरल की काउंसिल के सदस्यों की संख्या तीन कर दी गई। मद्रास, बम्बई की सरकारे बंगाल के अधीन। छः कमिश्नरों के एक बोर्ड का गठन हुआ।

1786 का एक्ट

- पिट द्वारा पेश इस अधिनियम में गवर्नर जनरल को विशेष व्यवस्था में अपनी परिषद् के निर्णय को रद्द करने तथा अपने निर्णय लागू करने का अधिकार दिया गया।

1793 का चार्टर एक्ट

- कम्पनी को भारत में व्यापार करने का अधिकार 20 वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया। अपनी परिषदों के निर्णय को रद्द करने का अधिकार सभी गवर्नर जनरलों को दे दिया गया।

1813 का चार्टर एक्ट

- कम्पनी का भारतीय व्यापार पर एकाधिकार समाप्त कर दिया गया, परन्तु चीन के साथ व्यापार व चाय के व्यापार का एकाधिकार कंपनी के पास सुरक्षित।

1833 का चार्टर एक्ट

- इसमें चीन के साथ व्यापारिक एकाधिकार समाप्त कर दिया गया। प्रशासन का केन्द्रीयकरण कर दिया गया तथा बंगाल के गवर्नर जनरल को भारत का गवर्नर जनरल बना दिया गया।

1853 का चार्टर एक्ट

- इसमें यह व्यवस्था की गई कि नियंत्रण बोर्ड, सचिव तथा अन्य अधिकारियों का वेतन सरकार निश्चित करेगी, परन्तु वेतन, कंपनी उपलब्ध कराएगी। इस अधिनियम की सबसे बड़ी कमी यह थी कि भारतीयों को अपने विषय में कानून बनाने की अनुमति नहीं दी गई थी।

1858 का अधिनियम

- द्वैध शासन व्यवस्था इसके लागू होने से समाप्त हो गई। तथा देशी राजाओं का क्राउन से प्रत्यक्ष संबंध स्थापित हो गया। भारत का गवर्नर जनरल अब भारत का वायसराय कहा जाने लगा।

1861 का भारतीय परिषद् अधिनियम

- यह पहला ऐसा अधिनियम था जिसमें विभागीय प्रणाली एवं

Downloaded From www.studymasterofficial.com

मंत्रीमण्डलीय प्रणाली की नींव रखी गई। इस अधिनियम द्वारा विधान परिषद् के अधिकार अत्यंत सीमित हो गए। विधान परिषद् का कार्य केवल कानून बनाना था, गवर्नर जनरल को संकट कालीन अवस्था में विधान परिषद की अनुमति के बिना ही अध्यादेश जारी करने की आजादी थी।

1892 का भारतीय परिषद् अधिनियम

- इस अधिनियम द्वारा जहाँ एक ओर संसदीय प्रणाली का रास्ता खुला और भारतीयों को कांउसिलों में अधिक स्थान मिला, वहीं दूसरी ओर चुनाव पद्धति व गैर सदस्यों की संख्या में वृद्धि ने असंतोष उत्पन्न कर दिया। इसके तहत वार्षिक बजट पर वाद-विवाद व इससे संबंधित प्रश्न पूछे जा सकते थे परन्तु मत विभाजन का अधिकार नहीं दिया गया था।

1909 का भारतीय परिषद् अधिनियम

- इस अधिनियम को मार्ले-मिन्टो सुधार के नाम से जाना जाता है। विधान परिषद् के अधिकारों में वृद्धि, इससे सार्वजनिक हितों से संबंधित प्रस्तावों पर बहस करने तथा पूरक प्रश्न पूछने का अधिकार मिल गया व मुस्लमानों के लिए पृथक निर्वाचन की व्यवस्था।

1919 मांटेग्यु चेम्सफोर्ड सुधार

- सांप्रदायिक निर्वाचन का दायरा बढ़ाकर व्यक्तिगत हित तक सीमित कर दिया गया। प्रांतों में द्वैध शासन लागू किया, प्रांतीय विषयों को दो भागों में विभाजित किया गया।
- (1) आरक्षित (2) हस्तांतरित

भारत सरकार अधिनियम, 1935

- केन्द्र में द्वैध शासन की व्यवस्था की गई। इस अधिनियिम में एक अखिल भारतीय संघ की व्यवस्था की गई। प्रांतों में द्वैध शासन समाप्त कर प्रांतीय स्वायत्तता की व्यवस्था की गई। बर्मा को भारत से अलग किया गया। इण्डियन कांउसिल को खत्म कर दिया गया तथा RBI की स्थापना की गई।

भारत में सामाजिक व धार्मिक सुधार आंदोलन

ब्रह्मसमाज

- इसकी स्थापना राजा राम मोहन राय ने 1829 ई. में की थी। इसका उद्देश्य तत्कालीन हिन्दू समाज में व्याप्त बुराइयों जैसे सती प्रथा, बहु विवाह, वेश्या गमन, जातिवाद और अस्पृश्यता आदि को समाप्त करना था। राजा राम मोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का मसीहा माना जाता है।
- राजा राम मोहन राय की कुछ प्रमुख कृत्रियों में 'प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस' प्रमुख है। तथा उन्होंने 'संवाद कौमुदी' का भी संपादन किया। इन्होंने 1815 ई. में आत्मीय सभा की स्थापना की तथा 1925 ई. में वेदांत कॉलेज की स्थापना की।
- उन्होंने सती प्रथा के विरुद्ध आंदोलन चलाया तथा पाश्चात्य शिक्षा के प्रति अपना समर्थन जताया।
- राजा राम मोहन राय का अंतिम शब्द 'ऊँ' था। ये राष्ट्र-वाद के भी जनक माने जाते है। इनकी मृत्यु के बाद ब्रह्म समाज की देख-रेख की जिम्मेदारी देवेन्द्र नाथ टैगोर के जिम्मे आयी। इन्होंने केशव चन्द्र सेन को ब्रह्म समाज का आचार्य नियुक्त किया। सेन हिन्दू धर्म को संकीर्ण मानते थे। 1865 ई. में देवेन्द्र नाथ ने इनसे आचार्यत्व छीन ली। फिर ब्रह्म समाज का विभाजन हो गया।
- भारतीय ब्रह्म समाज (सेन)
- आदि ब्रह्म समाज (देवेन्द्र)
- केशव चन्द्र के प्रयास से 1872 का ब्रह्म विवाह कानून पारित हुआ। इन्होंने अपनी पुत्री का विवाह कूच विहार के 16 वर्षीय राजकुमार से कर दिया। जब कि इन्हीं के प्रयास से ब्रह्म विवाह कानून पारित हुआ था। फिर आदि ब्रह्म समाज का विभाजन हो गया।
- भारतीय ब्रह्म समाज
- साधारण ब्रह्म समाज
- 1831 ई. में राजा राममोहन राय, अकबर द्वितीय का पक्ष रखने के लिए ब्रिटेन गये और वहीं पर इनकी मृत्यु हो गई। अकबर द्वितीय के द्वारा उन्हें राजा की उपाधि दी गई।

रामकृष्ण मिशन

- स्थापना 1896-97 ई. में दो स्थान पर एक बेदूर (कलकत्ता) में तथा दूसरा अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) में। इसके मुख्य प्रेरक रामकृष्ण परम हंस थे। रामकृष्ण की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार का श्रेय उनके योग्य शिष्य स्वामी विवेकानंद (नरेन्द्र नाथ दत्त) को जाता है।
- 1893 ई. में विवेकानंद ने शिकागो में हुई धर्म संसद में भाग लेकर पाश्चात्य जगत को भारतीय संस्कृति व दर्शन से अवगत कराया।

आर्य समाज

- स्थापना दयानंद सरस्वती के द्वारा 1875 ई. में बम्बई में की गई। इसका प्रमुख उद्देश्य वैदिक धर्म को पुन: शुद्ध रुप से स्थापित करने का प्रयास। भारत में धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक रुप से एक सूत्र में बाँधने का प्रयत्न करना तथा पाश्चात्य प्रभाव को समाप्त करना था।
- इनको बचपन में 'मूलशंकर' के नाम से जाना जाता था। उनके गुरू स्वामी विरजानंद थे। इन्होंने मूर्तिपूजा, बहुदेव वाद, अवतारवाद इत्यादि की आलोचना की तथा वेदों की ओर लौटो का नारा दिया। इनके विचारों का संकलन 'सत्यार्थ प्रकाश' में मिलता है तथा इन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' को हिन्दी में लिखा। इन्होंने शुद्धि आंदोलन भी चलाया।

यंग बंगाल आंदोलन

- भारत में यंग बंगाल आंदोलन प्रारंभ करने का श्रेय हेनरी विवियन डेरोजियों को है। डेरोजियों कलकत्ता में 'हिन्दू' कॉलेज के अध्यायक थे। इन्होंने आत्म विस्तार एवं समाज सुधार हेतु एक 'डामिन एसोसिएशन' एवं सोसाइटी फॉर द एग्जीविशन ऑफ जनरल नॉलेज की स्थापना की।
- डेरोजियो ने 'ईस्ट इण्डिया' नामक दैनिक पत्र का सम्पादन भी किया। डेराजियों को आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि माना जाता है।

थियोसोफिकल सोसाइटी

- इसकी स्थापना 1875 ई. में मैडम ब्लावात्सकी एवं कर्नल अल्कॉट द्वारा न्यूयॉर्क (अमेरिका) में की गई। 1882 ई. में वे भारत आये तथा मद्रास में अड्यार के निकट मुख्यालय स्थापित किया। भारत में इस आंदोलन की गतिविधियों को व्यापक रुप

Downloaded From www.studymasterofficial.com
GS World Committed to Excellence

से फैलाने का श्रेय श्रीमती एनी बेसेन्ट को दिया जाता है। 1898 ई. में उन्होंने बनारस में (सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज) की स्थापना की जो आगे चलकर 1916 ई. में 'BHU' बन गया। आयर लैण्ड की होमरुल की तर्ज पर बेसेन्ट ने भारत में होमरुल लीग की स्थापना की।

बहावी आंदोलन

- भारत में इसे प्रचारित करने का श्रेय सैयद अहमद बरेलवी तथा इस्लाम हाजी मौलवी मोहम्मद को है। सर्वप्रथम इस आंदोलन ने ही मुस्लमानों पर पड़ने वाले पाश्चात्य प्रभावों का विरोध किया। अपने प्रारंभिक दिनों में यह आंदोलन पंजाब में सिख सरकार के विरुद्ध चलाया गया। इस आंदोलन का मुख्य केन्द्र पटना में था।

प्रार्थना समाज

- आचार्य केशव चन्द्र सेन की प्रेरणा से रानाडे, आत्मा राम पाण्डुरंग, आदि के द्वारा 1867 ई. में बम्बई में प्रार्थना समाज की स्थापना की गई।
- इसका उद्देश्य जाति प्रथा का विरोध, स्त्री पुरुष की विवाह की आयु में वृद्धि तथा विधवा-विवाह व स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन देना था।

अलीगढ़ आंदोलन

- सर सैयद अहमद खाँ द्वारा चलाया गया। 1877 ई. में अलीगढ़ में 'आंग्ल मुस्लिम स्कूल' की स्थापना की। 1920 ई. तक यही केन्द्र अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय बन गया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष (प्रमुख तथ्य)

1. 1885- व्योमेश चंद्र बनर्जी - बंबई
2. 1886- दादाभाई नौरोजी - कलकत्ता
3. 1887- बदरूद्दीन तैय्यबजी - मद्रास (पहले मुस्लिम अध्यक्ष)
4. 1888- जार्ज यूल (अंग्रेज) - इलाहाबाद
5. 1905- गोपालकृष्ण गोखले - वाराणसी (कांग्रेस ने बहिष्कार प्रस्ताव स्वीकार किया)
6. 1906 - दादाभाई नौरोजी - कलकत्ता (कांग्रेस ने स्वदेश और बहिस्कार प्रस्ताव पारित किया)
7. 1907 - रास बिहारी घोष - सूरत (उदारवाद और उग्रवाद के बीच विभाजन, इसे ही सूरत फूट कहा जाता है)
8. 1916 - अंबिका चरण मजूमदार - लखनऊ (1. उदारवाद व उग्रवाद के बीच तिलक और बेसेन्ट के प्रयासों से समझौता हुआ। 2. तिलक व जिन्ना के सहयोग से मुस्लिम लीग कांग्रेस समझौता हुआ और यही कांग्रेस ने 1909 की साम्प्रदायिक निर्वाचन व्यवस्था को स्वीकार कर लिया।)
9. 1917 - एनी बेसेन्ट - कलकत्ता (प्रथम महिला अध्यक्ष बनी)
10. 1924 - बेलगांव (महाराष्ट्र) - महात्मा गांधी (एकमात्र बार गांधी अध्यक्ष बने)
11. 1925 - कानपुर - सरोजनी नायडू (प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष इन्हें नाइटेंगल आफ इंडिया कहा जाता है)
12. 1927 - मद्रास - एम.ए. अंसारी (सर्वदलीय सम्मेलन जिसमें नेहरू रिपोर्ट तैयार करने की सहमति बनी)
13. 1929 - लाहौर - जवाहर लाल नेहरू (पूर्ण स्वराज प्रस्ताव पारित और 26 जनवरी 1930 को प्रथम स्वराज दिवस मनाया गया)
14. 1931 - करांची - सरदार वल्लभ भाई पटेल (कांग्रेस मंच से पहली बार आर्थिक नीति का मसौदा प्रस्तुत हुआ तथा मौलिक अधिकार संबंधी प्रस्ताव पारित हुए)
15. 1938 - हरिपुरा (गुजरात) - सुभाष चन्द्र बोस (राष्ट्रीय योजना समिति का गठन नेहरू की अध्यक्षता में किया गया और इसी से स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद योजना आयोग की नींव रखी।
16. 1939 - त्रिपुरी (मध्य प्रदेश) - सुभाष चन्द्र बोस निर्वाचित हुए किन्तु उनके इस्तीफे के बाद डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अध्यक्षता संभाली। सुभाष चन्द्र बोस ने गांधी जी के प्रत्याशी पट्टाभि सीतारमैया को हराया किंतु बाद में कांग्रेस से इस्तीफा देकर फारवर्ड ब्लॉक नामक संगठन)
17. 1946 - मेरठ - आचार्य जे.बी. कृपलानी (आजादी के समय कांग्रेस अध्यक्ष यही थे तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पहले अधिवेशन में कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये।)

- **विशेष** - कांग्रेस के पहले हिन्दू अध्यक्ष सातवे अधिवेशन में पी. आनंद चालू बने।
- डब्लू.सी. बनर्जी कांग्रेस के 2 बार तथा दादा भाई नौरोजी कांग्रेस के 3 बार अध्यक्ष बने।
- तीसरी महिला अध्यक्ष 1933 के कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में नलिनी सेन गुप्ता बनी तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय की प्रथम महिला स्नातक कादम्बनी गांगुली ने 1890 के कलकत्ता अधिवेशन को सम्बोधित किया।
- 1926 में कांग्रेस अधिवेशन गौहाटी में हुआ जो पूर्वोत्तर में होने वाला एकमात्र अधिवेशन था।
- जनगणमन कांग्रेस मंच से 1911 में गाया गया।
- मौलाना आजाद का जन्म मक्का में हुआ था और ये मुस्लिम राष्ट्रवादी अहरार आंदोलन में भारतीय राजनीति में उभरे। ये कांग्रेस के सबसे युवा अध्यक्ष बने तथा द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 1940-45 तक सर्वाधिक समय तक कांग्रेस की अध्यक्षता की।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

ये तस्वीरें महज छात्रों की संख्या को नहीं, बल्कि हमारे संस्थान पर उनके विश्वास को दर्शाती हैं...

Batch : 8:30 AM

Batch : 11:45 AM

Batch : 12:05 PM

Batch : 6:30 PM

अतुल शर्मा
SSP, प्रयागराज

GS World संस्थान के पास अनुभवी शिक्षक मंडल जिसमें प्रो. पुष्पेश पंत, मणिकांत सिंह, आलोक रंजन सर जैसे भारत के सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक मौजूद हैं। अनुभवी शिक्षकों के साथ-साथ बेहतर कक्षा कार्यक्रम, लेखन शैली पर विशेष ध्यान, उत्तर-पुस्तिका का अच्छी तरह से मूल्यांकन, विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए समय-समय पर आयोजित परिचर्चाएं **GS World** संस्थान को सिविल सेवा अभ्यर्थियों के लिए सर्वश्रेष्ठ विकल्प बनाता है।

अजय साहनी
SSP, मेरठ

एक विद्यार्थी के लिए सिविल सेवा में अंतिम सफलता पाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण तीन चीजें होती हैं- बेहतर अध्ययन सामग्री, अनुभवी शिक्षक एवं प्रबंधन का नजरिया विद्यार्थियों के हितोनुरूप हो। जब मैं **GS World** संस्थान को देखता हूँ तो इस बात से आश्वस्त हो जाता हूँ कि यहाँ पर एक अभ्यर्थी सिविल सेवा की संपूर्ण तैयारी कर सकता है। निजी तौर पर संस्थान के निदेशक नीरज सिंह के प्रशासनिक अनुभव से मैं भलीभांति परिचित हूँ। मेरे अनुसार **GS World** संस्थान एक अभ्यर्थी के लिए बेहतर विकल्प हो सकता है।

हेमंत सती
IAS

GS World संस्थान न केवल भावी आईएएस का निर्माण करता है, बल्कि यह एक छात्र के व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायता करता है। सबसे बढ़कर इस संस्थान के गुरूजनों का व्यक्तिगत मार्गदर्शन निःसंदेह बेजोड़ है, जो अन्य कहीं उपलब्ध नहीं होता। इन मानकों पर देखें तो **GS World** सर्वश्रेष्ठ विकल्प है, क्योंकि पूरे भारत में सबसे बेहतर अध्यापकों की टीम संस्थान से जुड़ी हुई है। मैं एक बार पुनः जीएस वर्ल्ड की पूरी सहयोगी टीम को धन्यवाद देता हूं।

धवल जायसवाल
(IPS-UP Cader)

सफलता के लिए पढ़ने की सही रणनीति उतनी ही जरूरी है जितनी अध्ययन सामग्री और **GS World** एक ऐसा संस्थान है जहां पर अभ्यर्थी अध्ययन सामग्री के साथ-साथ उसे किस प्रकार जल्दी और अच्छे ढंग से पढ़े इसकी रणनीति भी सीखता है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, संस्थान द्वारा तैयार की गई NCERT पुस्तकों की अध्यायवार रणनीति। इसके अलावा **GS World** संस्थान को जो बात सबसे अलग बनाती है वह है विद्यार्थियों को मिलने वाला व्यक्तिगत मार्गदर्शन। इस प्रकार मेरा व्यक्तिगत अनुभव यही कहता है कि **GS World** सिविल सेवा की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों के लिए पूर्णतः समर्पित संस्थान है।

सौरभ सिंह
SDM
(UPPCS-2016)
Rank- 8th

मैं अपनी सफलता के लिए **GS World** संस्थान के सभी शिक्षकगण एवं पूरे प्रबंधन को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। एक विद्यार्थी के तौर पर **GS World** संस्थान में होने वाले कक्षा कार्यक्रम के साथ नियमित टेस्ट अभ्यास ने मेरी सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसके लिए मैं **GS World** संस्थान को धन्यवाद देता हूँ।

नम्रता सिंह
SDM
(UPPCS-2016)
Rank- 9th

एक विद्यार्थी के तौर पर **GS World** संस्थान में होने वाले कक्षा कार्यक्रम के साथ नियमित टेस्ट एवं संस्थान द्वारा संचालित किए जा रहे टेस्ट सीरिज ने मेरी सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसके लिए मैं **GS World** संस्थान को धन्यवाद देती हूँ।

GS World संस्थान द्वारा दिए जा रहे व्यक्तिगत मार्ग दर्शन एवं सही गाइडेंश किसी भी अन्य संस्थाओं से इसे अलग करती है।

UPPCS 2017

2 RANK
Anupam Mishra

8 RANK
Anurag Prasad

12 RANK
Anupam Kr. Mishra

13 RANK
Ankit Shukla

20 RANK
Jagmohan Gupta

Chandra Prakash Tiwari (Dy.SP)

Atul Kumar Pandey (Dy.SP)

Shiv Thakur (Dy.SP)

Ritesh Tripathi (Dy.SP)

Usman (Dy.SP)

Prashali Gangwar (Dy.SP)

Ashish Km. Yadav (Dy.SP)

Parmanand Kushwaha (Dy.SP)

Santosh Kumar Singh (Dy.SP)

Vijay Km. Chaudhary (Dy.SP)

Abhishek Patel (Dy.SP)

Amardeep Kumar Mourya (Dy.SP)

Shikha Sankhwar (Dy.SP)

Ravi Kumar (Dy.SP)

Raghu Raj (Dy.SP)

Deepshikha Singh (Dy.SP)

Amit Pratap Singh (Dy.SP)

Suryabali Maurya (Dy.SP)

And Many More

: 011-27658013, 7042772062/63

H.O. : 629, Ground Floor, Main Road, Mukherjee Nagar, Delhi-09!! Class Venue : Vardhman Plaza, Nehru Vihar

http://www.gsworldias.com http://www.facebook.com/gsworld1 : gsworldias@gmail.com

9654349902

Visit us our You Tube Channel GS World & Subscribe...

DELHI CENTRE	ALLAHABAD CENTRE	LUCKNOW CENTRE
629, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09	GS World House, Stainly Road, Near Traffic Choraha, Allahabad	A-7, Sector-J, Puraniya Chauraha Aliganj, Lucknow
Ph.: 7042772062/63, 9868365322	Ph.: 0532-2266079, 8726027579	Ph.: 0522-4003197, 8756450894

Downloaded From www.studymasterofficial.com